Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

# जन ज्ञान

[मासिक]

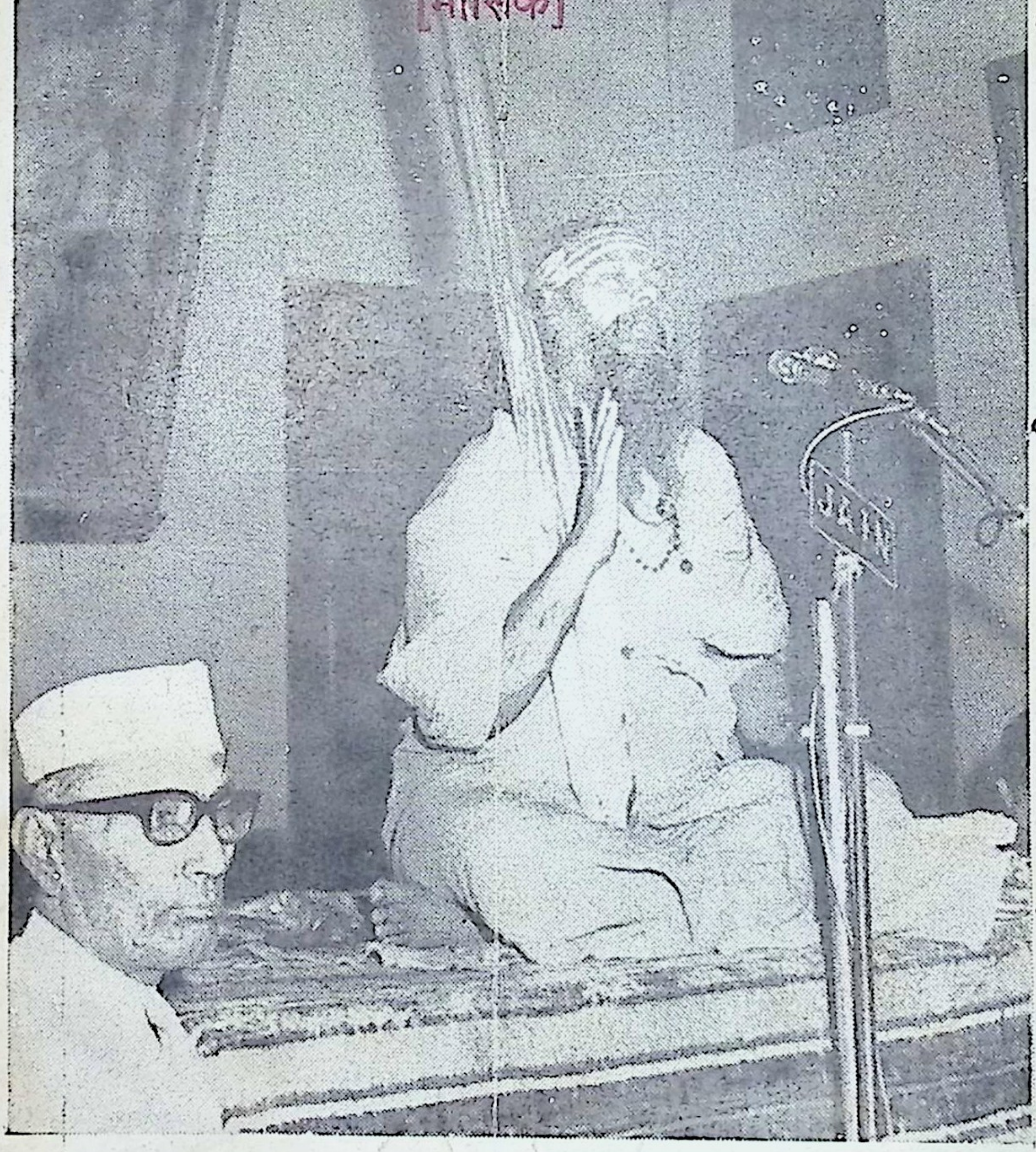

## आवाहन : शंकराचार्य का

जगद्‌गुरू शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज ने भारत की आत्मा को जगाते हुए हिन्दू रक्षा समिति द्वारा आयोजित प्रथम हिन्दू-रक्षा-सम्मेलन की अध्यक्षता की। बैठे हैं आर्य नेता श्री रामगोपाल शालवाले

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

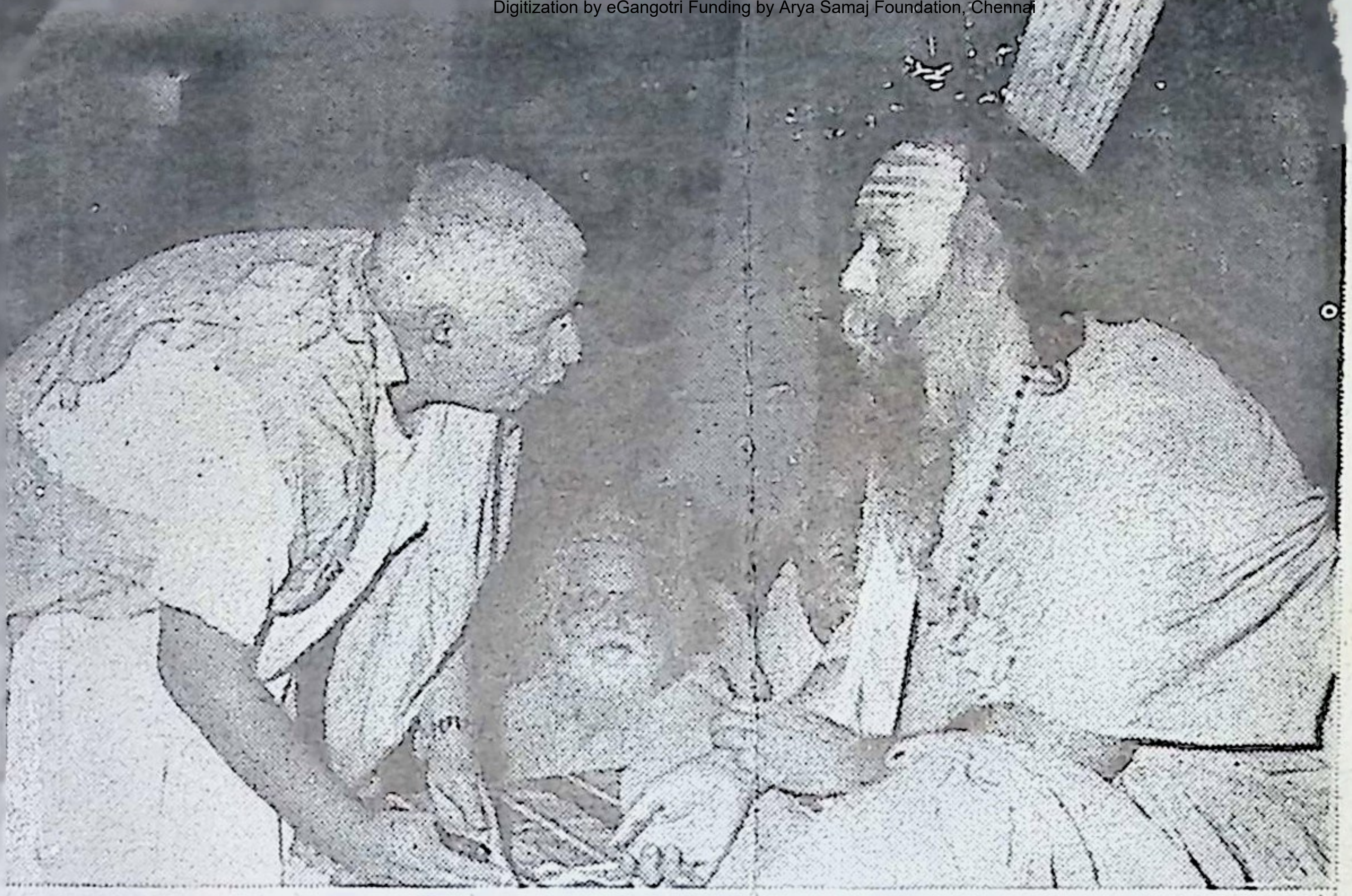

जगद्गुरू शंकराचार्य से गंभीर वार्ता करते हुए महात्मा वेदभिक्षुः

कु० आभा शुक्ला जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज को अपनी गाड़ी में सभा स्थल पर लायीं। गाड़ी से उतारते हुए चित्रकार ने चित्र उतार लिया। शंकराचार्य जी की मुद्रा अपनी कथा स्वयं कह रही है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान
[मासिक]
सम्पादक
राकेशरानी
दूरभाष : ५६२६३६
५६६८६१
८०१२११
पता :
करोलबाग, नई दिल्ली-११०००५
वार्षिक शुल्क २० रुपये
विदेश में ६ पौंड : विमान से
३ पौंड : समुद्री डाक से
आजीवन : ३०१ रुपये
यह प्रति : २ रुपये
मार्गशीर्ष संवत् २०३७
वर्ष १३ : अंक ७

# प्रभु प्रार्थना

ज्योतिर्मय हो देश हमारा,
अंग-अंग हो, पुलकित जीवन,
सत्य प्राण से पूरित तन-मन,
आलोकित हों सभी दिशाएं,
मधुमय गौरव गात गुंजाएं,
शुभ विकास प्रकटे जग सारा।
ज्योतिर्मय हो, देश हमारा ॥

निर्धनता का पाप दूर हो,
घृणा-द्वेष सब चूर-चूर हो,
प्रेम भाव की भव्य भावना,
सब के मन की शुद्ध कामना;
उमगाए जीवन की धारा।
ज्योतिर्मय हो देश हमारा ॥

हम न किसी को दूर भगाएं।
सब का ही सौभाग्य सजाएं,
कल्याणी हो शक्ति हमारी,
उमगे प्रीति-रीति जगप्यारी,
पावनता हो लक्ष्य हमारा
ज्योतिर्मय हो देश हमारा ॥

शांति हमारा अमर भाव हो,
युग विकास का चरम चाव हो,
कष्ट सभी का दूर करें हम,
सुखद भाव से पूर रहें हम,
विश्व शांति का ध्येय हमारा
ज्योतिर्मय हो देश हमारा ॥

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# क्या आप हिन्दू हैं ?

क्या आप को अपने धर्म, संस्कृति और परम्पराओं पर अभिमान है ?

क्या आप अपना सभी कुछ बचाने की भावना रखते हैं ?

यदि आपका उत्तर हां में हो तो

आज ही

## अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के स्वयं सदस्य बनें

और

अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें

## हिन्दू जागें ! देश बचाएं

मंत्री, अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति,
वेद मन्दिर नई, दिल्ली-११०००५



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## दयानन्द संस्थान के अध्यक्ष की

# दीपमाला

# पर

# शुभ

# कामनाएं

दीपावली-सुख समृद्धि का पर्व है । हम भारत के नागरिक ३३ वर्षों की स्वतंत्रता के बाद भी भूखे पेट रहकर—निर्धनता की सीमा से भी नीचे सिसकते किसी तरह जीने का यत्न कर रहे हैं ।

**प्रभु हमें शक्ति दें कि हम सभी मिलकर निर्धनों को रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या से मुक्त कर सकें ।**

आज भी भारत के निवासी स्वतंत्रता के गौरव को अनुभव नहीं कर पा रहे । फूट—झगड़े—स्वार्थ—भाषा—प्रांत । मजहब की दीवारें हमें दुर्बल बना रही हैं । हम देश को अपना समझने की भावना से कोसों दूर खड़े हैं ।

स्वार्थ की राजनीति ने राष्ट्र को दुर्बल बना दिया है । हम अपनी कुर्सी के लिए देश को भूल चुके हैं । स्वार्थ हमारा मूल मन्त्र बन चुका है ।

निराशा के इस वातावरण में हम भारत के प्रत्येक नागरिक को देश, स्वतन्त्रता और एकता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं । हमारी कामना है कि भारत में फिर से धर्म राज्य—रामराज्य—आर्य राज्य—हिन्दू राज्य स्थापित हो । शब्दों का अन्तर महत्व नहीं रखता । भाव सबका एक ही है कि हम इस देश के प्रत्येक नागरिक को आशा—उत्साह—जीवन—प्यार—समृद्धि बांट सकें । हम एक ऐसा सूरज उगा सकें, जो सारे तम को दूर कर सके । देशवासियों में नयी उमंग भर सके । जो शुद्ध कर सके सारे धूमिल वातावरण को, और बरसा सके धन—श्री—सुख—आनन्द और प्यार ।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

...रावण के संहार की प्रेरणा दे।
दीपमाला प्रत्येक राम भक्त को ... शक्ति प्रदान करे।
दयानन्द के अनुयायियों को पाखंडों पर प्रहार करने की शक्ति प्रदान करे।
जन-मानस में कर्म की प्रतिष्ठा, अंधकार में ज्योति की किरणें प्रसारित कर हम अगला वर्ष सुखद विहान के स्वागत से मनाएं।

मेरे भाई···बहन···पूज्य सभी से मेरी प्रार्थना है कि आप दीपमाला मनाते हुए संकल्प लें देश पर छाये विकट संकटों को दूर करने का।

प्रभु आपके परिवार को सौख्य—आनन्द—समृद्धि प्रदान करें।

आशीर्वाद और मंगल कामनाएं

—राकेशरानी

---


# वेद भाष्य छपवाएं

अर्थाभाव के कारण वेद भाष्य छपना कठिन पड़ रहा है। अभी तक बहुत यत्न करने पर आधा वेद भाष्य ही हम छाप सके हैं।

कागज का अभाव समस्या बन गया है। दूसरी ओर वेदों की मांग बढ़ती जा रही है।

क्या आप प्रभु की अमरवाणी के प्रचार के लिए कागज का भी प्रबंध नहीं कर सकते ?

वेद हमारा प्राण है और हम उसे प्रसारित करने में अक्षम हैं, तो क्या होगा ?

आप अधिक से अधिक कागज या उस के लिए धन भिजवाएं ताकि 'वेद' का प्रचार जारी रहे। अपना कर्तव्य स्वयं सोचिए।

—वेदभिक्षुः

**दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, दिल्ली-३६**




Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

# विजय हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है

वयं जयेम – हम जीतेंगे, हारना हमने नहीं सीखा, प्रत्येक चरण में विजय का वरण हम करते रहे हैं। हम पर प्रहार करने वाले को कभी सफलता नहीं मिली। युग-युगों से सर्वोपरि रहना हमारी परंपरा है।

आर्य (हिन्दू) प्रभु का पुत्र है। जन्म-मरण उसकी स्वाभाविक प्रक्रिया है। आत्मा की अमरता और देह की नश्वरता का आदर्श उसके रोम-रोम में रहता है। इसीलिए वह वीर है, अभय है, अजेय है।

वर्तमान में समय के प्रवाह ने भले ही हमें अपने अतीत को भुलाने के लिए विवश किया हो, किन्तु जब रणभेरी बज उठी हो, शंखनाद हो रहा हो, तब कोई भी आर्य-पुत्र अपने आलस्य की चादर ओढ़ कर सोता नहीं रहेगा, यह हमारा अटल विश्वास है।

यही विश्वास हमारी पूंजी है। आततायी कभी जीता नहीं। धर्मात्मा कभी हारा नहीं, इसलिए हम जीतेंगे, अवश्य ही जीतेंगे,

और एक बार फिर भारत की अमर पताका धरती पर फहरायेगी। हमारे पास ज्ञान है, दर्शन है। उपनिषदों का अमृत है। महाभारत-रामायण की परंपरा है। और सारे देश में फैला वह धर्म है जिसमें अनेकता में भी एकता के स्वर फूटते रहे हैं।

प्राणों में प्रभु का सौन्दर्य बिखरा है। देह में अपराजेय यौवन विद्यमान है। त्याग और बलिदान की हमारी शाश्वत परंपरा ने धरती को सदा ही प्रकाश प्रदान किया है। इसलिए हमारी निद्रा महानाश की नहीं, विजय की शक्ति का संग्रह कर हमें बलशाली बनाती है।

भारत के प्रत्येक आर्य (हिन्दू) पर हमें अभिमान है। हमें विश्वास है कि अपने धर्म—संस्कृति—ऐक्यभाव और राष्ट्र की अखंडता पर चोट पहुंचाने वाले को वह ऐसा पाठ पढ़ायेगा कि सदियों तक भारत की ओर कुदृष्टि डालने का साहस भी किसी को न होगा।

मां के वीर पुत्रो ! आज वह समय आ गया है जिसके लिए तुमने जन्म लिया था और मां का दूध पिया था। आसुरी शक्तियों ने तुम्हें ललकारा है, अंधकार की चुनौती स्वीकार करो और एक बार फिर शत्रु को धूलि-धूसरित कर दो ! मिटा दो उन भावनाओं को जिन्होंने मेरी मां को हानि पहुंचाने के लिए प्रहार करने की कुचेष्टा की है।

ग्राम-ग्राम, नगर-नगर प्रेम और सौहार्द के लिए वीरता के भावों से उठो और आसुरी प्रवृत्ति का संहार करो। यही दीपमाला का ज्योतिर्मय संदेश है।

मां की पवित्र माटी का तिलक लगाकर एक बार फिर राष्ट्र को अजेय बनाने का व्रत लो कश्मीर से कन्याकुमारी तक हम सब एक हैं। जो अलगाव की बात करता है वह हमारा शत्रु है। हम एकता के गीत गाएं। सांप्रदायिकता के असुर को कुचल दें। अनेकता के भावों को मिटा दें और मजहब के आधार पर अलगाव की प्रवृत्ति को जड़मूल से नष्ट कर दें।

देवता बनकर उठो, राम बनकर जागो, देखो, रावण का एक भी उत्तराधिकारी देश में कहीं रह न जाए।

विजय धर्म की, सत्य की, आपकी होगी।

—राकेशरानी


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दीपमाला प्रत्येक राम भक्त को रावण के संहार की प्रेरणा दे।

दयानन्द के अनुयायियों को पाखंडों पर प्रहार करने की शक्ति प्रदान करे।

जन-मानस में कर्म की प्रतिष्ठा, अंधकार में ज्योति की किरणें प्रसारित कर हम अगला वर्ष सुखद विहान के स्वागत से मनाएं।

मेरे भाई…बहन…पूज्य सभी से मेरी प्रार्थना है कि आप दीपमाला मनाते हुए संकल्प लें देश पर छाये विकट संकटों को दूर करने का।

प्रभु आपके परिवार को सौख्य—आनन्द—समृद्धि प्रदान करें।

आशीर्वाद और मंगल कामनाएं

—राकेशरानी


# वेद भाष्य छपवाएं

अर्थाभाव के कारण वेद भाष्य छपना कठिन पड़ रहा है। अभी तक बहुत यत्न करने पर आधा वेद भाष्य ही हम छाप सके हैं।

कागज का अभाव समस्या बन गया है। दूसरी ओर वेदों की मांग बढ़ती जा रही है।

क्या आप प्रभु की अमरवाणी के प्रचार के लिए कागज का भी प्रबंध नहीं कर सकते?

वेद हमारा प्राण है और हम उसे प्रसारित करने में अक्षम हैं, तो क्या होगा?

आप अधिक से अधिक कागज या उस के लिए धन भिजवाएं ताकि 'वेद' का प्रचार जारी रहे। अपना कर्तव्य स्वयं सोचिए।

—वेदभिक्षुः

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, दिल्ली-३६


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

# विजय हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है

वयं जयेम – हम जीतेंगे, हारना हमने नहीं सीखा, प्रत्येक चरण में विजय का वरण हम करते रहे हैं। हम पर प्रहार करने वाले को कभी सफलता नहीं मिली। युग-युगों से सर्वोपरि रहना हमारी परंपरा है।

आर्य (हिन्दू) प्रभु का पुत्र है। जन्म-मरण उसकी स्वाभाविक प्रक्रिया है। आत्मा की अमरता और देह की नश्वरता का आदर्श उसके रोम-रोम में रहता है। इसीलिए वह वीर है, अभय है, अजेय है।

वर्तमान में समय के प्रवाह ने भले ही हमें अपने अतीत को भुलाने के लिए विवश किया हो, किन्तु जब रणभेरी बज उठी हो, शंखनाद हो रहा हो, तब कोई भी आर्य-पुत्र अपने आलस्य की चादर ओढ़ कर सोता नहीं रहेगा, यह हमारा अटल विश्वास है।

यही विश्वास हमारी पूंजी है। आततायी कभी जीता नहीं। धर्मात्मा कभी हारा नहीं, इसलिए हम जीतेंगे, अवश्य ही जीतेंगे,

और एक बार फिर भारत की अमर पताका धरती पर फहरायेगी। हमारे पास ज्ञान है, दर्शन है। उपनिषदों का अमृत है। महाभारत-रामायण की परंपरा है। और सारे देश में फैला वह धर्म है जिसमें अनेकता में भी एकता के स्वर फूटते रहे हैं।

प्राणों में प्रभु का सौन्दर्य बिखरा है। देह में अपराजेय यौवन विद्यमान है। त्याग और बलिदान की हमारी शाश्वत परंपरा ने धरती को सदा ही प्रकाश प्रदान किया है। इसलिए हमारी निद्रा महानाश की नहीं, विजय की शक्ति का संग्रह कर हमें बलशाली बनाती है।

भारत के प्रत्येक आर्य (हिन्दू) पर हमें अभिमान है। हमें विश्वास है कि अपने धर्म—संस्कृति—ऐक्यभाव और राष्ट्र की अखंडता पर चोट पहुंचाने वाले को वह ऐसा पाठ पढ़ायेगा कि सदियों तक भारत की ओर कुदृष्टि डालने का साहस भी किसी को न होगा।

मां के वीर पुत्रो ! आज वह समय आ गया है जिसके लिए तुमने जन्म लिया था और मां का दूध पिया था। आसुरी शक्तियों ने तुम्हें ललकारा है, अंधकार की चुनौती स्वीकार करो और एक बार फिर शत्रु को धूलि-धूसरित कर दो ! मिटा दो उन भावनाओं को जिन्होंने मेरी मां को हानि पहुंचाने के लिए प्रहार करने की कुचेष्टा की है।

ग्राम-ग्राम, नगर-नगर प्रेम और सौहार्द के लिए वीरता के भावों से उठो और आसुरी प्रवृत्ति का संहार करो। यही दीपमाला का ज्योतिर्मय संदेश है।

मां की पवित्र माटी का तिलक लगाकर एक बार फिर राष्ट्र को अजेय बनाने का व्रत लो कश्मीर से कन्याकुमारी तक हम सब एक हैं। जो अलगाव की बात करता है वह हमारा शत्रु है। हम एकता के गीत गाएं। सांप्रदायिकता के असुर को कुचल दें। अनेकता के भावों को मिटा दें और मजहब के आधार पर अलगाव की प्रवृत्ति को जड़मूल से नष्ट कर दें।

देवता बनकर उठो, राम बनकर जागो, देखो, रावण का एक भी उत्तराधिकारी देश में कहीं रह न जाए।

विजय धर्म की, सत्य की, आपकी होगी।

—राकेशरानी


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai


## आज ही हिन्दू रक्षा समिति के सदस्य बनें व औरों को बनाएं

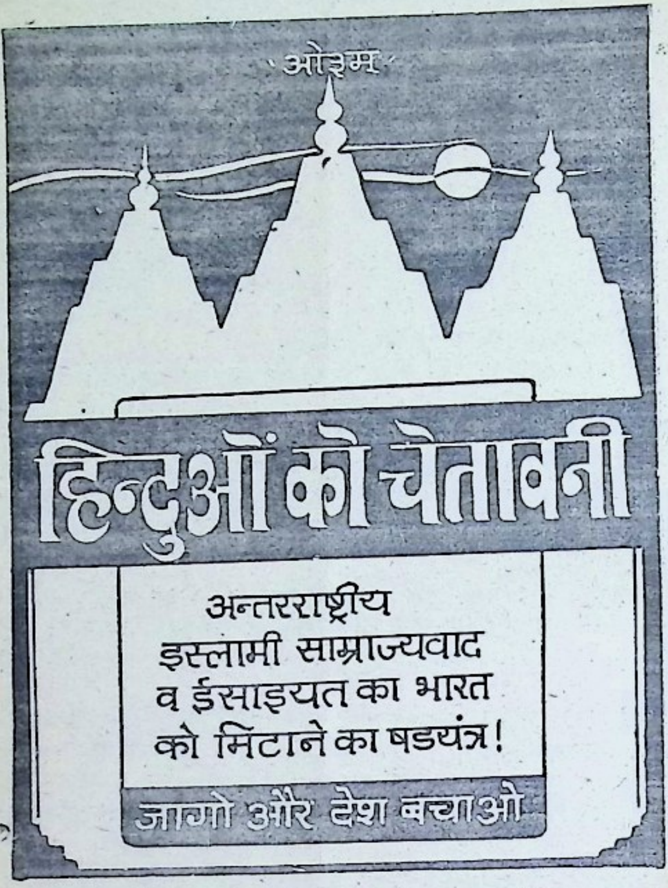


इस पुस्तक को भारी संख्या में बांटिए। ४० पैसे की पुस्तक को हम केवल २०) सैकड़ा में दे रहे हैं। प्रत्येक देशभक्त कम से कम १०० मित्रों तक इसे पहुंचाएं यह मेरी प्रार्थना है—

—वेदभिक्षुः

**दयानन्द संस्थान, वेदमन्दिर, दिल्ली-३६**




Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

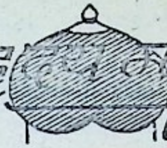

# मैं हृदय के मन्दिर से लिख रहा हूँ

## दीपमाला कैसे मनाएं ?

दीप जलाने से पहले तनिक ठहरिए, विचार कीजिए और संकल्प लीजिए कि—

हम अन्धकार को समाप्त करने का व्रत लेते हैं।

यह दृढ़ निश्चय कर फिर दीपक जलाइए और दीपमाला मनाइए।

ऐसे में अपने उन बंधुओं को न भूलें जिनके घर आततायियों ने उजाड़े हैं। जिनके बच्चे भूखे हैं। जिन पर कष्टों का पहाड़ टूट पड़ा है।

यदि इस पर्व पर आपने एक भी अंधेरे भरे घर में दीपक जला दिए तो समझ लें आपकी दीपमाला सफल है।

परमात्मा उन्हें ही देता है, जो औरों को देते हैं। आप उन्हें दो जिन्हें आवश्यकता है। प्रभु आपको इतना देगा कि आपका घर-आंगन समृद्धि से भर जायेगा।

अपने मानस में सभी के प्रति प्यार उत्पन्न करो। प्यार की गंगा बहा दो और दुःखी के आंसू पोंछ कर उसे जीवन दो। फिर देखो श्री—लक्ष्मी आप पर कितना आशीर्वाद बरसा देती हैं।

अपने-पराए के भेद से ऊपर उठो। धरती को परिवार मानो और कम से कम आज के दिन अपने मन में स्नेह—उदारता—ममत्व उत्पन्न करो। दीन-दुखी, कष्ट में पड़े मनुष्य को उठाकर गले लगा लो, उसके साथ मिल-बांटकर खाओ। आपका जीवन ज्योतिर्मय हो जायेगा

अभाव के कारण कोई दीप बुझने न पाए, कहीं कोई शून्य उभर न पाए जीवन का यह आदर्श प्यार के मन्त्र से पूजकर अभय, सबल नव निर्माण के लिए आपको प्रेरित करेगा।

दीपमाला आपको नया ज्योतिर्मय पथ प्रदान करे।

## वोटों के लिए देशद्रोही न बनो !

सभी राजनैतिक दल वोटों के लिए बढ़-चढ़कर मुसलमानों की खुशामद में लगे हैं। वे खुलकर शरारतें कर रहें हैं पर कोई उन्हें अपराधी कहने के लिए तैयार नहीं।

दोषी को दोषी न कहना उसकी अपराध वृत्ति को प्रोत्साहन देना है। किन्तु देश की पुलिस और सेना पर आक्रमण करने वाले, हजारों को मौत के घाट उतारने

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाले आततायियों को अपराधी तक कहने का साहस यदि इन नेताओं में नहीं है तो इन्हें नेता कहना या मानना स्वयं एक बड़ा अपराध है।

हमारे कर्णधार यह तथ्य समझ लें कि यदि समय रहते इस पाकिस्तानी मनोवृत्ति को नहीं कुचला गया, यदि अपराधी को अपराधी नहीं बताया गया तो देश की स्वतन्त्रता और एकता संकट में पड़ जाएगी।

१९४६ का-सा वातावरण फिर बन गया है। तब तो पाकिस्तान को जन्म दिया था, फिर क्या नेता नये पाकिस्तान को उत्पन्न करने की सोच रहे हैं ?

हम सभी राजनैतिक दलों के नेताओं से अनुरोध करते हैं कि वे स्पष्ट घोषित करें कि अपराधी कौन है ? ढुलमुल नीति, चाटुकारिता और वोटों के लिए देश को बर्बाद करने की मनोवृत्ति भारत की जनता अब और अधिक नहीं सहेगी।

## मुसलमानों का क्या किया जाय ?

आज फिर हिन्दू मुसलमान का प्रश्न गंभीर रूप से खड़ा गया है। इस प्रश्न को हमारे राजनैतिक कर्णधारों ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए उभारा है। होना तो यह चाहिए था कि १९४७ में हिन्दू मुसलमान के प्रश्न पर बंटवारा होने और पाकिस्तान बन जाने के बाद मुसलमान पाकिस्तान चले जाते और हिन्दू भारत में रहते। किन्तु यह नहीं हुआ।

मुसलमानों के लिये तो पाकिस्तान भी बन गया ओर हिन्दुस्तान भी उनका घर ही बना रहा। राजनितिज्ञों ने वोट बटोरने के लिये फिर उनकी खुशामद की जिस के परिणाम स्वरूप आज फिर भारत में मुसलमान सिर उठा रहे हैं।

न्याय की मांग थी कि जो व्यवहार पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ हो रहा था वही भारत में मुसलमानों के साथ होता। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। उन के साथ भारत में समानता का ही व्यवहार नही हुआ, अपितु उनको नेताओं ने मेहमानों की भांति रखा और सिर पर बैठाया।

इसी का यह परिणाम है कि वे फिर से, मुसलमान होने के नाते विशेष अधिकार मांग रहे हैं। सेना, पुलिस प्रशासन में निश्चित अनुपात चाहते हैं। शिक्षा, कानून और व्यवहार में अपनी पृथक् स्थिति की मांग करते हैं। तात्पर्य यह कि बंटवारा होने के बाद भी भारत के टुकड़े कराकर, अपना भाग लेने के बाद भी हमारे हिस्से में बराबर के अधिकारी बनकर अपना नया घर मांगने की स्थिति बना चुके हैं।

इस बीच तीन बार इस्लामी—पाकिस्तानी सेनाएं भारत को मिटाने के लिये भारत से युद्ध कर चुकी हैं। अगर उनका बस चलता तो सारे भारत पर पाकिस्तानी झंडा फहराता। किन्तु सौभाग्य से भारत की सेना और जनता जागरूक है जिसके कारण तीनों बार पाकिस्तान को पिटना पड़ा।

१७ बार हराने पर मुहम्मद गौरी को पृथ्वीराज क्षमा कर सकता है, एक बार हराने पर पृथ्वीराज को गौरी क्षमा नहीं कर सकता। पाकिस्तान और गौरी एक हैं। उनकी नीति, रीत, लक्ष्य एक हैं। इस्लाम तलवार के ऊपर विश्वास रखता है। काफिर को जो इस्लाम को न माने, जीवन का अधिकार इस्लाम नहीं देता, इस सच्चाई को कोई अन्धा भी तो नहीं झुठला सकता।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज भारत में अरबों रुपया अरब देशों से इस्लाम के प्रचार के लिये आ रहा है। मुसलमानों द्वारा अनेकों विवाह व परिवार नियोजन का बहिष्कार करने से उनकी संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। हजारों मुसलमान अवैध रूप से भारत में आ रहे हैं। कश्मीर, असाम में घुसे घुसपैठिये इन क्षेत्रों को छोटा पाकिस्तान बना रहे हैं। ऐसी स्थिति में भारत के हिन्दुओं के समक्ष ज्वलन्त प्रश्न है कि वे क्या करें ?

शासन हिन्दुओं को सांप्रदायिक और मुसलमानों को शांति का देवता मानता है। हिन्दू अपने को हिन्दू कहते डरता है। हिन्दू संगठन के नाम से सब कांपते हैं, चारों ओर एक ऐसी लहर चल रही है जिसे हम मूर्खता की संज्ञा ही दे सकते हैं।

भारत के इतिहास में हमारे धर्म, सभ्यता-संस्कृति पर इतना बड़ा संकट पहले कभी नहीं आया। आज चारों ओर से हमें मिटाने की तैयारियां हैं। अग्नि का ज्वालामुखी सब कुछ भस्म करने के लिये सुलग रहा है। इसलिये हमारा कथन है कि हिन्दू को जीना है तो जागना होगा। भारत की स्वतत्रता बचानी है तो मूर्खतावादी कोरे आदर्श छोड़ने होंगे। हिन्दू कों संगठित होना होगा। यदि नहीं तो सवनाश को कोई रोक न सकेगा।

आप जनाना चाहेंगे कि मुसलमानों का क्या बने ? इस प्रश्न का उत्तर हम हिन्दू के नाते नहीं, भारत के नागरिक के नाते उदारतापूर्वक दे रहे हैं—

१—मुसलमानों को चाहिये कि वे अपने को वदलें। व्यक्तिगत वातों में अपने मजहब का वे पूरी तरह पालन करें। रोजा, नमाज आदि में वे स्वतन्त्र रहें।

२—सामूहिक स्तर पर वे भारत के अन्य नागरिकों की तरह रहें। पृथक् भाषा, पृथक् अधिकार, पृथक् कानून मांगने की प्रवृत्ति छोड़ें। उनकी भाषा, वेश रहन सहन सब में भारत के अन्य नागरिकों की भांति समानता हो।

३—भारत राष्ट्र के प्रति उनकी प्रथम निष्ठा हो, भारत की भाषा के प्रति, संस्कृति और परंपरा के प्रति उन्हें प्यार हो। वे यदि मक्का म दीने के गीत गा सकते हैं तो गंगा यमुना और भारत मां के गीत गाने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

४—उन्हें अपनी पृथक्तावादी मनोवृत्ति सर्वथा छोड़ देना चाहिये। वे भारत के बनकर रहें और समान स्तर पर रहें।

हम उन्हें समानता का स्तर तो देने के लिये तैयार हैं किन्तु उन्हें विशेष अधिकार देने को तैयार नहीं। मुसलमानों को यदि तैमूरलंग, औरंगजेब, मुहम्मद गौरी और नादिरशाह से प्रेरणा लेनी है तो उन्हें भारत को छोड़ देना चाहिये।

प्रश्न उठता है कि क्या यह संभव है कि मुसलमान अपने को वदलें। उत्तर में हम कह सकते हैं कि यह उनके लिए सर्वोत्तम मार्ग ह।

यदि वे नहीं वदलते तो उन्हें पाकिस्तान जाना होगा और शासन यदि इसी तरह उन्हें सिर चढ़ाना रहा, जामा मस्जिद का इमाम यदि इसी तरह धमकियां देता रहा तो हम चाहें, या न चाहें हिन्दुओं को या तो संगठित होना होगा या फिर मरना होगा। और कोई मार्ग है ही नहीं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश भीतर-भीतर सुलग रहा है। एकता की अपीलें समस्या का हल नहीं हैं। हिन्दुओं को दबाना या कोसना भारत राष्ट्र की सेवा नहीं—हत्या है। रास्ते केवल दो हैं—मुसलमान भारत मां के पुत्र बन जायें या भारत छोड़कर अपने घर पाकिस्तान में चले जाये। ये दोनों विकल्प न माने गए तो हिन्दुओं को संगठित होकर भावी संकट का सामना करना होगा।

देश की संस्कृति, स्वतन्त्रता और अखंडता यदि अब नट नहीं करनी तो हमें स्थिति को समझ उसका सामना करने की तैयारी करनी होगी।

यह सब कुछ हम जोश में नहीं सोच समझ कर शांति से स्थिति का का सही मूल्यांकन करते हुए लिख रहे हैं। हम प्यार करने को तैयार हैं बशर्ते कि कोई हम से भी प्यार करे।

पर यदि कोई हमारी मां के सिर पर प्रहार की सोचता है तो हम इतने कायर नहीं कि पिटते रहें और प्यार के गीत गाते रहें।

हिन्दुओं को अब ऋषि दयानन्द के दिखाए मार्ग 'सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथा योग्य व्यवहार करना चाहिए' पर आचरण करना ही होगा।

रक्षा का अन्य कोई मार्ग है ही नहीं। —वेदभिक्षुः

---

## ऐ वैदिक वीरो ! जाग उठो !

ऐ वैदिक वीरो ! जाग उठो, संदेश देश का आया है।
भारत संस्कृति की रक्षाहित, कर्त्तव्य ने तुम्हें बुलाया है॥
अब भारतीय जन मंडल ने भी, जागृति बिगुल बजाया है।
उत्तिष्ठत जाग्रत ही देखो, श्रुति ने भी तुम्हें जगाया है॥
भारत के कोने कोने में, क्या गूंज रहा घनघोर घोष।
क्यों भारतीयता भक्तों में रण रंजित हो रहा रक्त रोष ?
क्यों वैदेशिक मिशनरियों को, यह देश रहा है पाल पोष ?
क्या बने रहेंगे भारतीय, बमभोले बाबा आशुतोष ?
ईसाई मिशन हिन्दुओं को, क्या हरितोद्यान दिखाता है।
धन साधन रूप प्रसाधन के, आकर्षण से बहकाता है॥
अनुचित उपाय कर बहुप्रकार मजहब का जाल बिछाता है
ऋण का दृढ़ फंदा डाल, दीन हीनों को भेड़ बनाता है॥
भोले भाले भाई लाखों, प्रतिवर्ष जाल में फंसते हैं।
हम खड़े देखते टुकर टुकुर, परदेशी हम पर हंसते हैं।
जो दीन हीन हैं दलित वर्ग, वा वन पर्वत में बसते हैं॥
उनको ही लालच लाभ दिखा, ये मिशन जाल में कसते हैं।
भारत के धर्म-सभ्यता के विपरीत बकें ये अंड बंड।
कहीं साधु वेश में फिरें बांटते ईसाके तावीज गंड।
कहीं पंचम कालम काम करें चाहें भारत के खंड खंड।
मांगते कहीं नागा प्रदेश अरु कहीं मांगते झारखंड॥

—सूर्यदेव शर्मा अजमेर



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai


# क्या आप

# हिन्दू हैं ?

यदि आपका उत्तर हां में हो तो हमारे
द्वारा चलाए जा रहे संघर्ष में

## हमें धन की चिन्ता से मुक्त करें

हम जिन आदर्शों के लिए लड़ रहे हैं
उनमें विजय के लिए

## उदारतापूर्वक धन दीजिए

धन का अभाव हमारे मार्ग की बड़ी बाधा है।
आप के विश्वास पर प्रभु के भरोसे हमने जो बोझ
उठाया है उसे बांटिए

धन दीजिए

देते रहिए

थोड़ा या अधिक

पर कार्य न रुके—सहयोग के [illegible] पुकारता

वेदभिक्षु :

वेद मंदिर, नई दिल्ली-५




Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

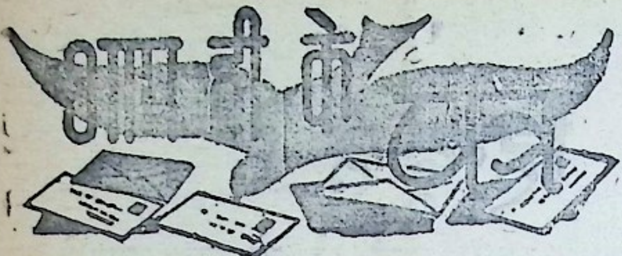

# वेंद मन्दिर के लिए मार्मिक अपील

महोदय,

दिल्ली में वेद मन्दिर बन रहा है। वैदिक पाठशाला का निर्माण हो रहा है। इसके लिए कोई है मदद करने वाला? यदि है तो कम से कम पच्चीस रुपया सौ ईंटों का दाम दयानन्द संस्थान को भेजे। यह बात लोगों को असंगत प्रतीत हो रही होगी, लेकिन ध्यान से देखा जाये तो यह महान् पुण्य का कार्य है? दुनिया में अपने को आर्य घोषित करने वालों की संख्या लाखों है। यदि प्रत्येक आर्य पच्चीस रुपया भेजे तो पच्चीस लाख रुपया हो जाये। प्रत्येक आर्य यदि अपने अन्य चार साथियों से पच्चीस रुपये वसूल कर भेजे तो करोड़ों रुपया हो जाये। इस प्रकार यह महान् कार्य शीघ्र पूरा हो सकता है।

अहा! वही उदार है परोपकार जो करे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

आर्यों में क्या-क्या गुण होने चाहिए, इसके लिए महाभारत में कहा गया है—

शान्तस्तितिक्षुर्दान्तिश्च सत्यवादी जितेन्द्रियः।
दाता दयालुर्नम्रश्च आर्यः स्यादष्टभिर्गुणैः।।

इसके अनुसार दाता—दान देने वाला होना चाहिए। क्या धर्म के नाम पर, जबकि धर्म का विशाल चिह्न व धर्म प्रसार केन्द्र बन रहा हो, इसके लिए आप पच्चीस रुपये का सहयोग नहीं कर सकते?

अगर आंखें हों तो खोलकर देखो, ईसाइयों और मुसलमानों की संख्या में वृद्धि का क्या कारण है? उनका धर्म के प्रति त्याग, प्रत्येक शहर में उनका आलीशान गिरजाघर बना है। लेकिन क्या वे किसी के पास चन्दा मांगने गये? क्या कभी किसी को मालूम हुआ है कि ईसाइयों ने आपस में चन्दा लगाया है।? नहीं, वे लोग धर्म के नाम पर बिना कहे अधिक से अधिक दान करते हैं, जिससे उन्हें किसी प्रकार की आर्थिक कठिनाई न हो, क्योंकि उनके पास अब काफी धन है। इसी धन से वे गरीब हिन्दुओं को ईसाई बना रहे हैं।

यदि आप अपने भाइयों को विधर्मी होने से बचाना चाहते हैं तो आज ही कमर कस कर उठो और प्रतिज्ञा करो कि जब तक हम अपने भाइयों को शुद्ध कर हिन्दू नहीं बना लेते (जो विधर्मी हो गये हैं) तक तक चैन नहीं लेंगे। यदि आप में अपने पूर्वजों का रक्त होगा, राम कृष्ण को वास्तव में देवता (श्रेष्ठ) मानते होंगे तो इस पुनीत कार्य में हाथ बटायेंगे। अगर आप अपनी आंखों के सामने अपने देश की


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai
ललनाओं को विधर्मी होते देखते हैं और इसके लिए आप कोई उचित कदम नहीं उठाते तो ऐसे लोगों को चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए।

प्रमोद कुमार, मन्त्री, सत्य समाज रेमां (मुगल सराय—वाराणसी)

## अपने ही देश में हिन्दू उपेक्षित क्यों ?

महोदय,

कांग्रेसी नेता सन् १९४७ से लेकर आज तक हिन्दुओं को साम्प्रदायिक कह कर उन्हें दबाते रहे हैं, ताकि मुसलमानों के सामूहिक वोट कांग्रेस को मिल सकें। कितने दुःख की बात है कि अभी तक हमारे देश में कुछ राज्य ऐसे हैं, जिन में गोओं और गोवंश की हत्या पर रोक नहीं।

मुसलमानों की मांग पर पाकिस्तान बना। मुसलमानों ने पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान को इस्लामी राज्य बना लिया। (भले ही बाद में बंगलादेश अस्तित्व में आया।) फिर बचे-खुचे भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित न करना कहां की बुद्धिमत्ता है ? यदि पाकिस्तान में कोई मुसलमान धर्मपरिवर्तन करे तो उसे मृत्यु दंड दिया जाता है, लेकिन हमारे देश में हिन्दुओं का धर्म परिवर्नन धड़ल्ले से हो रहा है। श्री ओम्प्रकाश त्यागी के धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक की लाइनों पर विधेयक पारित होना चाहिए और इस विषय में प्रस्तुत श्री रामजेठमलानी का विधेयक अस्वीकृत कर दिया जाना चाहिए।

खेमचन्द गुप्त, श्री गंगानगर (राजस्थान)

## कुरान में क्या है ?

महोदय,

कुरान में गैर-मुस्लिमों (काफिरों) से दोस्ती न करने का हुक्म साफ शब्दों में दिया गया है।

कुरान में लिखा है कि "मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त न बनायें।"जो ऐसा करता है (अर्थात् काफिरों को अपना दोस्त बनाता है। समझो कि अल्लाह से उसका कोई सरोकर नहीं। यदि किसी तरह काफिरों से दोस्ती करने से बचा जा सके, तो यह जायज है।" कु० पा० सु० अलडुमरान रुक ३ ।

यह बात मेरे अपने देखने में भी आई। मेरे पड़ोस में एक हाजीजी का घर है। बचपन में मैं और उनके बच्चे साथ-साथ पढ़ते थे। हम लोगों में कोई भेदभाव नहीं था। लेकिन सन् १९४२ बीतते न बीतते उन्होंने बीच में एक ऊंची दीवार खड़ी कर दी, जिससे हम दोनों का सम्बन्ध टूट-सा गया। अब तो बोलचाल भी नहीं है।

कुरान की ऐसी आयतें नमाज के बाद सुनाई जाती हैं। इसका मुसलमानों के दिमाग पर यह असर पड़ा है कि वे कभी भी हिन्दुओं से दोस्ती नहीं निभा पाये। मेरे विचार में इस शिक्षा का ही परिणाम है कि हिन्दुओं और मुसलमानों में साम्प्रदायिक दंगे होते हैं और दोनों में घृणा के भाव बढ़ते हैं।

हिन्दू समाज को इस ओर से सावधान रहने की आवश्यकता है। कुरान में यह भी लिखा है कि "ईमान वालो ! अपना ईमान छोड़कर काफिरों को दोस्त मत बनाओ। क्या तुम अपने उपर गुनाह लेना चाहते हो ?" कु० पा० ५ सू० नुशाहकु ११३७१(१४४)

इस आयत में दी गई शिक्षा मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काती है।

छेदालाल मित्तल, वनस्थली (कोटा)


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## जन-ज्ञान : एक सुसम्पादित पत्रिका

महोदय,

हमारा सारा परिवार हृदय से जन-ज्ञान का प्रशंसक है। महीना चढ़ते ही नये अंक की प्रतीक्षा होती है। प्रत्येक अंक सुसम्पादित होता है। रचनाएं सामयिक होती हैं। पत्रिका पढ़कर लगता है कि हमने कुछ पाया है। आपका और आपके सहयोगियों का प्रयास प्रशंसनीय है।

जन-ज्ञान के माध्यम से और अन्य रूपों में भी धार्मिक और राष्ट्रीय कार्यों और अभियानों को आगे बढ़ाने के अनुरोध हम तक पहुंचते रहते हैं। सच तो यह है कि हमारा बहुत-सा समय यह विचार करने में बीतता है कि आपको किस रूप में और क्या सहयोग दिया जाये। आपका मिशन महान् है। आपका संकल्प प्रेरक है। आप आर्यजगत् में क्रान्ति लाने में समर्थ हैं। यह हमारी दुर्बलता है कि हममें इतना प्रमाद घर कर गया है कि आपको उल्लेखनीय सहयोग नहीं दे पा रहे। जब भी कुछ करना चाहते हैं, अपने आपको विवश पाते हैं।

जयचन्द्र आर्य, रुद्रपुर (जिला नैनीताल)

---

## भारत का सौभाग्य

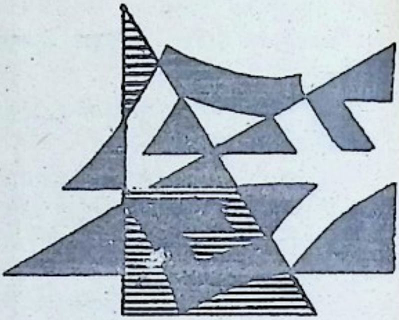

भारत का सौभाग्य
यहां हिन्दुत्व अमर है
आये कितने पंथ यहां
पर हुआ न तनिक असर है।

बलिवेदी पर चढ़े यहां
पर धर्म कभी ना खोया
शूली पर चढ़ने वाला भी
वीर कभी ना रोया।

बने नींव के पत्थर जिन पर,
धर्म ध्वज फहराता है
हिन्दू का बच्चा-बच्चा सब
उनकी ही जय गाता है।
मिटे यहां से कितने
पर यह धर्म न मिटने पाया।
रक्षा करने वीर यहां पर
कफन बांध कर आया।
हमें वीरता में गौरव को
कभी नहीं खोना है।
एक सूत्र में बंधकर सबको
सदा एक होना है।

—सत्येन्द्र त्रिवेदी



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# बीकानेर में विशाल हिंदू रक्षा सम्मेलन

# महात्मा वेदभिक्षुः की अध्यक्षता में संपन्न

## स्टेशन पर "ओ३म्" के झंडों से भव्य स्वागत

# नगर में ४ मील लम्बा जलूस

बीकानेर (डाक से)। अनेकों टैलीफोन व पत्र लिखने के बाद भी महात्मा वेदभिक्षुः जी के बीकानेर पधारने की स्वीकृति न मिलने से बीकानेरवासी निराश हो रहे थे। फिर भी जब १० अक्तूबर की दोपहर को उन्होंने रिजर्वेशन मिलने पर पहुंचने की आशा दिलाई तो सर्वत्र उत्साह छा गया। रात्रि को टैलीफोन न मिल सका। प्रातः ८ बजे फोन करने पर ज्ञात हुआ कि वे बीकानेर मेल से आ रहे हैं। समाचार सुनते ही सभी रेलवे स्टेशन की ओर दौड़ पड़े।

स्टेशन पर सैकड़ों माताएं, बच्चे-पुरुष भारी संख्या में पहुंचे हुए थे। सभी ने वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द के जयनाद से स्टेशन गुंजा दिया।

आर्यसमाज परमानन्द कालोनी, बीकानेर की ओर से सारे नगर में महात्मा जी का भव्य जलूस निकाला गया। बैंड—ऊंट—घोड़े—कारें और विद्यालयों के विद्यार्थी जयध्वनि करते नगर में आर्यसमाज की छाप छोड़ रहे थे।

नगरवासियों ने स्थान-स्थान पर महात्मा जी का जो स्वागत किया, वह अभूतपूर्व दृश्य था।

१२ अक्तूबर को ध्वजारोहण श्रद्धेय महात्मा जी के कर-कमलों द्वारा हुआ। पश्चात् १५-२० मिनट में उन्होंने ओ३म् ध्वज व उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला।

अजमेर के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० रमेशचन्द्र शास्त्री का वेद प्रवचन भी अत्यन्त प्रभावशाली था।

रात्रि को दयानन्द बाल मन्दिर में विशाल हिन्दू रक्षा सम्मेलन महात्माजी की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें सभी हिन्दू नेताओं ने एक स्वर से घोषणा की कि यदि सरकार ने तुष्टीकरण की नीति अपनाकर मजहब के आधार पर पुलिस व सेना में आरक्षण स्वीकार किया तो देश के ५० करोड़ हिन्दू सबल रूप में इसका विरोध करेंगे।

इस सम्मेलन में स्थानीय विश्व हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष महन्त श्री रामदयालु शास्त्री, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के डा० सूर्यनारायण, सर्वोदय समाज के श्री वीरदेव व अन्य नेताओं ने जोरदार शब्दों में भारत सरकार की तुष्टीकरण नीति की आलोचना की। सम्मेलन के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षुः ने घोषणा की कि देश का हिन्दू जाग चुका है और वह किसी मूल्य पर भारत की एकता, स्वतंत्रता और सुरक्षा पर आंच नहीं आने देगा।

सर्वोदयी नेता ने कहा कि १९४७ में बीकानेर में ८ लाख गौएं थीं, जबकि आज १९८० में २ लाख शेष हैं। ये ६ लाख गौएं कहां गयी हैं? क्या सरकार इसका जवाब देगी?



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## स्वीकृत प्रस्ताव

सम्मेलन में सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव स्वीकार हुए।

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की ओर से आयोजित हिन्दू रक्षा सम्मेलन भारत सरकार ने मांग करता है कि :

१—मजहब के आधार पर पुलिस, सेना व सरकारी विभागों में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाये।

२—कश्मीर, असम व देश के अन्य सभी भागों से पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाये।

३—अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाये।

४—भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाये और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाये।

५—अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बंद हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाये।

६—भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार हों।

७—कश्मीर में धारा ३७० तुरन्त हटाई जाये और वहां भारत के नागरिकों को बसाने की व्यवस्था हो।

८—जो भारत को अपना देश नहीं मानते उनको वोट का अधिकार न दिया जाये। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथपत्र भरने का नियम बनाया जाये जिसमें वह स्वीकार करे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत राष्ट्र के प्रति रहेगी।

९—मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाये।

१०—गोहत्या का कलंक तुरन्त समाप्त किया जाये।

ये सभी मांगें सर्वसम्मति से स्वीकृत हुईं। सम्मेलन रात्रि के ११ बजे तक उत्साह से चलता रहा। हिन्दू जागरण की सर्वत्र भारी चर्चा रही।

उत्सव में प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् और देश के सबसे प्रभावशाली वक्ता प्रो० रत्नसिंहजी दर्शनाचार्य के भाषणों की धूम रही। नगर के बुद्धिजीवी भी उनके विचारों से अत्यन्त प्रभावित हुए।

आर्यसमाज परमानन्द कालोनी, बीकानेर का यह महोत्सव अत्यन्त सफल रहा। नगर के आबालवृद्ध सभी पर इसका प्रभाव पड़ा। सभी सहयोगियों व सदस्यों का मैं विशेष रूप आभारी हूं।

शिवनारायण आर्य
मन्त्री
**आर्यसमाज परमानन्द कालोनी, बीकानेर**



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# राष्ट्र की रक्षा कैसे हो ?

—स्व० पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय

**सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।**
**सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥**

(अथर्व वेद काण्ड १२, सूक्त १, मंत्र १)

अन्वय :—बृहद्, सत्यं, उग्रं ऋतं, दीक्षा, तपः, ब्रह्म, यज्ञः (एते सर्वे) पृथिवीं धारयन्ति। सा पृथिवी नः भूतस्य भव्यस्य पत्नी (अस्ति)। सा पृथिवी नः लोकं उरुं कृणोतु।

अर्थ : पृथिवी को इतनी चीजें पालती हैं। (बृहद् सत्यं) बड़ा सच, (उग्रं ऋत) तीव्र ऋत, दीक्षा, तप, ब्रह्म और यज्ञ। यह पृथिवी (नः) हमारे (भूतस्य) भूतकाल (भव्यस्य) और भविष्यत् काल की (पत्नी) पालने वाली है। यह पृथिवी हमारे (लोक) जीवन को (उरुं कृणोतु) ऊंचा बनावे।

व्याख्या—इस मंत्र में पृथिवी अर्थात् देश की उन्नति के साधन बताये गये हैं। पृथिवी पर हम लोगों का जन्म होता है, इसी पर बढ़ते हैं और इसी पर हमारी अन्त्येष्टि हो जाती है। अतः इसकी उन्नति में हमारी उन्नति और इसके ह्रास में हमारा ह्रास है। उन्नति में भौतिक, सामाजिक और धार्मिक सभी उन्नतियों का समावेश है। पृथिवी या देश के समुन्नत होने के बहुत-से भौतिक साधन हैं जिनको देश की सरकारें वैज्ञानिकों की सहायता द्वारा प्रयुक्त किया करती हैं। जैसे भिन्न प्रकार की भूमियों को कृषि के उपयुक्त बनाना, ऊसरों को तोड़ना, पहाड़ी जमीनों को चौरस करना, जहां पानी की कमी हो दूरस्थ नदियों से नहरें निकाल कर पानी पहुंचाना, विद्युत्-शक्ति को कृषकों के लिए सुलभ बनाना इत्यादि।

परन्तु वेद मंत्र में कुछ ऐसे अभौतिक तथा मानसिक गुणों का वर्णन किया गया है, जो ऊपर दिये भौतिक साधनों से भी अधिक आवश्यक हैं, जिनके सहयोग से ही भौतिक साधन सफल हो सकते हैं और जिनके अभाव में ये भौतिक साधन सर्वथा विपरीत सिद्ध होते हैं। कृषि आदि भौतिक साधन मनुष्य के कल्याण के लिए हैं न कि मनुष्य उन साधनों के लिए। अतः यदि देश में खाद्य पदार्थ बहुत हों और खाने वाले निकम्मे हों उन पदार्थों का उपयोग नहीं हो सकता। कल्पना कीजिये कि धनाढ्य परिवार है। अच्छे मकान, खाने के लिए पुष्कल अन्न, पहनने के लिए वस्त्र, परन्तु परिवार के लोग आलसी, स्वार्थी और कलह प्रिय हैं तो घर की शान्ति का सदा भंग होता रहेगा, और शनैः शनैः घर की समृद्धि भी चलायमान हो



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जायगी। राजा दशरथ के चार लड़के थे—राम और उन्हीं के सदृश लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न—इनमें कुछ मानसिक गुण थे जिनकी सहायता से वे दशरथ के राज्य को विस्तृत और समृद्धिशाली बना सके। शाहजहां के चार पुत्र थे, दारा और उसके ही सदृश शुजा औरंगजेब और मुराद। इनमे कुछ गुणों की कमी थी अतः सुसमृद्ध मुगल राज्य शीघ्र ही छिन्न-भिन्न हो गया।

इन्हीं गुणों का वेदमंत्र में वर्णन है। एक-एक करके देखिये। पहला है "सत्यं बृहद्" "अत्यन्त सत्य प्रियता" अर्थात् असत्य से घोर अप्रीति। ऋग्वेद में आया है "सत्येनोत्तभिता भूमिः" (ऋग्वेद १०-८५-१) अर्थात् सत्य भूमि को ऊपर उठाये हुए उसे गिरने नहीं देता।

यहां सत्य कोई लोहे का खम्भा नहीं है। न शेषनाग का फन है। न कोई ऐट-लस जैसा कोई देव है जो भूमि को कन्धे पर उठाये रखता हो। यहां तो भूमि पर रहने वाले मनुष्यों के मानसिक गुण से अभिप्राय है। सत्यनिष्ठ लोग दरिद्र देश को भी सम्पन्न बना देते हैं और असत्यनिष्ठ लोग सम्पन्न देश की सम्पदा को भी नष्ट कर देते हैं। 'सत्य' का एक विशेषण दिया 'बृहत्।' यों तो सभी सत्य को अच्छा समझते हैं परन्तु व्यवहार में सत्य को कम मान्यता दी जाती है। हर व्यापारी का विश्वास है कि सत्य से व्यापार नष्ट हो जाता है। हर वकील कहता है कि वकालत सत्यता से नहीं चल सकती। हर राजनीतिज्ञ कहता है कि राज करना है तो सत्य छोड़ो। सत्य ग्रहण करना है तो लंगोटी लगा कर बन को चले जाओ। राज-नीति में सत्य का क्या काम? हां, सत्य का ढिंढोरा पीटते रहो। दूसरों को उनके असत्य व्यवहार के लिए बदनाम करते रहो। भारतीय शास्त्रों में सत्य की महिमा बहुतायत से गाई गई है। परन्तु गाजर बेचने वाले कुंजड़े से लगाकर महा धनाढ्य सेठ साहूकारों तक सभी असत्य को समृद्धि का साधन समझते हैं। इससे भारत वर्ष की उन्नति तो नहीं होती। वेद कहता है कि पृथिवी को धारण करने वाले गुणों में से मुख्य गुण बृहद् सत्य है, नकली सत्य और असली सत्य में भेद है। क्या यह अचंभे की बात नहीं है। सत्य की महिमा को स्थापित करने के लिए किसी ने हरिश्चन्द्र नाटक में अनेक असत्य बातें मिला दीं। क्या हरिश्चन्द्र नाटक के लिखने वाले को भी यह विश्वास था कि असत्य का मिश्रण किये बिना नाटक सफल नहीं होगा? असत्य की विफलता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि लाखों मनुष्य नाटक देखकर हरिश्चन्द्र की बड़ाई करते हैं परन्तु इन नाटकों ने संसार के असत्य व्यवहार में कमी तो नहीं की। केवल दर्शकों द्वारा धन प्राप्ति ही तो नाटक की सफलता नहीं है। इसी प्रकार वैज्ञानिक उद्योगों के साथ-साथ यदि सत्य का प्रचार नहीं होता तो देश के सम्पन्न और कल्याण-समृद्ध होने में सन्देह ही है।

दूसरा गुण है "ऋतं उग्र"। ऋत का अर्थ है सृष्टि के नियमों का सह-योग। सृष्टि किसी को अपने नियमों का असहयोग करने नहीं देती। जो ऐसा करता है तुरन्त उसे दण्ड मिलता है। आप रोटी के ग्रास को मुख के बजाय नाक से खाने लगे। तुरन्त ही दण्ड मिलेगा। सिर के बल चलना आरम्भ कीजिये। दिन में सोइये, रात को जागिये। यह सब उद्दण्डता के काम हैं और उद्दण्डता के लिए दण्डित होना अवश्यम्भावी है। आजकल साइन्स का युग है। ऋत को विस्तारपूर्वक जानने का यत्न किया जाता है। सृष्टि के नियमों की नित्य प्रति खोज हो रही है। परन्तु अपने जीवन में उसका उपयोग नहीं करते डाक्टर होकर ऐसे आचरण या आहार व्यवहार करते हैं, जो विज्ञान के सर्वथा विपरीत है। इससे देश और जाति को हानि



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होती है। कोई 'ऋत' यह नहीं बताता कि सिगरेट पीना उपयोगी है। कोई 'ऋत' यह आज्ञा नहीं देता कि स्त्रियां होठों को रंगा करें या कमर को इस इस प्रकार कसा करें कि उनके पेट की नसें निर्बल हो जायें या ऊंची ऐड़ी के जूते पहना करें। विज्ञान समुन्नत देशों के आचार-व्यवहार बताते हैं कि यदि जंगली देशों ने ऋत का पालन नहीं किया तो यह उनके अज्ञान के कारण था। जब मनुष्य में ज्ञान की वृद्धि हो जाय फिर भी जान बूझ कर ऋत से असहयोग किया जाय तो दण्डित होना ही पड़ेगा।

तीसरा गुण है दीक्षा। यजुर्वेद में कहा है।

**व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।**
**दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।**

'दीक्षा' का अर्थ ऋषि दयानन्द ने 'उत्तम अधिकार' किया है। जब मनुष्य शुभ कामों के लिये व्रत धारण करता है तो उसको उस काम के करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है। जब तक किसी देश में इस प्रकार के उच्च मनुष्य उत्पन्न नहीं होते जो निःस्वार्थभाव से देश सेवा के लिये दृढ़-संकल्प हो जायें, उस समय तक देश की उन्नति संदिग्ध रहती है। यों तो देश में करोड़ों मनुष्य रहते हैं, खाते हैं पीते हैं मौज उड़ाते हैं, परन्तु देश या जाति उनके आश्रय नहीं है। जैसे देश में करोड़ों पशु-पक्षी कीट पतंग रहते हैं, उसी प्रकार वे भी रहते हैं। "कोऊ नृप होय हमें का हानी।" धार्मिक लोग रहें या अधार्मिक, देश रहे या नष्ट हो जाय, मेरे मकान में चिड़ियां घोसला रखती हैं, चूहे बिल बनाते है, मकड़ी जाला पूरती है, परन्तु उनमें से किसी को मकान की चिन्ता नहीं। घर गिर जाय तो वे गिरे हुए मकान के खंड-हर में रहेंगे या अन्यत्र भाग जायेंगे। मकान के धारण करने वाले वे पशु-पक्षी नहीं हैं। इसी प्रकार देश की रक्षा का भार भी व्रत-हीन और दीक्षा-हीन मनुष्यों के ऊपर नहीं है। लोग जब लोक सभाओं या पार्लमेंट के सदस्य चुने जाते हैं तो उनको शपथ लेनी होती है कि हम जो कुछ करेंगे केवल देश हित की दृष्टि से करेंगे, अपने व्यक्तित्व, परिवार, दल या सम्प्रदाय की भावनाओं को बीच में न आने देंगे। यह व्रत लेना ही उनकी दीक्षा है। व्रत के पश्चात् ही वे पार्लमेंट की सदस्यता के अधिकारी होते हैं। अब यदि उन्होंने दीक्षा भी ले ली और अधिकार भी प्राप्त हो गया परन्तु यदि स्वार्थ या अज्ञानवश उन्होंने इसको निबाहा नहीं तो देश शीघ्र ही नष्ट हो जायगा। क्योंकि व्रत या शपथ का मुंह से लेना अथवा कागज पर हस्ताक्षर कर देना तो आसान है, परन्तु जब स्वार्थ और देशहित में विरोध आता है तो स्थिर रहने के लिये तीन और गुणों की आवश्यकता है। तप की, ब्रह्म की और यज्ञ की। 'तप' का अर्थ है कर्त्तव्य पालन करने में जो कठिनाइयाँ आयें उनको सह सकना। अपने मन के अनुकूल बात होने पर तो सभी सच बोलते हैं, परन्तु जब सच बोलने से अपने स्वार्थ में बाधा पड़ती हो उस समय सच बोलना कठिन हो जाता है। स्वार्थ होते हुए न्याय तो सभी कर सकते है, परन्तु जो शत्रु के साथ न्याय करने में संकोच न करे वही देश का उद्धार कर सकता है। काम-क्रोध-लोभ-मोह का वशीभूत पुरुष कभी देश या जाति की रक्षा करने में समर्थ नहीं हो सकता। 'तप' वही कर सकता है जो ब्रह्म अर्थात् अध्यात्म और यज्ञ अर्थात् आत्म-त्याग या आत्म-समर्पण में विश्वास रखता हो। अध्यात्म को भूलकर जो केवल भौतिकवादी हैं वे विषयों में शीघ्र फंस जाते हैं। मनुस्मृति में क्षत्रियों के लक्षण गिनाते हुए एक मुख्य लक्षण यह भी दिया है



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

… शक्ति और अधिकार पाकर लोलुप और विषयी हो जाते हैं। इसीलिए वर्णाश्रम धर्म नष्ट होकर देश और जाति की अधोगति हो जाती है। देशों के इतिहासों पर सूक्ष्म दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि जब-जब बृहत् सत्य, उग्र ऋत, दीक्षा, तप आदि गुणों का अभाव हो गया तो समुन्नत देश भी रसातल को चला गया। शासन का कोई रूप क्यों न हों, एकाधिपत्य हो, प्रजातंत्र हो, गणतन्त्र हो, कोई शासन पद्धति सफल नहीं हो सकती जब तक कि देश के मनुष्यों की उच्च कक्षा के लोग इन गुणों से युक्त न हों। यह ठीक है कि देश के सभी व्यक्ति गुणी नहीं हो सकते। परन्तु यदि देश में इन गुणों का सर्वथा अभाव हो जाय तो अराजकता फैल ही जायगी। इसलिए वेद मंत्र में उपदेश दिया है कि देश या पृथ्वी को धारण करने वाले मुख्यतः ये गुण हैं। इनके होते हुये अन्य ऋद्धियां और सिद्धियां तो स्वयं ही आ जाती हैं। पृथ्वी रत्नगर्भा है परन्तु उन्हीं के लिए जो रत्नों के अधिकारी हैं। अफ्रीका के दक्षिणी भाग पर दृष्टि डालिये। सैकड़ों वर्षों से जंगली जातियां रहती थीं। नितान्त जंगली। एक दूसरे से लड़ने वाली, किसी प्रकार की उन्नति के चिह्न न थे। जब बाहर से कुछ ज्ञान और श्रम से सम्पन्न लोग आ गये तो उस देश की वही पुरानी मिट्टी अंगूर, नारंगी, सेब आदि रत्न उगलने लग गई। अन्य देशों का भी यही हाल है। भौतिक सम्पत्ति की उत्पत्ति भी बिना सत्य आदि गुणों के नहीं होती। और यदि उत्पत्ति हो भी जाय तो मनुष्य का कल्याण तो हो ही नहीं सकता जब तक कि उत्पन्न वस्तु की रक्षा का उपाय न हो। खेती करना मात्र ही पर्याप्त नहीं है। उपज को चोरों से बचाने का भी तो प्रश्न है। जब तक देश वासियों में यज्ञ अर्थात् आत्मसमर्पण का भाव उत्पन्न नहीं होता उस समय तक सामाजिक न्याय की स्थापना नहीं होती, सामाजिक न्याय कीभावना के न होने से हिंसा, असत्य और स्तेय का आधिक्य हो जाता है। पृथ्वी कोधारण करने वाली दैवी शक्तियां तो हैं ही, जैसे सूर्य की ज्योति, वर्षा, पृथ्वी की आकर्षण शक्ति इत्यादि। परन्तु जब तक इन शक्तियों के साथ मंत्र-कथित मानव-गुणों का सहयोग न हो, निरर्थक हैं। असभ्य और असंस्कृत देशों में भूमि उतनी ही उर्वरा होती है, धातुएं सोना-चांदी आदि बहुत रहती हैं। सूर्य के प्रकाश की कमी नहीं, वर्षा पुष्कल मात्रा में होती है। परन्तु मानव-गुण विहीन असभ्य देश उस समय तक उन्नति नहीं कर सकते जब तक मनुष्य समाज अपना भाग प्रदान नहीं करता। भारत भूमि में परमात्मा ने बहुत कुछ दिया है परन्तु जब-जब इस देश के मनुष्य धर्मच्युत, असत्य-प्रिय, स्वार्थी और तप-शून्य हो गये, देश परतन्त्र हो गया। भारत ही क्या, समस्त देशों का यही हाल है। वेद की शिक्षा सभी के लिए है।

जब देश में ऊपर दिये गुणों का आधिक्य होता है तो पृथ्वी मनुष्य के भूत और भविष्य दोनों की "पत्नी" अर्थात् पालिका हो जाती है। भविष्य तो भूत का अनुगामी ही होता है। जिसने बोया नहीं वह काटेगा कैसे? जिस देश की पुरानी पीढ़ियां गुणहीन रहेंगी उनकी नई पीढ़ियों में गुण कहां से आयेंगे? पितृ-वर्ग ही तो सन्तान के भविष्य का उत्तरदाता होता है। वेद मंत्र में प्रार्थना है कि ऐसी पृथ्वी हम को 'उरु लोक' या मोक्ष की देने वाली हो। मोक्ष की वर्षा अचानक ऊपर से नहीं होती। मोक्ष परम पद है, उसके लिए भौतिक और अभौतिक दोनों साधनों की आवश्यकता है। इन साधनों के लिए बृहत् सत्य, उग्र ऋत, दीक्षा, तप, ब्रह्म और यज्ञ अनिवार्य हैं। अतः प्रत्येक मनुष्य को ये गुण अपने में धारण करने चाहियें और समाज में उनका संचार करना चाहिये।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# शान्ति विज्ञान के अमर साधक

# डा० भाभा

—अखिलेश मिश्र

डा० भाभा परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष ही न थे, वह पारमाणविक क्षेत्र में इस देश की उल्लेखनीय प्रगति के प्रमुख स्तम्भ भी थे। इतने कम समय में देश की परमाणु विज्ञान की दिशा में प्रगति देखकर विदेशी भी दांतों तले उंगली दबाने लगे थे— इसका श्रेय डा. भाभा को ही था। उनके अनुसन्धान कार्य ने उन्हें विश्व के अत्यन्त जाज्वल्यमान वैज्ञानिकों की श्रेणी में प्रमुख स्थान प्रदान किया। उनके शोध प्रबन्ध का विषय था— 'क्वेण्टम सिद्धान्त और ब्रह्माण्डीय विकिरण। वह ३१ वर्ष के ही थे, जब विज्ञान जगत् ने श्रद्धापूर्वक उनके शोध का महत्व पहचान लिया था और इतनी अल्पायु में ब्रिटिश रायल सोसायटी का फेलो बनना उन्हीं का काम था। इसके बाद विश्व की अनेक वैज्ञानिक संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित किया।

## कवि और गायक भाभा

डा. भाभा अत्यन्त मृदुभाषी थे और उनकी भाषा में कवित्व था। लखनऊ विश्वविद्यालय के रजत जयन्ती समारोह में उन्हें डाक्टर की उपाधि देकर विश्वविद्यालय ने अपने को सम्मानित किया। उन्हें दीक्षार्थ प्रस्तुत करते हुए तत्कालीन विज्ञान शाखाध्यक्ष स्व० डा. बीरबल साहनी ने डा. भाभा के गुणों की चर्चा करते हुए कहा, "डा. भाभा अत्यंत उत्कृष्ट कवि भी हैं।" जब कुलपति पद से प्रख्यात कवयित्री श्रीमती सरोजिनी नायडू उन्हें दीक्षा प्रदान करने लगीं तो उन्होंने कवि-सुलभ वाणी में वात्सल्यपूर्वक कहा—"लेकिन मैं तो कभी विज्ञान क्षेत्र में पांव नहीं धरती, तुमने मेरे क्षेत्र में अतिक्रमण क्यों किया है?" डा. भाभा मुस्कराते हुए यह आशीर्वचन स्वीकार कर रहे थे। अब भी लखनऊवासियों को वह स्मरण मार्मिक पीड़ा प्रदान कर रहा होगा।

पोशाक और धज से डा. भाभा बहुत साधारण हैसियत के व्यक्ति जान पड़ते थे, पर उनकी आकृति का सौन्दर्य बड़ा मोहक था। बहुत कम लोगों को पता



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
होगा कि डा. भाभा की गायन में भी बड़ी रुचि थी और वह बड़े अच्छे गायक भी थे। जब वह वैज्ञानिक के रूप में विख्यात न थे, तब एक बार उनके मन में यह भी आया कि वह संगीत साधना को ही जीवन का लक्ष्य बनायें। इसके अतिरिक्त डा. भाभा एक उच्चकोटि के चित्रकार भी थे।

एक विज्ञान कांग्रेस में भाषण देते हुए डा. भाभा ने कहा था कि वैज्ञानिक यदि उत्कुष्ट कलाकार नहीं है, तो वह तन्मयतापूर्ण विज्ञान की साधना नहीं कर सकता। कला और विज्ञान के समन्वय ने ही उनके जीवन को योगियों जैसी सफलता दिलाई।

## महत्त्वपूर्ण उपलब्धि

स्वर्गीय प्रोफेसर आइन्स्टाइन की मृत्यु के बाद विश्व में स्व. डा. भाभा ही सम्भवत: ऐसे एकमात्र परमाणु विशेषज्ञ थे, जिन्हें लोकतन्त्रीय विश्व और समाजवादी विश्व ही नहीं बल्कि हिटलर द्वारा शासित जर्मनी और इटली की वैज्ञानिक कार्यविधि का आंखों देखा अनुभव था। इन दोनों वैज्ञानिकों ने युद्ध की विभीषिका को अत्यन्त निकट से देखा, उसकी लपटों की आंच सही और इसलिए विज्ञान को केवल शान्तिपरक बनाने के लिए युद्धोन्मादपूर्ण राजनीतिज्ञों की छत्रछाया में पलने वाले ध्वंसपरक विज्ञान के मुकाबले दोनों ने निष्ठापूर्वक अंगद के पांव टेके थे।

भारत में उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी, परमाणु ऊर्जा संस्थान की स्थापना। इसके शोध कार्य तथा पारमाणविक ऊर्जा के शान्तिपूर्ण प्रयोग के क्षेत्र में इसकी सुविधाओं का डा. भाभा ने बहुविध विस्तार किया। उन्होंने अपने कार्य का महत्त्व पहचान कर ही देश में पारमाणविक ऊर्जा कार्यक्रम की नीति निर्धारित होने से बहुत पहले ही पहल की और पारमाणविक वज्ञानिकों की एक बड़ी सेना एकत्र करके प्रशिक्षित कर डाली। इन्हीं अध्येताओं की सहायता से डा. भाभा ने भारत की प्रथम अणुभंजक भट्टी के लिए आवश्यक यन्त्र-सज्जा का भी निर्माण एवं समायोजन कर डाला।

१९४५ में मौलिक शोध का टाटा संस्थान बहुत-कुछ डा. भाभा के प्रयास से ही बना और उन्हीं के मनोयोग का यह फल है कि आज वह संस्थान देश का सबसे बड़ा वैज्ञानिक शोधकेन्द्र है। इलेक्ट्रोन वर्षा की पेटिका सिद्धांतमाला के लिए डा. भाभा विश्व में विख्यात थे। मेसोन नामक सर्वथा नवीन प्रारम्भिक कण की खोज डा. भाभा ने की थी। सितम्बर १९५९ में स्टाकहोम में अन्तर्राष्ट्रीय प्राविधिक सम्मेलन में बोलते हुए उन्होंने विश्व को चौंका दिया। विश्व में तब तक जितने ऊर्जा सम्पन्न कणों का पता था, उनकी तुलना में कई सौ गुनी अधिक ऊर्जा वाले ब्रह्माण्डीय कणों की खोज डा. भाभा कर चुके थे।

डा. भाभा पारमाणविक शक्ति को केवल शांतिपूर्ण दिशाओं में लगाने के समर्थक थे। वह निरस्त्रीकरण के कार्य में मनोयोग से जुटे थे। उन्होंने एक बार सन् ६४ में कहा था कि परमाणु बम का निर्माण इतना सस्ता होने जा रहा है कि अनेक देश इसके लिए प्रोत्साहित हो सकते हैं। अत: परमाणु बम के निर्माण पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। तब तक चीन ने परमाणु बम विस्फोट नहीं किया था।


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## मंत्रिपद ठुकराया

परमशान्ति के साधक, योगी और परमाणु स्पन्दन के विश्लेपक वैज्ञानिक वस्तुत: ब्रह्माण्ड के एक ही रहस्य का उद्घाटन करते हैं। दोनों में एक और भी साम्य है। उनकी शान्ति साधना कायरता नहीं, शौर्य की पराकाष्ठा होती है। चीन द्वारा परमाणु बम विस्फोट से विश्व में कौन विचलित नहीं हुआ? भारत में तो बड़े-बड़े डिग गये। सभी के मन में यह प्रश्न था, अब क्या होगा? पर अडिग रहे डा. भाभा और उनके बल पर देश की भावना भी अडिग हो गई। हमें आश्वासन मिल गया कि विस्फोट आडम्बर है, जिसमें न फंसकर भी भारत की विज्ञान चेतना किसी भी क्षण आक्रमण का प्रतिरोध करने के मामले में साधनाभाव से पीड़ित नहीं होने पायेगी।

वह भारत सरकार में परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव भी थे। पं० नेहरू की मृत्यु के बाद श्री लालबहादुर शास्त्री ने उनसे आग्रह किया कि वे केंद्रीय मंत्रि-मंडल में सदस्य बनें और परमाणु ऊर्जा तथा वैज्ञानिक अनुसंधान विभाग संभालें। पर डा. भाभा ने वैज्ञानिक शोध से अलग रहना स्वीकार नहीं किया। अमेरिका, ब्रिटेन तथा अन्यत्र उनकी यह निस्पृहता सम्मान से देखी जाती थी। अमेरिका कला विज्ञान अकादमी : १९५९; एडिंशबरा की रायल सोसायटी : १९५७; अमेरिका विज्ञान राष्ट्रीय अकादमी : न्यूयार्क की विज्ञान अकादमी : उन्हें सम्मान प्रदान कर चुकी थी। डा. भाभा की उपाधियां थीं—बी. ए. कैम्ब्रिज : १९३०; पीएच. डी. कैम्ब्रिज : १९३४; डी. एससी. सम्मानार्थ, पटना : १९४४; लखनऊ : १९४९; वाराणसी : १९५०; आगरा : १९५२; इलाहाबाद : १९५८; पर्थ : १९५४ : कैम्ब्रिज १९५९; लन्दन : १९६०, एफ. आर. सी. एस. : १९४९ पदोवा : (इटली) १९६१ पद्मभूषण : १९५४।

## जीवन वृत्त

श्री होमी जे. भाभा का जन्म ३० अक्तूबर, १९०९ को हुआ था। उनकी आरम्भिक शिक्षा-दीक्षा केथेड्रल ओर जान कैनन हाईस्कूल' एलफिन्स्टन कालेज और रायल साइंस इंस्टीट्यूट, बम्बई में हुई। कैम्ब्रिज में उन्होंने गोनाविते और काइमस कालेज में शिक्षा प्राप्त की, जिसने बाद में सन् ५७ में उन्हें अपना फेलो बनाकर सम्मानित किया। उन्हें गणित की राउल वाल यात्री छात्रवृत्ति सन् १९३२ में मिली और सर आइक न्यूटन छात्रवृत्ति मिली १९३४ में। सन १८८१ की बड़ी प्रदर्शनी में आरम्भ वरिष्ठ छात्र का वजीफा श्री भाभा को १९३९ में मिला। १९४० में वह बंगलौर में भारतीय साइंस इंस्टीट्यूट में विशेष उपाध्यापक नियुक्त किये गये। सन् १९४२ में उन्हें आदम पुरस्कार मिला और उसी इन्स्टीट्यूट में उन्हें तीन वर्ष के लिए ब्रह्माण्डीय किरण और शोध दल का प्रोफेसर बनाया गया। सन् १९४८ में डा. भाभा को हॉपकिन्स पुरस्कार मिला। जनीवा में अगस्त १९५५ में परमाणु ऊर्जा के शान्तिपूर्ण उपयोग पर विचार करने के लिए जो अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा आयोग बना था, उसकी परामर्शदात्री समिति के डा. भाभा सदस्य थे। संयुक्त राष्ट्रसंघ की विज्ञान सलाहकार समिति के भी वे सदस्य थे।

उनके ग्रन्थों में क्वांटम सिद्धान्त, प्रारम्भिक भौतिक कण, ब्रह्माण्डीय विकिरण आदि हैं। २४ जनवरी १९६६ को विमान दुर्घटना के फलस्वरूप यह तेजस्वी हमसे छिन गया। ●



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# प्राचीन भारत में गणतंत्र

—पी. के. हरिवंश

भारत आज से सहस्रों वर्ष पूर्व गणतन्त्र प्रणाली से परिचित था। यदि हम ईसा के जन्म से एक हजार वर्ष पूर्व तक दृष्टिपात करें, तो दीर्घकालीन व्यवधान के कारण अस्पष्ट होने पर भी उस काल में गणतन्त्र व्यवस्था के सुचारु प्रचलन का पता चलता है। इस प्रणाली का सूत्रपात तो उससे भी अनेक वर्ष पूर्व हो चुका था। वेदभाष्य, ब्राह्मण ग्रन्थ, जैन सूत्र तथा बौद्ध जातक और अवदान शतक आदि अनेक प्राचीन शास्त्रों में गणतन्त्र पद्धति का उल्लेख मिलता है। इस गणतन्त्र पद्धति का उस काल में सम्यक् विकास हो चुका था, इसकी पुष्टि में इन शास्त्रों में अनेक अंतः प्रमाण उपलब्ध होते हैं। गण, विशः, सभापति, शलाका, गणपूरक, बहुतर वाये भुयसिकम्, छन्दाक् तथा, वैह्म-आदि पद वर्तमान गणतन्त्र प्रणाली के पार्लमैंट, विधान सभा, प्रेजीडेंट, मतपत्र या वैलट, सचेतक या व्हिप बहुमत, जनमत संग्रह तया सामान्य जन के पर्यायवाची ही हैं। वर्तमान गणतंत्र प्रणाली की लगभग समस्त पदावली की तात्कालिक सत्ता सिद्ध होने से क्या यह प्रमाणित नहीं होता कि उस काल में इसका यथेष्ट विकास हो चुका था ?

वेदों में जिन सभाओं तथा समितियों का वर्णन मिलता है, वे गणतन्त्र के लघुसंकेत ही हैं। उदाहरण के रूप में ऋग्वेद की एक ऋचा है —

"समानो मंत्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चितमेषाम्"

इसमें प्रार्थना की गई है कि हमारी एक सर्वसामान्य समिति हो, एक राजनीति हो, समान उद्देश्य हों तथा समान चित्तवृत्ति हो। समिति से तात्पर्य है एकत्रित होना व एक साथ मिलकर बैठना। सभा से तात्पर्य है, जिसमें सब समान रूप से विभ्राजित शोभायमान होते हों।

अथर्ववेद में सभा तथा समिति को प्रजापति की "दो पुत्रियाँ" कहा गया है। निःसन्देह प्रजापति के साहचर्य से उनका वैदिक काल से भी अत्यधिक प्राचीन होना सिद्ध होता है। मंत्र इस प्रकार है—

'सभा च मां समितिश्चावतां प्रजापतेर्दुहितरौ संविदाने। येना संगच्छा उपमास शिक्षा चारु वदानि पितरः संगतेषु। विद्मम ते समे नाम वरिष्ठा नाम वा असिभये ते के चे सभासदस्ते मे सन्तु व वाचसः"

इन मन्त्रों में याज्ञिक प्रार्थना करता है कि सभा, तेरा नाम सचमुच 'वरिष्ठा' है। जो सभासद् तुझमें एकत्रित होकर बैठें वे मेरे मतैक्य से बोलें। वरिष्ठा से तात्पर्य है······बहुतों का वह प्रस्ताव जिसका उल्लंघन नहीं किया जा सकता—अथवा जो अबाध्य है। क्या इन मंत्रों में वर्तमान गणतन्त्र प्रणाली द्वारा अभिहित 'मेजाँरिटी' द्वारा शासन करने के संकेत नहीं मिलते ?



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राचीन गणतन्त्र पद्धति में ये सभायें तथा समितियां ही जन-शासन के उत्तर-दायित्व का निर्वाहण करती थीं। ये सभायें प्रधान शासक का निर्वाचन करती थीं और शासक या राजा सभा में उपस्थित होकर इस प्रकार अपनी भक्ति की "प्रति श्रुति" या शपथ लिया करता था। इस प्रणाली में राजा को गणतन्त्र के वैधानिक शासक के रूप में स्वीकार किया जाता है जैसी प्रथा ब्रिटेन में प्रचलित है।

यजुर्वेद में अनेक स्थलों पर ऐसे व्याख्यान मिलते हैं, जिनसे प्राचीन काल में उत्तरापथ और दक्षिणापथ में गणतन्त्र की सत्ता का निर्देश होता है।

महाभारत का शान्ति पर्व गणतन्त्र के व्याख्यान से भरा हुआ है। (महा-भारत का रचना काल ईसा से ४०० से ५०० वर्ष पूर्व माना जाता है।) युधिष्ठिर भीष्म पितामह से पूछते हैं—

गणानां वृत्तमिच्छामि श्रोतुं मतिमतां वर।
यथा गणा प्रवर्धन्ते न भिद्यन्ते च भारत ॥
अरींश्च विजिगीषन्ते सुहृदः प्राप्नुवन्ति च।
एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं निखिलेन परन्तप ॥
यथा च ते न भिद्येरंस्तच्च मे वद पार्थिव ॥

अर्थात् हे विद्वद्वर, गुणों का सम्यक् पारिभाषिक विवेचन कर यह बताइये कि गण किस प्रकार समृद्ध हो सकते हैं और किस प्रकार फूट और विभेद से वचकर शत्रुओं से आत्मरक्षा कर सकते हैं। इस प्रश्न के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि गण उस समय पतनोन्मुख थे। द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव के अनुसार प्रत्येक पदार्थ, नीति और परम्परा में अन्तर पड़ते रहते हैं। एक दीर्घ अवधि तक सुखी और समृद्ध रहकर गण पतनोन्मु हो चले थे। प्रश्न के उत्तर में भीष्म कहते हैं—

ज्ञानवृद्धाः प्रशंसन्ति शुश्रूषन्तः परस्परम्
विनिवृत्ताभिसन्धानाः सुखमेधन्ति सर्वशः।
धर्मिष्ठान् व्यवहारांश्च स्थापयन्तो हि शास्त्रतः
यथावत् प्रतिपश्यन्तो विवर्द्धन्ते गणोत्तमाः।
अन्योन्यं नाभिभाषन्ते तत्पराभवलक्षणम्
जात्या च सदृशाः सर्वकुलेन सदृशास्तथा।
न चोद्योगेन बुद्ध्या वा रूपद्रव्येण वा पुनः
भेदाच्चैव प्रदानाच्च भिद्यन्ते ऋभिर्गणाः।
तस्मात् संघातमेवाहुर्गणानां शरणं महत् ॥

सारांश यह है कि गणों में ज्ञान में वृद्ध व्यक्ति अपने प्रस्ताव से एक-दूसरे पर नियंत्रण रखते थे। गणतन्त्र में जन्म से ही प्रत्येक व्यक्ति को समान समझा जाता था। कुल-भेद की प्रथा नहीं थी। सामान्य जन गणनायकों द्वारा गण प्रधान की आज्ञा का पालन करते थे। गणों का नाश शत्रु उनमें पारस्परिक विद्वेष जागृत कर ही कर सकते थे। वास्तव में गणों को किसी भी प्रकार का बाह्य भय नहीं होता था वरन् उनके विनाश का हेतु तो केवल आभ्यन्तर विद्वेष होता था। सचमुच हम वर्तमान गणतन्त्र का सत्यस्वरूप महाभारत के श्लोकों में देख सकते हैं।

जैन और बौद्ध ग्रंथों में भी गणतन्त्रों का उल्लेख मिलता है। प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में सधाधा गणप्रशंसयो सूत्र के द्वारा संघ और गण को एकार्थ सूचक माना है। ये गण और संघ शब्द गणतन्त्र प्रणाली के



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अभिवाचक ही हैं। गण गणना का सूचक होने के कारण "पार्लमेंट" का बोधक है, जिसमें उपस्थित सभ्यों की पूर्वनिर्धारित गणना पूर्ण होने पर ही कार्रवाई आरम्भ की जा सकती है। वर्तमान 'कोरम' की प्रथा का प्राचीन संकेत हमें यहीं मिलता है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में संघ शासन प्रणाली का सविस्तर वर्णन उपलब्ध होता है। कौटिल्य ने गणतन्त्रवाद की निन्दा ही की है, क्योंकि उनके विचार में गणतन्त्र के आधार पर प्रतिष्ठित शासन पद्धति में राजनीति की गुह्य बातों को अप्रकाशित या गुप्त रखने की क्षमता नहीं होती। संसद् के सदस्यों के सामने कही हुई सभी बातें तुरन्त जनता में फैल जाती हैं, जिससे शासन का अहित होता है।

इस प्रकार यह प्रकट होता है कि जिस प्रकार की गणतन्त्र पद्धति आज कई एक राष्ट्रों में दृष्टिगोचर होती है, इसके प्रयोग प्राचीनकाल में भी हो चुके हैं।

---

# विचार कण

—आय और व्यय—दोनों का होना परमावश्यक है; क्योंकि संचित धन तो कुबेर का भी नष्ट हो जाता है।

—जिस मित्र की जन्मभर सेवा की, जिसे सदा दान और मान से संतुष्ट किया, वह मित्र भी कटु वाक्य से तत्काल शत्रु बन जाता है।

—सन्तान का न होना अच्छा है, पर बुरी सन्तान का होना अच्छा नहीं है। पैदल चलना अच्छा है, पर टूटे हुए यान पर चलना अच्छा नहीं है। विरोध-वैर की अपेक्षा उदासीनता अच्छी है।

—सारे संसार को ढांपने के प्रयास की अपेक्षा अपने पैरों में जूता पहन लेना अच्छा है।

—खोटे मंत्रियों से राज्य, अज्ञानी चिकित्सकों से रोगी, दुःशील शासकों से प्रजा, बुरी संतानों से कुल और कुबुद्धि से आत्मा बिलकुल नष्ट हो जाती है।

—हाथी, अश्व, बालक, नृप, शुक और स्त्री; इनमें शिक्षकों के अनुसार ही गुण उत्पन्न होते हैं।

—शुक्राचार्यरचित 'शुक्र नीति से



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—के. एस. मिश्र

हिन्दू घट रहे हैं

# भारत में सन्तानोत्पत्ति

हमारे गृह मंत्रालय ने कुछ मास पूर्व एक पुस्तक प्रकाशित की है अपने वाइटल स्टेटिस्टिक्स डिवीजन द्वारा—जिसका नाम "पेपर नम्बर टू आफ १९७७" रक्खा गया है। इसमें १९७१ के अनुसार समस्त देश की विवाहित स्त्रियों की संख्या लिखी गई है, जो है १२,००,६४,९०० या लगभग १२ करोड़ (जब कि हमारी समस्त जनसंख्या ६० करोड़ के निकट थी)। इनमें १३ वर्ष से आयु में कम लड़कियां तथा ४८ वर्ष से ऊपर की वृद्धाएं भी सम्मिलित हैं। इस प्रकार १५ से ४९ वर्ष आयु वाली स्त्रियों की संख्या केवल १० करोड़ है, जो कि सन्तानोत्पत्ति की स्थिति में थीं।

हमारी आबादी में हिन्दू ८२.७ प्रतिशत तथा मुस्लिम ११.२१ प्रतिशत १९७१ में थे। इस हिसाब से १० करोड़ स्त्रियों में हिन्दू विवाहित स्त्रियों की संख्या (जो सन्तानोत्पत्ति में योगदान करती थीं) ८.२७ करोड़ हुई तथा मुसलमान स्त्रियां १.१२ करोड़ हुईं।

१९७६ में प्रकाशित पुस्तक "फर्टिलिटी डिफरेन्शलस इन इन्डिया" में लिखा है कि विवाहित स्त्रियों की समस्त जनन क्षमता (टोटल मैरिटल फर्टिलिटी रेट) ६.६ है। इसका अर्थ है अपने समस्त जीवन काल में वह (हिन्दू स्त्री) ६.६ बच्चों को जन्म देने की क्षमता रखती है। ध्यान देने योग्य है कि ये बच्चे उस स्त्री के १५ से लेकर ४९ वर्ष तक की आयु में अर्थात् ३३ वर्ष की अवधि में हो सकते हैं। उसी भांति मुस्लिम स्त्री की समस्त जनन क्षमता ७.४ लिखी गई है।

इस तरह कुल हिन्दू स्त्रियों के ३५ वर्ष की अवधि में जनित बच्चों की संख्या होगी ८.२७ × ६.६ करोड़, जिसकी प्रतिवर्ष की दर होगी ८.२७ × ६.६/३५ या १.६५ करोड़। उसी प्रकार मुसलमान बच्चों के प्रति वर्ष पैदा होने की दर १.१२ × ७.०४/३५ अर्थात् २४ लाख होगी। विशेष ध्यान देने की बात है कि प्रत्येक मुसलमान स्त्री हिन्दू स्त्री की अपेक्षा अधिक सन्तान उत्पन्न करती है, जिसकी मात्रा है "मुसलमान तथा हिन्दू स्त्री की समस्त जनन क्षमताओं में अन्तर" अर्थात् ७.४—.६ या ०.८। इसीलिए ये १.१२ करोड़ मुसलमान स्त्रियां अपनी ३५ वर्ष की जनन अवधि में १.१२ × ०.८ बच्चे या १.१२ × ०.८/३५ करोड़ बच्चे प्रति वर्ष



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधिक पैदा करेंगी, जो हुआ २.५६ लाख। २५ प्रतिशत बच्चों तथा स्त्रियों की मृत्यु हो जाने के कारण कम कर देने पर प्रतिवर्ष हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों में अधिक अनुपात में बच्चों की प्रति वर्ष रफ्तार २.५६ + ३/४ या १.९२ लाख हो जायेगी, जिसे करीब करीब दो लाख प्रतिवर्ष माना जा सकता है।

इस निष्कर्ष का अर्थ भयावह है। प्रतिवर्ष दोनों सम्प्रदायों के बच्चे होते हैं—और उनकी अपनी-अपनी जनसंख्यायें बढ़ती रहती हैं। परन्तु यदि ये समान रूप से बढ़ते अर्थात् इनकी "समस्त जनन क्षमता" बराबर होती तो भारत की समस्त जन-संख्या में हिन्दुओं तथा मुसलमानों की निस्बत या अनुपात अपरिवर्तित रहता (अर्थात् ८२.७ और ११.२१)। परन्तु अनुपात से अधिक मुसलमान बच्चे पैदा होते रहे हैं-२ लाख प्रतिवर्ष। इसलिए मुसलमानों की प्रतिशत संख्या ११.२१ से बढ़ जायेगी और हिन्दुओं की ८२.७ प्रतिशत से गिर जायेगी। यह क्रम सैकड़ों वर्षों से चलता रहा है और पिछले सौ वर्षों में इसकी गति भी निर्धारित की जा चुकी है।

और भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भीषण रूप से नसबन्दी का शिकार हिन्दू मुसलमानों की अपेक्षा बहुत अधिक हो गये हैं। नसबन्दी से "समस्त जनन क्षमता" हिन्दुओं की बहुत अधिक गिरी है मुसलमानों की अपेक्षा (जिन्होंने कम नसबन्दी कराई है)। इसलिए अब ७.४—६.६ या ०.८ का टोटल फर्टिलिटी रेट का अन्तर दो गुने से भी अधिक हो गया है। इसके फलस्वरूप "अनुपात" में मुसल-मान बच्चे केवल दो लाख प्रतिवर्ष अधिक न होकर कहीं ज्यादा बढ़ जायेंगे और आगे के परिणाम साफ नजर आते हैं।

अन्त में यह बतलाना आवश्यक है कि शुद्धि संगठन की महत्ता आज और भी बढ़ गई है। वह मनोबल को बढ़ाने का केवल एक ही मार्ग है—लेकिन जहां तक समस्या के समाधान का प्रश्न है, शुद्धियों की संख्या बहुत ही सीमित है। दो लाख प्रतिवर्ष तो कल्पना से भी परे है।

---

# दंगे क्या मानी ?

आजादी के बाद देश में दंगे, क्या मानी ?
मातृभूमि बंटवाने वाले,
तन के उजले, मन के काले।
कपड़े पहने हुए नाचते नंगे, क्या मानी ?
प्रस्तावों से क्रांति न होगी,
वक्तव्यों से शांति न होगी।
अपनी गलती रपट पड़े तो हर गंगे, क्या मानी ?
पद-दलितों को कण्ठ लगायें,
अपना-अपना धर्म निभाएं।
नाम आदमी, काम तुम्हारे बेढंगे, क्या मानी ?
आजादी के बाद देश में दंगे क्या मानी ?

—बलवीर सिंह 'रंग'



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१७ नवम्बर को जिनका बलिदान दिवस है

# लाला लाजपतराय : एक शब्दचित्र

—ब्रह्मदत्त स्नातक

यों तो लाला लाजपतराय के सार्वजनिक जीवन में आने से पूर्व ही देश में सेवा करने की पम्परा पड़ चुकी थी। महाराष्ट्र की विद्यानगरी पुणे में स्वर्गीय गोपालकृष्ण गोखले ने तब तक सर्वेण्ट्स आफ 'इण्डिया सोसायटी की नींव डालकर अनेक प्रतिभाशाली युवकों को सेवा मार्ग पर डाल दिया था—संस्था के जन्मदाता के स्वयं मॉडरेट श्रेणी के होने के कारण उक्त संस्था के आजीवन सदस्य शिक्षण, साहित्य और सम्पादन जैसे क्षेत्रों में जुटकर उच्चकोटि का सराहनीय कार्य करते रहे। परन्तु जहां तक हमें ज्ञात है, स्वर्गीय श्री देवधर और ठक्कर बापा को छोड़कर अन्य कोई सदस्य जनता के बीच सीधे सम्पर्क में आकर नहीं बैठा और वह संस्था प्रधानतः आभिजात वर्ग और समाज के उच्च वर्ग को ही प्रभावित और आकृष्ट करने में समर्थ हुई।

शिक्षा और धर्म प्रचार के क्षेत्रों में उत्तर भारत में डी० ए०-वी० कालेज कमेटी के आजीवन सदस्यों में स्व० महात्मा हंसराज, भाई परमानन्द, लाला साईदास, प्रिंसिपल दीवानचन्द आदि के अतिरिक्त दयानन्द सेवा सदन के स्व० आचार्य रामदेव, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, प्रो० सत्यव्रत आदि इन सार्वजनिक कामों में सदैव जुटे रहे। लाला जी ने भी अपना सार्वजनिक जीवन डी० ए०-वी० कालेज के आजीवन सदस्य के रूप में ही शुरू किया था। अवश्य ही शिक्षण और धर्म प्रचार के द्वारा इन लोगों का सम्पर्क समाज के एक विशिष्ट वर्ग के साथ रचनात्मक रूप में हो चुका था और आधुनिक पंजाब के निर्माण में इन संस्थाओं का गौरवपूर्ण स्थान है, परन्तु राजनीतिक स्तर पर राष्ट्र के निर्माण की कल्पना—और वह भी एक विशेष आदर्श और विचार-स्वातन्त्र्य के साथ—इसकी सर्वप्रथम और इतना ही नहीं, एकमेव कल्पना का उदय लाला लाजपतराय द्वारा ही हुआ था। यह उनकी एक विशिष्टता थी, जिसे उन्होंने "सर्वेण्ट्स आफ पीपल सोसायटी" (लोक सेवक मंडल) बनाकर पूरा किया।

## विचार स्वातन्त्र्य के समर्थक

अनेक संस्थाओं के जन्मदाता और कार्यकर्त्ता रहते हुए भी उनकी कार्यशैली और विचारप्रणाली सदैव स्वतन्त्र और परिस्थिति के अनुरूप ही रही। एक कुशल रणनीतिज्ञ की भांति प्रत्येक कार्य के सम्पादन में अपनी मौलिकता और दूरदर्शिता का परिचय उन्होंने यावज्जीवन दिया। लकीर की राह चलना उन्हें बिलकुल पसन्द नहीं था। स्वयं उनके अपने जीवन का निर्माण लकीर से हटने पर ही हुआ था। अपनी दूरगामी कल्पना के द्वारा जाति और राष्ट्र के सम्मुख उन्होंने सदैव नये कार्यक्रम और



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नयी विचारधारा को रखा। विचार स्वातन्त्र्य की यह अनूठी देन उन्होंने उस युग में आर्यसमाज से प्राप्त की थी, जिसको वे श्रद्धावश अपनी माता कहा करते थे। अपनी इस स्वतन्त्र विचारधारा के उत्कर्ष में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अपनी प्रिय राजनीतिक संस्था कांग्रेस का अनेक अवसरों पर उन्होंने खुलकर विरोध किया और सार्वजनिक रूप में अपने मतभेदों पर चर्चा की। इस प्रकार अपनी प्रतिष्ठा और मान की चाह को त्यागकर उन्होंने अपने युग में देश की सेवा की, परन्तु अपनी विचार स्वातंत्र्य की भावना को नहीं त्यागा। उनकी दृष्टि में राष्ट्र का स्थान किसी भी दल वा वर्ग से ऊपर था। अपनी इसी लगन के कारण उनके अपने जीवन में और उसके बाद भी उनकी सेवा के अनुरूप राष्ट्र उनका सम्मान नहीं कर सका। यहां तक कि बाद में वे आर्यसमाज से भी अलग हो गये या कर दिये गये थे।

## जन भाषाओं के उन्नायक

जिन दिनों सार्वजनिक क्षेत्र में अंग्रेजी में बोलने और लिखने की परम्परा थी, उन दिनों स्वर्गीय लाला लाजपतराय प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने धड़ल्ले के साथ अपने भाषण और लेख देशी भाषाओं में दिए। लाला जी की लोकप्रियता का एक प्रमुख कारण यह भी था। आज का शासन देशी भाषाओं को सर्वोपरि सम्मान देकर उनको श्रद्धांजलि दे सकता है। डा० पट्टाभि सीतारमय्या ने कांग्रेस के इतिहास में स्पष्ट लिखा था—"जन भाषा के माध्यम से जनसाधारण तक पहुंचने का सर्वप्रथम महत्त्वपूर्ण और सफल प्रयोग लाला लाजपतराय ने ही किया था।"

जिन दिनों सर सैयद अहमद ने मुसलमानों में कांग्रेस के विरुद्ध प्रचार करना शुरू किया, तब लाला लाजपतराय ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने अपनी लेखमालाएं और पुस्तिकाएं उर्दू में लिखकर सर सैयद की धज्जियां उड़ा दीं। लाला जी के इस प्रभावशाली और निर्भीक काम को देखकर कांग्रेस के प्रयाग अधिवेशन (१८८८ ई०) में युवावस्था होते हुए भी उनके स्वागत के लिए स्टेशन पर आने वालों में महामना पं० मदनमोहन मालवीय और प० अयोध्यानाथ जैसे व्यक्ति थे। वे प्रायः अपने भाषण जनभाषा में ही दिया करते थे।

कम ही लोग यह बात जानते होंगे कि जब वे पूरे अठारह वर्ष के भी नहीं थे, तभी सन् १८८२ में उन्होंने अपने सार्वजनिक भाषणों में हिन्दी का पक्ष लेकर सार्वजनिक जीवन में पदार्पण किया था। यों वे उर्दू और पंजाबी के उत्तम लेखक-वक्ता थे और विद्यार्थी काल में अरबी-फारसी के बड़े प्रेमी थे। लायलपुर के किसानों में जिस प्रकार के जोशीले भाषण उन्होंने पंजाबी मे दिये थे, उनके कारण ही उन्हें मांडले (बर्मा) में निर्वासित किया गया था।

## पत्रकारिता के भीष्मपितामह

भारत पर लांछन लगाने वाली मिस मेयो की पुस्तक 'मदर इण्डिया' के उत्तर में लाला जी ने "अनहैपी इण्डिया" पुस्तक लिखी। विदेशों में जाकर वहां के पत्रों में भारत के पक्ष में जोरदार लेख लिखे। प्रथम महायुद्ध के दौरान जब उन्हें अमेरिका ही रुक जाना पड़ा था और अंग्रेजी शासन ने उनके भारत में आने पर पाबन्दी लगा दी थी, उन्होंने पत्रकारिता को अपनाकर अपना जीवन निर्वाह किया था। वहां के पत्रों में इस प्रकार के दर्जनों लेख लिखकर उन्होंने भारत के पक्ष को प्रभावशाली ढंग से विदेशियों के सामने रखा। काश, उन लेखों का संग्रह किसी प्रकार प्रकाशित किया


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
जा सकता। लंदन में रहते हुए भी बराबर वे अपने लेखों और भाषणों से ब्रिटेन के लोकमत को बदलने का प्रयास करते रहे।

कुल मिलाकर वे भारत से ३ बार विदेशों में गये और भारत के लोकमत को लेखों व वक्तृताओं के जरिये विश्व के सम्मुख रखा। उनकी सफलता और यथार्थ विवेचना का रहस्य इसी में निहित था कि वे स्वदेश में रहकर जनभाषा के माध्यम से लोकमत को शिक्षित करते थे और विदेशों में जाकर विश्व के लोकमत को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से लेखों—भाषणों द्वारा भारत के पक्ष में करने में लगे रहे। वे राष्ट्रीय घटनाओं को अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि में सोचने वाले प्रथम जननेता थे, जिनका काम देश के लोकमानस और विश्व के जनमत दोनों की नब्ज पर हाथ रखकर राष्ट्र की गतिविधियों का संचालन करना था। गांधीजी ने उनके निधन पर ठीक ही लिखा था कि 'भारतीय आकाश में जब तक सूर्य चमकता रहेगा, तब तक लाला जी जैसे व्यक्ति अमिट रहेंगे।'

भारतीय पत्रकारिता के जन्मदाता लाला जी ने अपना पहला साप्ताहिक "पंजाबी" नाम से अब से लगभग ८५ वर्ष पहले निकाला था। इस पत्र ने सर्वप्रथम राष्ट्रीय आन्दोलन को आगे बढ़ाया। बाद में अमेरिका से वापस आने पर सन् १९२१ में इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने उर्दू में "वन्देमातरम्" और साप्ताहिक 'पीपुल' (अंग्रेजी) नामक पत्र निकाले और निर्भीकतापूर्वक राष्ट्र के सामने अपने विचार रखे। उनकी प्रेरणा पर ही "ट्रिब्यून" पत्र शुरू किया गया था।

## विचित्रताओं के पुंज

एक निम्न मध्यवर्ग में जन्म लेकर भी लाला जी ने कीर्ति, धन और त्याग का जो स्तर पाया, वह उनके चरित्र के विशिष्ट वैचित्र्य का सूचक है। राजनीति में वे गरम दल के नेताओं में से थे। परन्तु लाल-बाल-पाल के तिगड्डे में अगुवा होते हुए भी १९२१ में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में दोनों पक्षों की ओर से उन्हें सांझा उम्मीदवार स्वीकार करके सभापति बनाया गया। इसके बाद उन्होंने मालवीय जी की नेशनलिस्ट पार्टी से मिलकर राष्ट्रीय आन्दोलन को आगे बढ़ाया। अनेक अवसरों पर गहरे मतभेद हुए, परन्तु उनके लिए राष्ट्र ही सर्वोपरि था। मतभेद होते हुए भी उन्होंने कांग्रेस के आह्वान पर सन् १९२८ में साइमन कमीशन के लाहौर पहुंचने पर विरोध-प्रदर्शन का नेतृत्व किया और इसी कारण वीरगति को प्राप्त हुए। उनके अन्तिम शब्द थ—'मेरे शरीर पर किया गया हरेक प्रहार ब्रिटिश साम्राज्यवाद के कफन की कील बन कर रहेगा।' वह भविष्यवाणी अब एक आपूर्त सत्य है।

पश्चिम के सन्त रोमां रोलां ने उनकी विचित्रताओं के बारे में यथार्थ ही कहा था—"लाला लाजपतराय में एक प्रबुद्ध व्यक्ति और उच्चकोटि के राजनीतिज्ञ क लिए आवश्यक—व्यक्ति और राष्ट्रों को परखने वाली मर्मभेदिनी अन्तर्दृष्टि, सुतीक्ष्ण और अचूक नजर, साहसपूर्ण तथा साथ ही न्यायपरक निश्चय पर पहुंचना, कार्य के सम्पादन में छोटी से छोटी बातों की ठीक-ठीक नाप-तौल करना—सभी गुण विद्यमान थे। मैंने यह अक्सर देखा है कि मेरी दृष्टि में लाला जी हमारे बड़े से बड़े यूरोपियन राजनीतिज्ञ के समकक्ष थे (और अब तो उस पाये का कोई भी व्यक्ति यूरोप में नहीं है)।

"परन्तु यूरोप की इस विशेषता के अलावा, लाला जी ने वीरतापूर्ण विश्वास, असीम परोपकारिता और सर्वस्व त्याग के पुरातन ऋषियों और प्राचीन भारत के आदर्शों को पूरा करने में अपना योगदान दिया है।'


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# ब्रह्मप्राप्ति का साधन योग

—प्रो० विश्वावसु शर्मा

प्राचीन काल से ही भारत में धर्म और अध्यात्म का बहुत जोर रहा है। जहाँ दूसरे देशों में प्राचीन समय में अन्य विषयक विचारधाराओं का जोर था, वहां भारत के मनीषियों ने धर्म एवं अध्यात्म प्रधान दर्शन को अपनाया। लेकिन इसका तात्पर्य यह भी नहीं है कि भारत के मनीषियों ने अन्य विषयों पर विचार ही प्रकट नहीं किये। अन्य विषयों पर भी भारतीय विद्वानों ने पर्याप्त चिन्तन किया और उस पर पर्याप्त प्रकाश डाला। परन्तु सर्वसामान्य रूप से धर्म एव अध्यात्म ही उनके चिन्तन का प्रमुख विषय रहा। अन्य विषय भी उनसे अछूते नहीं रहे।

योग विद्या भारत की अपनी मौलिक और प्राचीन विद्या रही है। दुःख की बात है कि इस प्राचीन विद्या का लोप होता जा रहा है। किसी समय भारत में इसका घर-घर प्रचार था। व्यक्ति प्रतिदिन इसका अभ्यास करते थे। उसी भारत के लोग इसे आश्चर्य, कौतूहल, भय एवं अज्ञानता से देखते हैं।

योग एक प्रायोगिक विद्या है। जब तक मनुष्य स्वयं इसका अभ्यास नहीं करता, वह इसको जान नहीं सकता। जहां दूसरे शास्त्र पढ़कर समझे जा सकते हैं वहां इस विद्या को समझने के लिये, जानने के लिये, इसको स्वयं के जीवन में उतारना अर्थात् इसका प्रतिदिन अभ्यास करना अत्यन्त आवश्यक है।

योग का हमारे मनीषियों ने बहुत अधिक महत्त्व बतलाया है। योगिराज श्री कृष्ण अर्जुन को कहते हैं—

तपस्विभ्योऽधिको योगी, ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी, तस्माद्योगी भवार्जुन ॥
(गीता ६-४६)

अर्थात् तपस्वियों, ज्ञानियों एवं निष्काम कर्मियों, सभी से अधिक या श्रेष्ठ योगी है, अतः हे अर्जुन तू योगी बन।

महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी योग का महत्त्व बतलाते हुए स्वीकार किया है कि—"योग साधना ही मानव जीवन का एकमात्र उद्देश्य है, तथा योग साधना के लिये ही हमें मानव जीवन मिला है। इसका कारण यह है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की सफलता में योग आपकी सहायता करेगा अतः योग को जानना, समझना आवश्यक है।"

**योग का अर्थ**—योग शब्द 'युज' धातु से बना है। युज का अर्थ है "युज्यतेऽसौ योगः" अर्थात् जो (परमात्मा से) युक्त करे, मिलावे उसे योग कहते हैं। महर्षि व्यास जी ने कहा है योगः समाधिः।

अर्थात् योग को उन्होंने समाधि बतलाया है।

भगवान् श्री कृष्ण भी कहते हैं।

योगः कर्मसु कौशलम्'



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात् कार्यकुशलता को उन्होंने योग कहा है और परमकुशलता का काय परमात्मा की प्राप्ति ही है।

योगियों के सिरमौर महर्षि पतञ्जलि ने योग की परिभाषा करते हुए लिखा है—

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः (योग पाद १ सूत्र २) अर्थात् चित्त की वृत्तियों को रोकना या निरोध करना ही योग है।

**चित्त की वृत्तियां**—अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि चित्त की वृत्तियां कौन-कौन सी हैं। इसका उत्तर योग दर्शन ने इस प्रकार दिया है—

"प्रमाण विपर्ययविकल्प निद्रा स्मृतयः" (यो. पा. १ सूत्र-६) अर्थात् प्रथम वृत्ति प्रमाण है, दूसरी विपर्ययवृत्ति, तीसरी विकल्प, चौथी निद्रा और पांचवी है स्मृति वृत्ति।

**प्रथम प्रमाण वृत्ति**—प्रमाण वृत्ति तीन प्रकार की होती है (यो. पा. १ सूत्र ७ कहता है—

"तत्र प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि"

अर्थात् प्रमाण वृत्ति तीन प्रकार की है—उनमें प्रथम प्रत्यक्ष वृत्ति अर्थात् इन्द्रियों द्वारा जो ज्ञान होता है उसे प्रत्यक्ष वृत्ति कहते हैं। द्वितीय—

**अनुमान वृत्ति**—अर्थात् जहां अनुमान द्वारा ज्ञान होता है उसे अनुमान वृत्ति कहते हैं। तीसरी—

**आगम वृत्ति**—अर्थात् जहां शब्द प्रमाण हो उसे आगम वृत्ति कहते हैं। मुख्यतः शब्द प्रमाण वेद को माना जाता है।

(२) **विपर्यय वृत्ति**—दूसरी वृत्ति है—विपर्यय वृत्ति। यो. पा. १ सूत्र ८ कहता है विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्।

अर्थात् विपर्यय वृत्ति जिसके द्वारा मिथ्या ज्ञान होता है।

(३) **विकल्प वृत्ति**—तीसरी वृत्ति है विकल्प वृत्ति। इसके लिये यो. पा. १ सू. ९ कहता है—

"शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः"

महर्षि दयानन्द जी इसका अर्थ करते हुए कहते हैं—"जिसका शब्द तो हो पर उसकी वस्तु किसी को नहीं मिलती हो जैसे वन्ध्या का पुत्र, सींग वाले मनुष्य। यह सब वास्तविकता नहीं है। इसलिये यह विकल्प वृत्ति है।

(४) **निद्रा वृत्ति**—चौथी वृत्ति है—निद्रा वृत्ति।

"अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिर्निद्रा"

(यो. पा. १ सूत्र १०)

अर्थात् अभाव के ज्ञान का आश्रय लेने वाली वृत्ति निद्रा है। अनावश्यक निद्रा भी एक वृत्ति है। अतः इस पर भी संयम करना चाहिये।

(५) **स्मृति वृत्ति**—पांचवीं वृत्ति है स्मृति। यो. पा. १ सूत्र ११ कहता है

"अनुभूतविषयाऽसम्प्रमोषः स्मृतिः।"

अर्थात् जो अनुभव में आये विषय नष्ट न हों अर्थात् उनका भूल न जाना स्मृति' कहलाता है। जो पहले देख लिया है वह बार-बार ध्यान में आवे उसे भूले नहीं। चित्त की इस वृति को रोकना भी आवश्यक है अन्यथा ध्यान में यह वृत्ति बाधा उपस्थित करती है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब चित्त की समस्त वृत्तियां दूर हो जावेंगी तब परमात्मा में एकाग्रता उत्पन्न हो जायेगी। लेकिन इन वृत्तियों को दूर करना आसान नहीं है। योग शास्त्र इन वृत्तियों को दूर करने के साथ ही परमात्मा की प्राप्ति के साधन भी बतलाता है। ये उपाय योग के अंग कहलाते हैं।

**योग के अंग**—योग शास्त्र योग के आठ अंग बतलाता है। इन आठ अंगों का साधक को निरन्तर अभ्यास करते रहना चाहिये। ये अंग यो. पा. २ सूत्र २९ में इस प्रकार बतलाये हैं—

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावंगानि।

अर्थात् यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि ये योग के आठ अंग हैं।

इनमें से प्रथम पांच यम, नियम, आसन, प्राणायाम तथा प्रत्याहार ये योग के बहिर् अर्थात् बाहरी अंग माने गये हैं। क्योंकि ये योग में आने वाली बाधाओं को दूर करते हैं और अन्तिम तीन अर्थात् धारणा, ध्यान, समाधि ये योग के आन्तरिक अंग कहलाते हैं क्योंकि ये योग में साक्षात् सहायक हैं।

**यम**—यह योग का प्रथम अंग है। यम के अन्तर्गत पांच भेद होते हैं—

(१) अहिंसा (२) सत्य (३) अस्तेय (४) ब्रह्मचर्य (५) अपरिग्रह। योग शास्त्र कहता है—

तत्राहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः। (यो. पा. २ सूत्र ३०)

अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह—ये योग के पांच अंग होते हैं।

(१) **अहिंसा**—अहिंसा से तात्पर्य केवल जीव हिंसा न करने से ही नहीं है अपितु अहिंसा का अर्थ है कि मन, वचन और कर्म से किसी की हानि नहीं करना।

(२) **सत्य**—इसी प्रकार सत्य का भी अर्थ यही है कि मन, वचन, कर्म से सत्याचरण करना।

(३) **अस्तेय**—अस्तेय का अर्थ है कि चोरी नहीं करना अर्थात् मन, वचन एवं कर्म से किसी प्रकार चोरी का कार्य नहीं करना।

(४) **ब्रह्मचर्य**—अर्थात् अपनी इन्द्रियों पर संयम रखना, पवित्र रखना, जितेन्द्रिय रहना, वीर्यरक्षा, धर्मपालन तथा ऋतुगामी रहना ये--सब ब्रह्मचर्य के अन्तर्गत हैं।

(५) **अपरिग्रह**—अर्थात् सब प्रकार के संग्रह से दूर रहना। योग साधन सामग्री रूप विषय आदि सभी प्रकार के संग्रह से दूर रहना अर्थात् किसी भी वस्तु को आवश्यकता से अधिक नहीं रखना। आवश्यकता से अधिक रखने से लोभ वृत्ति बढ़ती है और वह योग में बाधक हो जाती है।

**नियम**—यम का सम्बन्ध दूसरे के व्यवहार से है जब कि नियम का सम्बन्ध स्वयं साधक के साथ होता है। मनुष्य को स्वयं के कर्मफल से दुःख न हो इसलिये योग साधकों को इन नियमों का पालन करना आवश्यक है। ये नियम कौन कौन से हैं? इसका उत्तर हमें देता है—यो. पा. २ सूत्र ३२।

शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।

अर्थात् शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान—ये पांच नियम हैं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
शौच—इनमें प्रथम है शौच। शौच का तात्पर्य है शुद्धता एवं स्वच्छता। यह शुद्धता या शौच भी दो प्रकार से होती है। प्रथम—

बाह्य शौच—जिसके अन्तर्गत शारीरिक, आहार, व्यवहार, स्थान एवं वस्त्र आदि की पवित्रता का ध्यान रखना। दूसरा शौच है—

आन्तरिक शौच—जिसके अन्तर्गत सत्य भाषण करना, विद्या अभ्यास, विद्वानों का सत्संग करना आदि हैं जिसके द्वारा अन्तःकरण के दोषों को दूर किया जाता है तथा उसे पवित्र किया जाता है।

**सन्तोष** दूसरा नियम है सन्तोष—अर्थात् अपने पुरुषार्थ से आवश्यकतानुसार फल प्राप्ति के पश्चात् उससे अधिक की इच्छा नहीं रखना सन्तोष कहलाता है। परन्तु आलस्य और अकर्मण्यता को सन्तोष नहीं मानना चाहिये।

**तप**—तृतीय नियम तप है। तप से तात्पर्य नियमित एवं संयमित जीवन यापन करना तथा योगाभ्यास करना है। दूसरे शब्दों में यम नियम आदि योग के अंगों का अभ्यास ही तप है।

(२) **स्वाध्याय**—अर्थात् वेदादि शास्त्रों का निरन्तर अभ्यास ओ३म् का जप आदि ही स्वाध्याय कहलाता है। अन्य विषयों का पठन पाठन स्वाध्याय नहीं है। स्वाध्याय का दूसरा तात्पर्य जीवन व्यवहार का निरीक्षण, आत्मचिन्तन आदि भी है।

(३) **ईश्वर प्रणिधान**—अर्थात् अपनी समस्त क्रियाओं को पूर्णरूप से ईश्वर को समर्पित कर देना। जब साधक ईश्वर में पूर्ण आस्था रखते हुए अपने सभी कर्मों एवं फल आदि को ईश्वर को ही समर्पित कर देता है तो यह ईश्वर प्रणिधान कहलाता है।

**आसन**—योग का तृतीय अंग है आसन। आसन किस प्रकार का होना चाहिये। उसके बारे में योग पा. २ सूत्र ४६ में कहा है—

तत्र स्थिरसुखमासनम्

अर्थात् जिस प्रकार से शरीर एवं आत्मा को सुख मिले उस प्रकार बैठने को आसन कहते हैं।

आसन स्थिर एवं दृढ़ होना चाहिये। बार-बार बदलते नहीं रहना चाहिये। जब आसन स्थिति दृढ़ होती है तो साधना अच्छी तरह होती है तथा बाधा रहित होती है। सर्दी गर्मी का प्रभाव भी आसन सिद्धि होने पर नहीं होता है।

साधारणतः पद्मासन, सुखासन, सिद्धासन आदि आसनों का प्रयोग किया जाना चाहिये। ये आसन ध्यान, उपासनादि के लिये श्रेष्ठ है।

**प्राणायाम**—योग का चतुर्थ अंग है प्राणायाम। यह योग का प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण अंग है। इसलिये साधारण जनता इसी को योग समझ लेती है। लेकिन प्राणायाम योग नहीं है।

प्राणायाम का अर्थ है प्राण का आयाम अर्थात् रोकना। रोकने की यही विशेष क्रिया ही प्राण का व्यायाम हैं। जब हम प्राण को अपनी विविध इच्छानुसार चलाते हैं तो वह प्राणों का व्यायाम ही है। यही प्राणायाम है। महर्षि पतञ्जलि ने कहा है—

"तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः यो. पा. २ सूत्र ४९


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात् श्वास और प्रश्वास दोनों की गति को विच्छेदन करने का नाम प्राणायाम है। जिस वायु को हम अन्दर लेते हैं उसको श्वास कहते हैं और जिस वायु को बाहर छोड़ते हैं उसको प्रश्वास कहते हैं।

**प्राणायाम के प्रकार**—प्राणायाम चार प्रकार के होते हैं। वे इस प्रकार हैं—

**प्रथम प्राणायाम**—रेचक अर्थात् अन्दर की वायु को एकदम शीघ्रता से निकालकर बाहर ही रोक देना। यह प्रथम प्राणायाम है।

**द्वितीय प्राणायाम**—पूरक (श्वास अन्दर लेना) करके श्वास को अन्दर ही रोक देना। यही द्वितीय प्राणायाम है।

**तृतीय प्राणायाम**—जहां का तहां श्वास को रोक देना स्थिर कर देना इसमें न रेचक (बाहर प्रश्वास निकालना) किया जाता है न ही पूरक (श्वास अन्दर लेना)। यह तृतीय प्राणायाम है।

**चतुर्थ प्राणायाम**—जब श्वास अन्दर आने लगे तब उसे बलपूर्वक बाहर ढकेलना और जब अन्दर का प्रश्वास बाहर निकलने लगे तो उसे बलपूर्वक भीतर ढकेलने का प्रयत्न करना। यह चतुर्थ प्राणायाम है।

इस चतुर्थ प्राणायाम का महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बहुत लाभ बतलाया है। उन्होंने लिखा है "इससे बुद्धि तीव्र होती है और थोड़े समय में ही समस्त शास्त्रों को समझने योग्य हो जाती है"।

लेकिन प्रथम तीन प्राणायामों के अभ्यास के बाद ही इसका अभ्यास करना चाहिये क्योंकि प्रथम तीन प्राणायामों के अभ्यास के पश्चात् इसका अभ्यास सुगम हो जाता है।

**प्रत्याहार**—जब साधक में इतनी सामर्थ्य हो जाती है कि वह अपनी इन्द्रियों के विषय से मुक्त हो जावे अर्थात् जब उसका नियन्त्रण एवं अधिकार अपनी स्वयं की इन्द्रियों पर हो जाता है तब प्रत्याहार की सिद्धि होती है। इन्द्रियों को विषय लोलुपता से दूर करना एक कठिन कार्य है। लेकिन जब साधक इस पर वजय प्राप्त कर लेता है तो यह समझना चाहिये कि साधक समाधि के रास्ते पर तेजी से अग्रसर होता जा रहा है।

**धारणा**—चित्त को किसी स्थान विशेष में ठहराने को धारणा कहते हैं। यो. पा. ३ सूत्र १ में कहा है—

देशबन्धश्चित्तस्य धारणा

अर्थात् चित्तको किसी स्थान विशेष पर ठहराने को धारणा कहते हैं। धारणा से मन पर अधिकार दृढ़ हो जाता है। इसकी सिद्धि से यह समझना चाहिए कि साधक समाधि के द्वार पर पहुंच गया है।

ध्यान—यह योग का सप्तम अंग है। योग पाद ३ सूत्र २ में कहा है—

तत्रैकतानता ध्यानम्।

अर्थात् निरन्तर एक ही विचार की स्थिति का बना रहना ध्यान है। दूसरे शब्दों में ध्येय ज्ञान के अतिरिक्त अन्य पदार्थों के ज्ञान के अभाव हो जाने की दशा को ध्यान कहते हैं। जब धारणा इतनी परिपक्व हो जावे कि ध्येय ज्ञान के अतिरिक्त किसी और का ध्यान न रहे तब ध्यान की सिद्धि समझनी चाहिये।

(शेष पृष्ठ ५२ पर)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—हरप्रकाश बन्धु

योग लेखमाला—५

# योग का आठवां अंग : समाधि

हिमालय का योगी नामक जीवनी में स्वामी योगेश्वरानन्द जी ने तत्त्व ज्ञान प्राप्ति की चर्चा इस प्रकार की है—"मैंने विज्ञान प्राप्ति के लिए बहुत साधना की किन्तु अभी तक मुझे सफलता नहीं मिली।" गुरुदेव ने कहा, "पूर्व जन्म के योग-भ्रष्ट हो और इस जन्म में भी बाल्यकाल से यत्नशील हो। परमानन्द जी अवधूत ने कृपा करके आपको योग मार्ग पर चला दिया था किन्तु आप फिर बीच में इस पथ से भटक गये।" व्यासदेव जी ने निवेदन किया, 'क्या आप इन अवधूत जी को जानते हैं ? आपको यह कैसे पता चल गया कि मैं कश्मीर में उनके पास साधना करता रहा हूं ?" गुरुदेव किंचित् मुस्कराये किन्तु कहा कुछ नहीं। ब्रह्मचारी जी ने विनीत भाव से पूछा, "महाराज जी, आपके आहार पर मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। इसमें न अन्न है, न घी-दूध न शाक। ईश कृपा से इनके अभाव में भी आप स्वस्थ और दीर्घायु हैं। इस पर गुरुदेव ने बहुत ही अच्छा उत्तर दिया, "धनिक बहुत गरिष्ठ भोजन करते हैं, फिर भी वे रोगी बने रहते हैं और अल्पायु होते हैं। वनचर न अन्न खाते हैं, न घी; और न दूध पीते हैं, न फल खाते हैं। तो भी वे कितने स्वस्थ और दीर्घायु होते हैं।" योगी की दीर्घायु और स्वास्थ्य के कारण हैं---अल्पाहार, अल्प व्यवहार, अल्प निद्रा, अल्प भाषण, अल्प परिश्रम, अल्प योग, अल्प चिंता तथा अल्प कर्म।" व्यास देव जी ने जिज्ञासा की "आप इतने एकान्त स्थान में क्यों निवास करते हैं ?" गुरुदेव ने कहा— "एकान्त स्थान में भोक्तव्य पदार्थों और विषयों के साथ सम्पर्क नहीं होता।" व्यासदेव जी ने कहा—'महाराज' इनकी स्मृति तो हो सकती है ?' गुरुदेव ने समझाया कि मुमुक्षु योगी इन स्मृतिजन्य संस्कारों को असम्प्रज्ञात समाधि द्वारा निरोध करता जाता है। निर्जन वन में रहने से भोक्तव्य पदार्थों का प्रायः अभाव रहता है। विशेष रूप से पदार्थ उपलब्ध नहीं होते। पास न रहने से या सामने न आने से भोगने की इच्छा ही नहीं होती; इसलिए इन्द्रियां, मन तथा बुद्धि सदा शान्त रहती हैं, विषयों का सम्बन्ध न होने से या कम होने से मन और बुद्धि के सब बाह्य व्यापार शान्त हो जाते हैं और अन्तर्मुखी प्रवृत्ति बनी रहती है। वैराग्य के दृढ़ीकरण का भी अच्छा अवसर मिलता है। जीवन काल में ही सब विषय अधिकारपूर्वक छूट जाते हैं। ज्ञान तथा वैराग्यपूर्ण ही सब त्याग होना चाहिए। व्यासदेव जी ने पुनः प्रश्न किया, "फिर तब तो यह कन्दमूल भी उपार्जन नहीं करना चाहिए।"



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरुदेव जी ने कहा—"यदि ऐसा न किया जायेगा तो यह आत्मघात की कोटि में गिना जायेगा। यह तो सामान्य योग है। इसके बिना जीवन धारण करना ही कठिन है। यदि इतना भी न करता तो आपको लाभ कैसे होता ?" ब्रह्मचारी जी ने कहा—"महाराज जी ! इस प्रकार तो आप लाखों को लाभ पहुंचा सकते हैं ?" गुरुदेव ने उत्तर दिया, "यह साधनचतुष्टयसम्पन्न अधिकारियों के मिलने पर निर्भर है। व्यासदेव जी ने प्रार्थना की कि महाराज आप मुझे आत्म विज्ञान के विषय में भूमिका रूप में कुछ बताने की कृपा करें। गुरुदेव ने आदेश दिया, "कथन मात्र से ज्ञान नहीं होगा, केवल इतना ही जान सकोगे कि आपको क्या ज्ञान करवाया जायेगा। इसके पश्चात् पूज्य गुरुदेव जी ने सप्रंज्ञात समाधि द्वारा क्या-क्या साक्षात्कार करवाया जायेगा, यह बताते हुए कहा—

सर्वप्रथम हम आपको अपने मनोबल द्वारा ध्यान और समाधि में प्रवेश करवाकर स्थूल शरीर के अन्दर प्रवेश करवायेंगे। सम्पूर्ण शरीर की नस-नाड़ियों और सप्त धातुओं इत्यादि का प्रत्यक्ष ज्ञान करवायेंगे। तब आपको स्थूल शरीर का भली प्रकार साक्षात्कार हो जायेगा। आपके दिव्य चक्षु खोलकर अन्तर्मुखी वृत्ति द्वारा आपको स्थूल शरीर के अन्दर के सब पदार्थों के दर्शन करवाये जायेंगे। तभी वैराग्य और ज्ञान की प्राप्ति होगी। यह ही मोक्ष का हेतु बन सकेगा। इसके पश्चात् आपको दस चक्रों, प्राणोत्थान तथा कुण्डलिनी उत्थान का साक्षात्कार करवाया जायेगा। आप इन सबके विज्ञान को देखकर आश्चर्यचकित हो जायेंगे। इसके अनन्तर दस प्रकार के प्राण का विज्ञान, इनकी अपने-अपने प्रदेश में भिन्न-भिन्न क्रियायें, भिन्न-भिन्न रंग रूप और व्यापार का आपको प्रत्यक्ष हो सकेगा। स्थूल शरीर तथा प्राण का घनिष्ठ सम्बन्ध है। जिस प्रकार स्थूल शरीर के लिए प्राण जीवन का हेतु है, इसी प्रकार के तेज की भी शरीर में प्रधानता है। तेज अग्नि भूत का कार्य है। ये दोनों संघात को प्राप्त होकर इस स्थूल शरीर की स्थिति-स्थापना के हेतु हैं। शरीर में पाकादि के सब कार्य इस तेज के द्वारा ही होते हैं। इसके अभाव में या न्यूनता हो जाने पर स्थूल शरीर निर्जीव-सा हो जाता है। उपरोक्त विज्ञान आप इस स्थूल शरीर में साक्षात् रूप से देख सकेंगे।

इसके पश्चात् आपको सूक्ष्म शरीर में प्रवेश करवाया जायगा। इसके सब व्यापार रंग रूपादि का—दिव्य ज्योतियों का साक्षात्कार करेंगे। इस सूक्ष्म शरीर में आपको तत्त्व दिखाई न देंगे। ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ, पंचतन्मात्रा (सूक्ष्मभूत), मन, बुद्धि, स्थूल भूत का कार्य और कार्य-कारण का साक्षात्कार भी आपको करवाया जायगा। इसके अनन्तर आप हृदय प्रदेश में प्रवेश करोगे। वहां आपको सूक्ष्म प्राण, अहंकार, चित्त, जीवात्मा, ईश्वर और प्रकृति का व्यष्टि रूप में प्रत्यक्ष ज्ञान होगा। तदनन्तर आपको तीनों शरीरों से ऊपर उठकर समष्टि पदार्थों का साक्षात्कार आकाश मण्डल में होगा और अन्त में ३२ पदार्थों के कारण रूप प्रकृति में ब्रह्म के व्याप्य और व्यापक भाव की प्रत्यक्षानुभूति होगी और आप पूर्णरूप से कृतकृत्य हो जाओगे।

लगभग तीन घन्टे तक उपरोक्त ज्ञान के विषय में गुरुदेव ने उपदेश दिया और सावधान होकर बैठने की आज्ञा दी और कहा, अब आपको संप्रज्ञात समाधि द्वारा उपरोक्त पदार्थों का साक्षात्कार करवाया जायेगा।

गुरुदेव ने सुखपूर्वक जिस आसन में बैठने का अभ्यास हो, उससे बैठने की आज्ञा दी। ब्रह्मचारी जी गुरुदेव के समीप ही सुखासन से शान्त मुद्रा में बैठ गए



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

और उनकी ओर त्राटक करके देखने लगे। थोड़ी देर के पश्चात् गुरुदेव के अपने दाएं हाथ के अंगूठे और अंगुलियों से व्यासदेव जी के मस्तिष्क को स्पर्श करने पर इनके नेत्र स्वतः बन्द हो गए। इसके पश्चात् सभी बाह्य क्रियाओं का अभाव हो गया। अपनी तथा गुरुदेव की भी सुध नहीं रही। मन, प्राण, इन्द्रियां सब शांत हो गये। मूलाधार में एक अलौकिक प्रकाश उत्पन्न हुआ, जिससे सम्पूर्ण शरीर देदीप्यमान हो गया। शरीर के भीतर का सब भाग प्रत्यक्ष हो गया। इसके पश्चात् ब्रह्म रंध्र से प्रकाश की दिव्य धाराएं प्रवाहित होने लगीं और स्थूल शरीर का विज्ञान प्राप्त हो गया। शरीरस्थ सब पदार्थों का साक्षात्कार हो गया। इसका विस्तृत विवरण उन्होंने आत्मविज्ञान और ब्रह्मविद्या में दिया है। ये सायंकाल ५ बजे से १० बजे प्रातः तक समाधिस्थ रहे। इन १७ घण्टों में समस्त विज्ञान प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् गुरुदेव ने समाधि से उठकर एकान्त सेवन और मौन व्रत करके हमको दृढ़ करने का आदेश दिया। साथ ही दस नियमों के पालने की आज्ञा दी—वे निम्नलिखित हैं—

१. आलस्य और प्रमाद को त्यागकर श्रद्धा, भक्ति और प्रेम से इस विज्ञान को दृढ़ करना और प्रकृति पुरुष के विवेक को दृढ़ भूमि करके प्रकृति और उसके कार्यों के प्रति वैराग्य उत्पन्न करना।

२. अभिमान का त्याग करना। नम्र और विनीत भाव रखना, क्रोध का दमन करना। सदैव शांत, गम्भीर, निश्चिन्त और प्रसन्न रहना।

३. युवती स्त्रियों के साथ कभी एकान्त में मत बैठो। अष्ट प्रकार के मैथुनों से सदैव बचो।

४. गुरुजनों तथा सम्मानार्ह व्यक्तियों का सदा सम्मान करो। प्रत्यक्ष या परोक्ष में कभी उनकी निन्दा न करो। महात्माओं का संग करो, ज्ञान और वैराग्य को सदा दृढ़ करने का प्रयास करो।

५. परछिद्रान्वेषण कभी मत करो। आत्मनिरीक्षण द्वारा अपने दोषों का पता लगाकर उन्हें दूर करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहो।

६. योगविद्या का उपयोग जीविकोपार्जन के लिए कभी मत करना। आपको यदि कोई योग सिद्धि प्राप्त हो जाए, उसका न तो कभी अभिमान करना और न कभी उसका प्रदर्शन करना।

७. योग विद्या गोपनीय है। इसे सदा गोप्य रखना। किसी उत्तम अधिकारी को ही प्रदान करना जिससे वह फलवती हो। सांसारिक लोगों से विशेष सम्पर्क रखने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यक कार्य के अतिरिक्त अधिक पत्रव्यवहार भी मत करना।

८. प्रतिदिन अथवा प्रतिसप्ताह अपना दोष निरीक्षण करते रहना चाहिए। कितने दोषों का निवारण हो सकता है, इसका हिसाब रखना चाहिए। इससे शीघ्र ही दोषों का क्षय होने लगता है।

९. इन्द्रियां विषयासक्त न होने पायें। यदि ज्ञान और विचार से इनका दमन न हो सके तो हठ कर बलपूर्वक इनका दमन करना चाहिए। बुद्धि के विकार: काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, राग द्वेषादि का अहर्निश दमन करते रहना, मान अपमान, निन्दा, स्तुति, हर्ष-शोक, हानि लाभादि द्वन्द्वों में साम्यभाव रखना। अपनी मनः-शान्ति को कभी भी भंग न करना।

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यमों तथा नियमों का पालन करने में सदैव कटिबद्ध रहना। ये योग की आधारशिला हैं। नित्य प्रति अष्टांग योग का अभ्यास करना। धारणा, ध्यान, समाधि द्वारा नित्यप्रति प्रकृति के कार्य-कारणात्मक पदार्थ, प्रकृति, पुरुष, विवेक और ब्रह्मज्ञान को दृढ़भूमि करना, परम वैराग्य होकर मोक्ष में स्थिर रहना—ये सब तुम्हारे ज्ञान और वैराग्य की दृढ़भूमि बना देंगे और तुम्हारी रक्षा करेंगे।

समाधि क्या है? इसका साक्षात् अनुभव योगी लोग प्राप्त करते हैं। इस घटना से उसका व्यवहारिक रूप हमारे सामने स्पष्ट होता है। जब ध्यान की स्थिति स्थिर हो जाती है, मन किसी विषय पर लम्बे समय तक स्थिर रह सकता है, तब विषय के सम्बन्ध में हम ज्यादा गहराई में जा सकते हैं, उसका सीधा अनुभव कर सकते हैं, आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। पहले, जैसे सेनापति किले को चारों ओर से घेर लेता है, किन्तु अभी तक उसके लिए किले के द्वार बन्द हैं, वह किले के अन्दर नहीं घुस सकता। अब उसमें और अन्दर जाने में दीवार एक रुकावट बनी हुई है। ध्यान की स्थिति में मन रूपी दीवार ही यथार्थ को जानने में रुकावट बनी हुई है। शेष सब विक्षेप समाप्त हो गये हैं। अब चेतन मन उसी दीवार को हटाने में लगा हुआ है। मन विषय के यथार्थ स्वरूप को जानने में स्वयं ही कैसे विक्षेप उत्पन्न कर रहा है। वह अपना अस्तित्व यथार्थ विषय के बीच में लाकर उसके स्वरूप को समझने में विक्षेप बना हुआ है। यहां अपना स्वरूप, अपनापन ही दीवार है, जो विषय तक पहुंचाने में रुकावट का काम कर रहा है।

व्यक्तिगत दृष्टिकोण विषय को समझने में कैसे रुकावट बनता है, आध्यात्मिक क्षेत्र में यह कैसे दीवार का काम करता है, उसे हम कुछ उदाहरणों से समझ सकते हैं। संगीतकार जब अपने आपको भूल जाता है, तभी वह उच्च कोटि के संगीत का सृजन करता है। कोई वैज्ञानिक आविष्कारक जब अपने आपको भूल जाता है तभी वह नई-नई खोजें करने में सफल होता है। आध्यात्मिक अवस्था में पहुंच कर ही वे विषय के यथार्थ स्वरूप को समझने में सफल होते हैं। धारणा और ध्यान की स्थिति को जब उन्होंने प्राप्त कर लिया है और अपने आपको भी भूल गये हैं, विषय में ही रम गये हैं, तब ही उन्हें यथार्थ का ठीक-ठीक बोध होता है। अपने आप को भुलाकर ही, वे उस दीवार को लांघने में सफल होते हैं। जब हम ध्यान से समाधि अवस्था में पहुंचते हैं, तब हमारी यही स्थिति होती है। मन की अपनी अवस्था उस समय कभी कोई रुकावट नहीं बनती। इस पर और गहराई से विचार करने की आवश्यकता है।

रूप और स्वरूप क्या है। हर एक वस्तु के दो रूप होते हैं—एक रूप और दूसरा स्वरूप। रूप तो उसका बाहरी आकार है। किसी चीज का बाहरी आकार ही उसकी यथार्थता का बोध नहीं करवाता। जब हम किसी चीज का ध्यान करते हैं; वास्तव में उसके बाहरी रूप को ही हम देखते हैं। उसी पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। स्वरूप वस्तु की यथार्थ स्थिति है। रूप में तो हमारा मन, उसे बाहरी आकृति मात्र दे पाता है। धीरे-धीरे जैसे ही हमारा अपनापन बीच में खत्म हो जाता है, हम उस वस्तु के स्वरूप को समझने लगते हैं। ध्यान की अवस्था तक तो हम रूप को देखते हैं। केवल बाहरी आकृति और गुणों को देखते हैं, किन्तु समाधि अवस्था में हम वस्तु के वास्तविक स्वरूप को देखते हैं। पहले को भौतिक ज्ञान और दूसरे को आध्यात्मिक ज्ञान, पहली अवस्था में ध्यान और उससे अगली अवस्था को मन की



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाधि अवस्था कहते हैं, जब मन आपको शून्य कर देता है। जब तक समाधि की अवस्था रहती है, तब तक मन का उसमें कोई योग नहीं होता है, उसका मन का योग शून्य हो जाता है। वस्तु तो उसमें रहती है, व्यक्तिगत दृष्टिकोण उसका शून्य हो जाता है। वस्तु का यथार्थ स्वरूप तो उसमें रहता है, किन्तु अपना दृष्टिकोण शून्य हो जाता है, बिलकुल नहीं रहता। वस्तु का यथार्थ स्वरूप सारे मन को प्रकाशित कर देता है। जैसे बल्ब के जलने पर अन्धकार भाग जाता है, रोशनी सारे कमरे में फैल जाती है, उसी प्रकार से वस्तु का वास्तविक स्वरूप मन में प्रकाशित होने लगता है। स्वरूप का अर्थ है मन का अपना पर्दा हट जाना। वस्तु का वास्तविक स्वरूप चित्र में साफ-साफ दिखाई पड़ना। ध्यान की अवस्था में तो मन का दृष्टिकोण स्वरूप बना रहता है, किन्तु समाधि अवस्था में वह दीवार, वह पर्दा भी हट जाता है, शून्य हो जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि मन ही शून्य अवस्था में चला जाता है। मन में वस्तु का वास्तविक प्रकाश तो बना रहता है। स्वरूप जब तक समाधि रहती है, वस्तु का यथार्थ स्वरूप मन में प्रकाशित रहता है। समाधि से हटते ही हम पहली अवस्था में आ जाते हैं किन्तु उसमें भी वस्तु का रूप और संस्कार हमारे मन में रह जाते हैं।

मन की दीवार हटते ही हम आध्यात्मिक अवस्था में विचरण करते हैं। उस समय वस्तु का पूर्ण और यथार्थ रूप प्रकाशित होता है। देखने वाला मन, वस्तु और स्वरूप सब एक हो जाते हैं। बीच के पर्दे हट जाते हैं। तीनों का भेद चित्र द्वारा नीचे स्पष्ट किया गया है—

| (क) | (क) | (क) |
|---|---|---|
| धारणा | ध्यान | |

यदि क वस्तु है तो धारणा की स्थिति में उसके चारों ओर विक्षेप बने रहते हैं। ध्यान की अवस्था में केवल मन की अपनी दीवार—अपना पर्दा ही रह जाता है। किन्तु क अवस्था में जब यह पर्दा भी हट जाता है तो वस्तु के यथार्थ स्वरूप का ही हमें बोध होता है।

समाधि भी कई प्रकार की होती है—

क. तमः प्रधान
ख. रजः प्रधान
ग. सवितर्क
घ. सविचार
ङ. सत्त्व प्रधान
च. धर्ममेघ : असम्प्रज्ञात समाधि

प्रकृति के रचे सभी पदार्थ तथा अवस्थायें त्रिगुणात्मक हैं। इनका विज्ञान भी त्रिगुणात्मक होता है। समाधियां भी त्रिगुणात्मक होती हैं। चित्त, मन, बुद्धि आत्मा जिस गुण से अभिभूत होंगे, समाधि भी उस गुण से युक्त होगी।

तमः प्रधान समाधि—इसमें तम की प्रधानता होगी। चित्त जड़वत् शून्य हो जायगा। जितने घंटे भी बैठे रहें, चित्त की जड़ अवस्था बनी रहेगी। समाधि से उठने के बाद शून्य के अतिरिक्त किसी चीज की अनुभूति नहीं होगी। तमोमयी अवस्था में होने वाली अनुभूति निद्रावस्था से कुछ मिलती-जुलती है।

रजः प्रधान समाधि—इसमें विज्ञान प्राप्ति के लिए प्रवृत्त रजोगुण की सहायता 'सत्त्व' करता है। ये दोनों मिलकर तम को इतना दबा देते हैं कि तमोगुण



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विज्ञान प्राप्ति में बाधक नहीं बन सकता । रजः प्रधान समाधियों को समझने के लिए इन्हें विभिन्न वर्गों में रखा गया है ।

क—सविकल्प—किसी स्थूल पदार्थ का पूर्वापर रूप से साक्षात्कार करने के लिए अभ्यासी जब बुद्धि को समाहित करता है तब सर्व प्रथम उस पदार्थ के स्थूल अंग, रंग, रूप, नाम आदि सम्मुख आते हैं । फिर इनके विषय में पारस्परिक कार्य-शैली के विषय में जिज्ञासा उत्पन्न होती है, पश्चात् इन सबके कार्यक्रम का साक्षात् विज्ञान होता है जैसे—अभ्यासी जब मूलाधार चक्र के साक्षात्कार की कामना से समाहित होकर बैठते हैं तब 'मन' मूलाधार में अपनी रश्मियां डालकर इस स्थान को प्रदीप्त कर देता है, तब मानो वहां पर अग्निकुण्ड का दर्शन, फिर उसकी लम्बाई-चौड़ाई आदि का ज्ञान, पश्चात् यहां पर होने वाली प्रक्रियाओं का परिज्ञान होता है । यहां पर तीन बातें स्पष्ट होती हैं – (क) वस्तु का दर्शन-अर्थ (ख) वस्तु का नाम (ग) वस्तु तथा नाम के पारस्परिक सम्बन्ध का ज्ञान ।

नाम, अर्थ और ज्ञान इन सबको देखते हुए यह भी ज्ञान रहता है कि मैं देख रहा हूं (ध्याता) वस्तु के देखने की प्रक्रिया (ध्यान) वस्तु या पदार्थ के रंग-रूप, आकार, प्रकार का ज्ञान (ध्येय) इन तीनों—ध्याता, ध्यान, ध्येय का संगठित रूप इस अवस्था में रहता है ।

पदार्थ का पूर्वापर सबसे साक्षात् विज्ञान ही पाता है, इस प्रकार स्थूल पदार्थों के स्थूल रूपों को, स्थूल रूप से दर्शाने वाली समाधि की यह संज्ञा है ।

ख—सविचार समाधि—आगे इन स्थूल पदार्थों को बनाने वाले सूक्ष्म तत्त्वों तथा स्वतंत्र तत्त्वों का साक्षात् करने के लिए बुद्धि तत्त्व को ब्रह्मरूप में समाहित किया जाता है । तब वहां के दिव्य पदार्थों को देखकर इन ध्येय पदार्थों के विषय में तर्क-वितर्क, ऊहापोह, उठता है । इस ऊहापोह रूपी रजोगुण से प्रेरित बुद्धि, मन के द्वारा उन पदार्थों के विषय में निर्णय करती है । यहां के दिव्य दृश्यों को नेत्र ही देख रहे होते हैं और 'मन' इस दर्शन व्यापार को बुद्धि के लिए समर्पित करता जाता है । तब बुद्धि ऐसे सब निर्णय देती है कि यह पदार्थ इतना लम्बा-चौड़ा, मोटा-पतला, ऊंचा-नीचा, स्थिर व गतिशील, किन तत्त्वों से किस कार्य सिद्धि के लिए बना है । ब्रह्मरन्ध्रगत हमारी सूक्ष्मेन्द्रियां, मनस्तत्त्व, बुद्धितत्व, पंचतन्मात्रिक मण्डल, इनके रंग, रूप, आकार —इनके व्यापार आदि का निश्चयात्मक क्रमिक विज्ञान, अतीन्द्रिय एवं सूक्ष्मतर विज्ञान । इनका समस्त विज्ञान जिस समाहित अवस्था के द्वारा होता है उसकी संज्ञा सविचार समाधि है ।

सत्त्वप्रधान समाधि—इसमें रजस् और तमस् इतने दब जाते हैं कि सत्त्व के प्रकाश से प्रकाशित वस्तुमात्र ही ध्येयाकार वृत्ति से "है" इस रूप में भासती है । चित्त इसमें ध्येयाकार रूप से धारा प्रवाह से बढ़ता रहता है । तर्क-वितर्क नहीं उठते प्रकृति-पुरुष विवेक की योग्यता चित्त में उत्पन्न होकर ऋतंभरा प्रज्ञा के आलोक विवेकख्याति होकर आत्मसाक्षात्कार हो जाता है ।

असम्प्रज्ञात समाधि—जब ये सब सहारे छूट जाते हैं और 'आत्मा' 'चित्त' की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती, तब परम वैराग्य रूप धर्ममेघ की स्थि में आत्म-स्वरूपस्थ रहने लगता है । इस अवस्था में स्वरूप में स्थिति के कारण चि के विषय का कोई ज्ञान नहीं होता ।

परम वैराग्य द्वारा असंप्रज्ञात समाधि में संस्कारों का निरोध होता है औ आत्मा स्वरूप में स्थित हो जाता है ।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाधि के पश्चात् जब व्यक्ति अपनी सामान्यावस्था में आता है तो आध्यात्मिक ज्ञान, बुद्धि, प्रजा और ज्योति से प्रकाशित होता है।

## एकाग्रता

मन को यदि एक समुद्र मान लें तो वृत्तियां उसमें उठने वाली लहरें हैं। मन में एकाग्रता लाने के लिए जो वृत्तियां मन में हलचल पैदा करती हैं, उन्हें संक्षेप से समझना होगा। ये पांच हैं। प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा व स्मृति। प्रमाण सच्चा ज्ञान, जो वस्तु जैसी है उसे वैसा ही समझना। विपर्यय—भ्रम या मिथ्या ज्ञान, जैसे रेल में यात्रा करते समय वृक्षों का दौड़ते हुए दिखाई देना या अंधेरे में रस्सी को सांप समझना। विकल्प—कल्पनात्मक ज्ञान, जो वस्तु न होने पर भी शाब्दिक प्रतीत होती है, जैसे आकाश कुसुम, मनुष्य के सींग, निद्रा, शून्य का ज्ञान। स्मृति—पहले कभी देखी या जानी वस्तु का स्मरण।

इस मन की हलचल को रोकने के कई उपाय हैं। साधक अपनी रुचि के अनुसार उनमें से किसी उपाय को अपना सकता है। पहला उपाय है अभ्यास और वैराग्य। अभ्यास—मन को एक वस्तु में स्थिर करने के लिए प्रयत्न करते रहना। प्रयत्न को दृढ़ और शक्तिशाली बनाने के लिए तीन बातें आवश्यक हैं—(क) लम्बे समय तक प्रयत्न करते रहना (ख) नैरन्तर्य—अभ्यास को लगातार करते रहना, बीच में विक्षेप न आने देना (ग) सत्कार—अभ्यास के प्रति आदर बुद्धि रखना, जिससे उत्साह दिन प्रति दिन बढ़ता रहे। उपेक्षा, लापरवाही तथा आलस्य न आने देना।

दूसरा उपाय है वैराग्य—इस लोक तथा परलोक के सुखों से विरक्त होकर मन का अपने आप में लीन रहना। आत्मा का साक्षात् होने पर जब साधक बाहरी विषयों से स्वतः विरक्त हो जाता है, इसके लिए प्रयत्न की आवश्यकता नहीं रहती, तो उसे परम-वैराग्य कहते हैं।

अभ्यास और वैराग्य उपाय हैं, जिनका अन्य उपायों के साथ रहना आवश्यक है। निरोध का तीसरा उपाय है ईश्वर प्रणिधान। इसका अर्थ है—ईश्वर का नाम, अर्थ भावना के साथ जपना और उसके स्वरूप का विचार करना। ईश्वर एक ऐसी सत्ता है जो अविद्या आदि हमारे दोषों, भले-बुरे कर्मों और उनके संस्कारों से युक्त है, जो सर्वज्ञ है अर्थात् उसमें ज्ञान की पराकाष्ठा है। उसका ध्यान करने से आत्मस्वरूप का ज्ञान होता है और समाधि में आने वाले विघ्न दूर हो जाते हैं। ईश्वर का जप करने के लिए प्रणव अर्थात् ओ३म् का जप करना चाहिए।

मन के निरोध का चौथा उपाय प्राणायाम है। इसके अनेक भेद हैं। इनमें तीन मुख्य अंग हैं। रेचक सांस को बाहर निकालना। पूरक—सांस को अन्दर भरना। कुम्भक—सांस को अन्दर अथवा बाहर रोकना। कुम्भक चाहे रेचक की अवस्था में किया जाय अथवा पूरक की अवस्था में इससे मन एकाग्र होता है।

मन में रूप, रस, गन्ध आदि किसी विषय का चिन्तन करने से भी एकाग्रता आती है। इसके लिए भिन्न स्थानों का निरूपण किया गया है। उदाहरण के लिए गन्ध का ध्यान नासिका के अग्रभाग पर किया जाता है और रस का ध्यान जिह्वा के अग्र भाग पर।

आज्ञा चक्र—भौंहों के मध्यभाग में ध्यान करने से एक प्रकाश दिखाई देता है। इसी को "ज्योतिमती प्रवृत्ति कहते हैं। इसी प्रकार अन्य चक्रों पर भी ध्यान



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किया जाता है और विविधि प्रकार के प्रकाश दिखाई देते हैं। ये सब मन के एकाग्र करने में सहायक हैं। शुद्ध सात्त्विक होने के कारण इन्हें विशोका कहा जाता है।

मन में वीतराग अवस्था का ध्यान करने से भी एकाग्रता आती है। इसके दो अर्थ हैं। जिस महापुरुष ने राग द्वेष को जीत लिया हो, उसके शुद्ध हृदय का चिन्तन और मनन करना। दूसरा अर्थ है अपने चित्त में वीतरागता का अभ्यास करना।

स्वप्न तथा निद्रा में होने वाले अनुभवों का ध्यान करने से भी मन एकाग्र होता है। मन को विक्षिप्त या चंचल करना राजोगुण का काम है। स्वप्न व निद्रा में भी वह तमोगुण के कारण दबा रहता है। जाग्रत अवस्था में अभ्यास से रजोगुण को दबाया जाता है। सत्त्व को प्रकट किया जाता है। इस प्रकार यहां भी स्वप्न या निद्रा के समान अनुभूतियां होने लगती हैं।

हमें जो बात अच्छी लगती है, उस पर ध्यान करने से भी मन एकाग्र होता है। अभ्यास प्रारम्भ करने के लिए यही अच्छा है कि मन जिधर जाता हो, उसी पर स्थिर करने का प्रयत्न किया जाय। धीरे धीरे नियंत्रण होने पर उसे अन्य वस्तुओं पर भी लगाया जा सकता है। जब योगी परमाणु से लेकर आकाश पर्यन्त छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी प्रत्येक वस्तु पर मन एकाग्र करने की योग्यता प्राप्त कर लेता है तो उस अवस्था को वशीकार कहते हैं।

## पांच क्लेश

आत्मा को मलिन और निर्बल बनाने वाले पांच क्लेश हैं। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश। अविद्या अर्थात् अज्ञान। अनित्य को नित्य, अपवित्र को पवित्र, दुःख को सुख और अनात्मा को आत्मा समझना। अविद्या ही संसार का मूल कारण है। इसी से अन्य क्लेशों की उत्पत्ति होती है। अस्मिता—अहंकार। राग—सुख के प्रति आसक्ति। द्वेष—दुःख के प्रति घृणा। अभिनिवेश—वे अनादि संस्कार जिनके कारण प्रत्येक मनुष्य जीने की इच्छा करता है और मरने से घबराता है। उसे अपने अस्तित्व की चिन्ता पड़ी रहती है। क्लेशों का नाश करने के दो उपाय हैं। पहला उपाय है 'प्रतिप्रसव' अर्थात् विपरीत चिन्तन। जिस वस्तु के प्रति राग हो उसमें दोषों का चिन्तन। दूसरा है ईश्वर या अन्य विषयों का ध्यान।

क्लेशों के कारण मनुष्य भले-बुरे काम करता है। उनसे संस्कारों का संचय होता है, जिन्हें वर्तमान या भावी जन्मों में भोगना होता है। यह भोग कहीं सुखद होता है और कहीं दुःखद। सुखद भोग भी नश्वर और परिणाम में दुःखदायी होता है। इसलिए ज्ञानी सभी से दूर रहना चाहता है।

## अष्टांग योग

पतंजलि ने आत्म साधना के लिए अष्टांग योग का प्रतिपादन किया है। इसमें प्रारम्भिक नैतिकता से लेकर समाधि तक सभी भूमिकायें आ जाती हैं। यम—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। ये आचार शुद्धि के मूलाधार हैं। प्रत्येक परिस्थिति में इनका पालन आवश्यक है। ये देश काल, परिस्थिति और व्यक्ति की मर्यादा से परे हैं। जो व्यक्ति अहिंसा को जीवन में उतार लेता है, उसके समीप अन्य प्राणी भी भेद-भाव भूल जाते हैं। जो सत्य को जीवन में उतार लेता है, उसे वचन-सिद्धि प्राप्त हो जाती है। उसके मुंह से निकली कोई बात निष्फल नहीं होती। अस्तेय का



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

जीवन [illegible] का उतारने पर शक्ति प्राप्त होती है। अपरिग्रह से पूर्व जन्म की स्मृति होने लगती है।

नियम—ये पांच हैं। शौच—मन, वाणी और शरीर की शुद्धि। सन्तोष--लोभ न करना। अनायास प्राप्त वस्तु से तृप्त रहना। तप—अनशन, उपवास आदि। स्वाध्याय—आत्मरमण व शास्त्र चिन्तन। ईश्वर प्रणिधान। अन्तिम तीन को क्रिया योग भी कहते हैं।

आसन—पद्मासन, सिद्धासन आदि।

प्राणायम—रेचक, पूरक और कुम्भक आदि। इससे आवरण का क्षय होता है। मन धारणा के योग्य बनता है।

प्रत्याहार—इन्द्रियों का बाहरी विषयों से हटकर अन्तर्मुखी बनाना। इस अभ्यास से इन्द्रियां वश में आ जाती हैं।

धारणा—चित्त को किसी विषय पर स्थिर करना।

ध्यान—मन को उसी विषय पर लगाये रखना।

समाधि—अपने आप को भुलाकर विषय में लीन हो जाना।

धारणा, ध्यान और समाधि का एक विषय पर अभ्यास 'संयम' कहा जाता है। इसके सिद्ध होने पर 'प्रज्ञालोक' अर्थात् बौद्धिक प्रकाश प्राप्त होता है। इसको चित्त की विविध भूमि में स्थिर किया जाता है अर्थात् स्थूल भूमिकाओं में स्थिर करते हुए उत्तरोत्तर सूक्ष्म भूमिकाओं की ओर बढ़ा जाता है। प्रथम पांच अंगों की तुलना में अन्तिम तीन अन्तरंग हैं। निर्जीव समाधि की तुलना में ये भी बहिरंग हैं।

ऊपर समाधि की विविध भूमिकाओं का वर्णन किया गया है। उनमें मुख्य बात चित्त की वृत्तियां यानी हलचल को रोकने की है। किन्तु बाह्य रूप में हलचल रुकने पर भी उसके संस्कार बने रहते हैं और निमित्त मिलते ही वृत्तियां फिर से जाग उठती हैं। पर साधक दीर्घ काल तक निरन्तर अभ्यास करता रहता है, तो संस्कार भी बदलने लगते हैं। इसी को चित्त परिणाम कहते हैं।

जब परम वैराग्य के कारण व्युत्थान के संस्कार दब जाते हैं, निरोध के संस्कार ऊपर आ जाते हैं और निरोध अवस्था चित्त का स्वभाव बन जाती है, तो उसे निरोध परिणाम कहते हैं। चित्त त्रिगुणात्मक है। जब सत्त्वगुण का उदय होता है, तो एकाग्रता आती है। जब रजोगुण तब चंचलता। तमोगुण की प्रधानता होने पर अज्ञान या मूढ़ता घेर लेती है। समाधि के अभ्यास से रजोगुण और तमोगुण दब जाते हैं और सत्त्व प्रकट होने लगता है। रजोगुण के दबने से चित्त का व्युत्थान अर्थात् भटकना बन्द हो जाता है और सुख का उदय होने से एकाग्रता चित्त का स्वभाव बन जाती है। इसी को व्युत्थान संस्कार का दबना और निरोध संस्कार का प्रकट होना कहा जाता है। मूढ़, क्षिप्त और विक्षिप्त के रूप में चित्त की पहली तीन अवस्थाओं के संस्कार दब जाते है, एकाग्रता चित्त का स्वभाव बन जाती है। वह अपने आप निरन्तर बनी रहती है। उसके लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता। इसी को निरोध परिणाम कहते हैं। इस परिणाम से चित्त का प्रवाह शांत हो जाता है।

जब चित्त का अनेक विषयों की ओर भटकने का संस्कार दब जाता है और किसी एक ही विषय में स्थिर रहने का संस्कार प्रबल हो जाता है, तो उसे समाधि



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परिणाम कहते हैं। यह परिणाम विक्षिप्त भूमि के दबने और निरन्तर एकाग्र भूमि के अभ्यास से प्राप्त होता है।

एकाग्रता परिणाम—विक्षिप्त अवस्थाओं में चित्त कभी किसी ओर जाता है, तो कभी किसी ओर। समाधि अवस्था में उसका भटकना बंद हो जाता है और एक-सा प्रवाह चलने लगता है। किन्तु वहां भी प्रवृत्तियां बदलती रहती हैं। विषय एक होने पर भी, एक वृत्ति के शान्त होने और दूसरी के उठने को एकाग्रता परिणाम कहते हैं।

योग के आठ अंगों की साधना करने पर चित्त की मलिनता दूर हो जाती है। जड़ जगत् के साथ सम्बन्ध क्षीण होता चला जाता है। जब यह सम्बन्ध सर्वथा टूट जाता है, और साधक अपने आप को प्रकृति से भिन्न मानने लगता है, तो उसे विवेकख्याति कहते हैं। इस अवस्था में पहुंचने पर विश्व की सारी वस्तुओं का ज्ञान और उन पर नियंत्रण हो जाता है। जब साधक इस अवस्था से भी विरक्त हो जाता है तो उसे कैवल्य कहते हैं। इसका अर्थ है केवल अपनी आत्मा की अनुभूति अर्थात् बाहरी अनुभूति का सर्वथा त्याग हो जाना। जब रजोगुण और तमोगुण दब जाते हैं और सत्त्व गुण निर्मल हो जाता है, तो पुरुष का शुद्ध रूप प्रकट होने लगता है। ऐसे निर्मल चित्त की उपमा दर्पण से दी जाती है। जब तक वह मलिन रहता है, प्रतिबिम्ब में भी मलिनता प्रतीत होती रहती है किन्तु दर्पण के पूरे स्वच्छ होने पर प्रतिबिम्ब में भी पूरी निर्मलता आ जाती है। सत्त्व और पुरुष में एक-सी निर्मलता आ जाती है। इसी का नाम कैवल्य है।

---

# उल्टी गालियां

गौतम बुद्ध एक बार राजगृह के वेलुवन नामक स्थान में ठहरे हुए थे। एक दिन एक ब्राह्मण आकर उन्हें गालियां बकने लगा, क्योंकि उसका कोई सम्बन्धी भिक्षु-संघ में शामिल हो गया था। उसकी गालियांऔर फटकार सुनकर बुद्ध ने शांत भाव स पूछा—"ब्राह्मण, क्या तुम्हारे यहां कभी कोई अतिथि या बन्धु-बान्धव आता है?"

"हां।" ब्राह्मण ने कहा।

"तुम उसके लिए अच्छी-अच्छी भोजन-सामग्रियां भी तैयार कराते हो?"

'हां कराता हूं।" ब्राह्मण ने उत्तर दिया।

'अतिथि अगर उन चीजों का उपयोग नहीं करता, तब वे चीजें किस मिलती हैं?"

"वे हमारी चीजें होती हैं, हमारे यहाँ ही रहती हैं।"

बुद्ध ने कहा—"भाई, मैं तुम्हारी गालियों और फटकारों का कोई उपयोग नहीं कर सकता, क्योंकि न मैं कभी गाली बकता हूं और न किसी को फटकारता हूं। फिर बताओ ये गालियां किसे मिलेगी? तुम्हीं को न? यह तो आदान-प्रदान की बात है, जो चीज तुम देते हो वह मैं लेता नहीं और न वह किसी को देता ही हूं। स्वभावत: ही तुम्हारी दी हुई गालियां तुम्हें ही मिल रही हैं।"

—सत्यकाम विद्यालंकार



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# सामवेद–संगीत सुधा

—स्व० स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

प्रियतम अतिथि-तुल्य तुम स्वामी
तुम हो प्यारे मित्र समान ।
सर्वोत्तम तुम हो नेता हो
करूं तुम्हारा गुण-गण गान ।
रथ समान उद्देश्य हमारे
तक तुम ही ले जाते हो ।
सदा जानने योग्य तुम्हीं हो
ध्रुव सुख प्राप्त कराते हो ।

मैं हूं तेरा प्यारा बच्चा, तेरे मन को खींचूंगा
तू है मुझसे बहुत बड़ा पर, तेरी महिमा सोचूंगा
मैं तेरी ही प्रभो ज्ञानमय, सदा कामना करता हूं
वाणी से तव कीर्तन करता, मन से चिन्तन करता हूं ॥

साम० ८-११६६

जो परमेश्वर सुख का प्रापक, दुःख शोक का नाशक है
जो सर्वज्ञ पूजनीय है, दुष्टों का सन्तापक है ।
दूत समान वेद के द्वारा, जो पहुंचाता सच्चा ज्ञान
अपनी वाणी से मैं करता, उस ही अमरदेव का गान ॥

साम० १२

हे सर्वोत्तम नेता तेरी, ओर रातदिन आते हैं
शुद्ध बुद्धि अरु शुद्ध कर्म की, भेंट हाथ में लाते हैं ।
ज्ञान हमें हो प्राप्त तथा आनन्द यही अभिलाषा है
तुम से ही पूरी हो सकती, नहीं अन्य से आशा है ॥

साम० १४

अग्नि जलाता जब हाथों से, यज्ञ वेदि में है यजमान
मन के साथ मिलावे मति को, श्रद्धापूर्वक एक समान ।
ज्ञानकिरण के साथ आत्म की, करे अग्नि को वह भासित
जो अज्ञान तिमिर को सारे, करे तेज से नित नाशित ॥

साम० १९

सूर्य चन्द्र गिरि सागर तरु सब, उसकी याद दिलाते हैं
जो सर्वज्ञ सभी में व्यापक, उस तक बुध ले जाते हैं ।
ये सब झण्डे बनकर हरि को, ही दिनरात दिखाते हैं
जो ज्योतिर्मय तम का नाशक, उसका स्मरण कराते हैं ॥



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
जो परमेश्वर रोगनिवारक, उसकी स्तुति तुम सदा करो।
सृष्टि-यज्ञ में सत्य-नियमयुत, सुख-दायक नित चित्त धरो।
साम० ३२

यज्ञ-यज्ञ में प्रति वाणी से, मैं करता उसका गुणगान।
सर्व-व्यापक जो अविनाशी, बलशाली प्रिय मित्र समान। साम० ३५
करता हूं मैं उसके दर्शन, जो सर्वज्ञ दयामय है
जिसको कर्म समर्पित करके, जन बन जाता निर्भय है।
धार्मिक जन को सदा बढ़ाता, जो सर्वोत्तम नायक है
स्तोत्र हमारे उसको पहुंचें, प्रभु जो न्याय विधायक है।। साम० ४७
मर्त्य मित्र हम तेरे बन कर, अमर देव का वरण करें
नित रक्षा हित शुभकर्मा का दोष रहित का स्मरण करें।
जो है कर्म फलों का दाता, भय को दूर भगाता है
भव सागर से पार लगाता, सर्व सुखों का दाता है।।
साम० ६१

स्तोत्र हमारा रथ समान यह, इसे भेजते प्रभु के पास,
पूजनीय जो सर्वव्यापक, वुद्धि भेजत उस के पास।
इस की उपासना से मति यह, तीव्र शुद्ध नित बन जावे
नहीं मित्रता में तव ईश्वर, प्रजा क्लेश को फिर पावे।।
साम० ६६

ज्योतिर्मय जो देव उसी को, उत्तम जीवित अर्पित कर।
ज्ञानी जिसको अपने सम्मुख, रखते मित्र मान हितकर।।
साम० ८६

पूजनीयतम देव तुम्हीं को, पूज्य रूप में वरते हैं
तुम देवों के देव अमर हो, तव उपासना करते हैं।
सृष्टि यज्ञ यह जो अति सुन्दर, इसके तुम शुभ कर्ता हो
सुख के दाता न्याय विधाता तुम ही जग के धर्ता हो।।
साम० १११

शुभ गुण में वासिन् जीवात्मन्, कर ले भक्तिरसामृत पान।
निर्भय, तुझको रस देते हैं, पूर्ण उदर भर कर ले पान।।
साम० १२४-६३।

सुख के वर्षक तुझे चाहते, करते तेरी स्तुति चहुं ओर।
तू भी देव चित्त की जाने, हम पर फेर सुकरुणा कोर।।
साम० १३२।

सत्य रूप ईश्वर की मैंने, है मेधा को ग्रहण किया
उसने करुणा करके मुझ को, सूर्य तुल्य है बना दिया।
यही चाहता अब मैं सारे, अन्धकार को दूर करूं
प्रखर ज्ञान की किरणों से मैं, जग को आलोकित कर दूं।।
साम० १५२, १५००

जो जगत् का नाथ अद्भुत, जीव का प्रिय है महान्।
मांगता हूं मैं सुनिर्मल, बुद्धि को कर दे प्रदान।।
सा० १८१


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं किसी की हिंसा करते, नहीं प्रलोभन देते हैं।
मन्त्रों में जो शुभ विधान है, हम उस पर चल देते हैं ॥

साम० १७६

जैसे नदियां सागर अन्दर, जाकर हो जाती हैं लीन
वैसे चन्द्र समान भक्त-जन, तुझ में रमें सलिल में मीन
तेरा ही प्रभु हो विचार इक, अन्य विचार न कोई हो
हों समाधि में मग्न उपासक, क्लेश लेश नहिं कोई हो ।।

साम० १९८-१६६० ।

जो बड़े से भी बड़ा भय दूर हरि उसको करे।
एकरस सर्वत्र है प्रभु, पाप ताप वही हरे ।।

साम० २००

पापाज्ञाननिवारक ईश्वर, तुझसे उच्च न कोई है।
नहीं सूक्ष्म है कारण तुझसे, बड़ा न जग में कोई है।
नहीं लोक में तेरे जैसा, कोई भी हो सकता है।
अनुपम तू तेरी महिमा का, कौन पार पा सकता है?

साम० २०३

जिसकी महिमा अति विशाल है, और भुजाएं चारों ओर
सदा भला ही जो करता है, रक्षा कर विपदों से घोर।
सर्वव्यापक उस जगदीश्वर, की करते हम नित्य पुकार
उन्नति साधक ज्ञानशक्ति को, देकर करता वह उपकार ।।

साम० २१७ ।

वाणी द्वारा पूजनीय तू, सदा देव हम तेरे हैं
तेरे स्तोता भक्त उपासक, हम तो सेवक तेरे हैं।
ज्ञानभक्तिरसरूप सोम का, तू करता परमेश्वर पान
हमें तृप्त करदे परमोत्तम, शान्ति सुधा का करवा पान ॥

साम० २३०

हे प्रिय सर्वशक्तिमय तू ही, जनको वन्द्य बनाता है
देव न तुझको छोड़ अन्य जो, सुखदाता कहलाता है।
हे परमेश्वर सच्चे दिल से, यही बात मैं कहता हूं
तेरी आज्ञा का पालन कर, क्लेश हर्ष से सहता हूं।

साम० २४७-१७२३

हमें ज्ञान दो तुम परमेश्वर, पिता पुत्र को ज्यों देता।
शिक्षा दो संयम की जिससे, जीव ज्योति को पा लेता ।।

साम० २५९-१४५६

त्याग कभी न करो भक्तों का, नहिं हे प्रभु जी त्याग करो
वास हमरे शुद्ध हृदय में, करो कभी न त्याग करो।
तुम हो रक्षक इन्द्र हमारे, हो तुम ही ईश्वर प्राप्तव्य।
त्याग हमारा कभी न करना, एकमात्र तुम हो ध्यातव्य ॥

साम० २६०



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और किसी की स्तुति न करो तुम, परमेश्वर गुणगान करो
जो आनन्द शान्ति का वर्षक, उसका मित्रो ध्यान करो।
अन्यों की स्तुति करके प्यारो, कभी न दुःख उठाओ तुम
मन्त्रों से सुख-वर्षक को स्मर, सुख आनन्द बढ़ाओ तुम।।
साम० २४२-१३६०

सूर्यों का भी सूर्य दयामय, तू है सचमुच देव महान्
तू अविनाशी है तेजोमय, तू है सचमुच परम महान्।
तोस्वरूप तू नित्य एकरस, जिसमें होता नहीं विकार
सत्स्तव्यों में श्रेष्ठ देव तू, तेरी महिमा का नहिं पार।।
साम० २७६-१७२

सुखदायक जो परमेश्वर है, जो सर्वोत्तम नायक है
बाह्य आन्तरिक संग्रामों में जो पवित्र संचालक है।
रक्षा के हित जो पुकार को, सुनता है शुभशक्ति निधान।
हम पुकारते पाप विनाशक, धन जेता का दिव्य-विधान।
साम० ३२९

जो है रक्षक सुख का दाता, जो भक्तों की सुने पुकार
पाप-ताप संहारक जो हरि, आर्तों का करता उद्धार।
उसे पुकारें सर्व-शक्तिमय, जो सब भक्तों को प्रिय है
भक्ति भेंट को स्वीकृत करके, करे मुदित जो यह हिय है।।
साम० ३३३

सबसे बड़ी अमर जो मस्ती, उसका आत्मन् कर तू पान
जो कि उतरती कभी नहीं है, जो कि मिलाती शान्ति निधान।
शुद्धदेव की ज्ञानशक्ति की पवित्रता की धाराएं
चारों ओर बहें तव हिय में आनन्दामृत धाराएं।
साम० ३४४-९४९।

पूजा करो करो तुम पूजा, उसकी जो सर्वज्ञ महान्
शुद्ध बुद्धि जिनको प्यारी है, करो उसी का गुणगणगान।
पुत्र तुम्हारे भी पूजें नित, उसको जो अनुपम भगवान्
जो सब विपदाओं को हरता, है अभेद्य दृढ़ दुर्ग समान।।
साम० ३६२

सर्वव्यापक तेरे जग में हैं अनन्त शुभ धन के दान।
हे सर्वज्ञ बढ़ाओ निशिदिन, सुधन हमारा शम दम ज्ञान।।
साम० ३६६

आवो मिल जावो सब भाई, मिल कर उसका गान करो
जो है एक सभी में व्यापक, उस महान् का ध्यान करो।।
वह प्रकाशपति पूर्ण सनातन, नये जगत् में बसता है
उसी एक की ओर मार्ग यह, नाना विधि ले चलता है।।
साम० ३७२

ये हम तेरे प्रभु तेरे हैं, देव तुम्हारे चेरे हैं।
तेरा पावन नाम सदा ले, हम कर्मों को घेरे हैं।।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुझे छोड़ कर के इस जग में, कोई न सुनत हमारी है।
तेरे ही आगे अब हमने, अपनी झोली पसारी है।।
पृथिवी करती सब चीजों को, जैसे यह आकर्षित है।
वैसे करो प्रार्थना स्वीकृत, लगा तुम्हारे में चित है।। साम० ३७३।

सुख मिश्रित मेरी सब मतियां, जाती हैं ईश्वर की ओर।
उसे चाहतीं मिलकर जातीं पकड़ें वे उस की ही छोर।
प्रिय सतियां अपने पतियों का, जैसे करतीं आलिङ्गन
निज रक्षा हित परमनाथ का, वे करतीं नित आलिङ्गन॥

साम० २७५।

उसका गान करो चहुं दिश तुम, जिस की करते सभी पुकार
सब जिसकी स्तुति करते हैं बुध, जिस की स्तुति का कहीं न पार।
उस महान् परमेश्वर का तुम, करो वाणियों से कीर्तन
मन वाणी से शुद्ध कर्म से, करो सदा प्रभु का पूजन॥

साम० ३८२।

आओ मित्रो मिलकर उसका, करें स्तवन जो स्तुति के योग्य।
एक सभी में जो व्यापक है, कोई न जिसके तुलना योग्य।

साम० ३८७।

करो गान उस परमेश्वर का जो सुख पूरक परम महान्।
है प्रशस्य सर्वज्ञ दयामय, वही वेद का देता ज्ञान।।

साम० ३८८-३०२५

शान्ति मूल तू सुख का सागर देवों का तू पिता महान्।
सर्व व्यापक तू कर दे प्रभु, हम में पवित्रता आधान॥

साम०४२६-१२४१।

सभी ओर से देने वाले, हम को तू पूरा भर दे।
सर्वशक्तिमय तुझ से मांगें, हमें ज्ञान बल से भर दे।।

साम० ४३७।

सब ऋतुओं में पूजनीय यह, परमेश्वर अत्यन्त महान्
वेदों में यह अति विश्रुत है, इसका मैं करता गुणगान।।

साम० ४३८-२७६८।

सब का धारण करने वाली, गौवें रहतीं सदा पवित्र।
ज्ञानी जन भी पवित्र रहते, पाप रहित, हो कर सुचरित्र।।

सा० ४४२

निकटतम तू देव रक्षक, अग्रणी तू है महान्
नाथ मङ्गलमय दया कर, हम करें तेरा ही ध्यान।।

साम० ४४८-११०७

परमेश्वर है सबका राजा, सारे जग में सदा विराजा।।

साम० ४५६।

शान्तिमूल हे सोम दयामय, स्वादिष्ठा धारा का पान।
हमें करा आनन्दित कर दे, जो उपजावे मोद महान्॥
इस धारा से करदे प्रमुदित, जो करती आत्मिक कल्याण।
ज्ञानयुक्त इस भक्ति सुधा को, पी हो परम शान्ति का भान॥

साम० ४६८-६८९



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# वापस यहीं पै आना !

वापस यहीं पै आना ।
दुनियां में मेरी आके मत भूल मुझको जाना ।
ऐ दो दिनों के राही,
देता हूं बुद्धि शाही,
घोड़े विवेक के हैं, चाबुक नियम लगाना ॥१॥
तुम प्रेम बेल बोना,
पर मुग्ध हो न खोना ।
दुख छांह को हटाकर शुचि वायु को बनाना ॥२॥
कर्तव्य धूप देके,
बिरवा बलिष्ठ से के ।
उपकार फल से लदकर मरतों को तुम जिलाना ॥३॥
धूमिल न नाम करना
दुष्टों का ह्रास करना ।
सन्मार्ग मध्य चलकर, वापस यहीं पै आना ॥४॥

—'इन्दु'

---

(पृष्ठ ३६ का शेष)

जब साधक की धारणा में एक ही विषय में निरन्तरता बनी रहती है, तब वही धारणा ध्यान में परिवर्तित हो जाती है। अब यहां समाधि का मार्ग खुल जाता है। साधक किसी भी क्षण इसमें प्रवेश कर सकता है।

**समाधि**—यह योग का अन्तिम एवं आठवां अंग है। योग० पाद ३ सूत्र ३ में कहा है—

तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः ।

अर्थात् ध्यान में जब ध्येय मात्र रह जावे और अन्य सब स्वरूप शून्यरूप हो जावे उसे समाधि कहते हैं।

ध्यान और समाधि में इतना भेद है कि ध्यान में ध्याता, ध्यान और ध्येय तीनों का ज्ञान साधक को रहता है। परन्तु समाधि में साधक को केवल ध्येय का ही ज्ञान रहता है। अर्थात् जब साधक को केवल ध्येय का ही ध्यान रह जाता है तब उसे समाधि की सिद्धि प्राप्त होती है। इस प्रकार योग के सातों अंगों की सिद्धि का परिणाम या फल उसका आठवां अंग अर्थात् समाधि है। ●


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# अंडमान में शुद्धि कार्य

मैंने सन् १९११ ईसवी में अंडमान में कदम रखा था। कुछ ही महीनों में मैंने जान लिया कि अंडमान में आने के बाद कुछ हिन्दू बन्दी मुसलमान बने हैं। उनके नाम भी बदल दिये गये हैं। जब मैं प्रयत्नपूर्वक इस बात की खोज करने लगा, तब पता चला कि किसी हिन्दू ने इस धर्मान्तरण का महत्त्व ही न समझा था। इतना ही नहीं, मुझे लगा कि इस प्रकार की घटनाएं इतनी आम हो चुकी हैं कि सब लोग इस विचार के थे कि इस सम्बन्ध में जांच करने की क्या आवश्यकता है! वास्तविकता यह थी कि अंडमान में अंग्रेज अधिकारियों के जो जी में आता था, करते थे। फलस्वरूप अधिक सम्भावना इस बात की थी कि वहां उनके हाथों में जो हिन्दू असहाय और अनाथ बने पड़े थे, उन्हें ईसाई बना लिया जाता। सन् १८५७ तक न केवल जेलों में अपितु सैनिक छावनियों में भी ईसाई मजहब के प्रचार के लिए अनेक सुविधाएं दी जाती थीं। लेकिन सन् सत्तावन के क्रांति युद्ध की प्रबल ठोकर खाने के बाद सरकारी अधिकारी धर्म प्रचार के फेर में न पड़ते थे। फिर भी जिन जातियों पर 'अपराधी' जाति की मुहर लगी हुई है, उन पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मिशनरियों का अधिकार अवश्य रहा करता है। मैं अपने अनुभव के आधार पर यह बात निश्चित रूप से कह सकता हूं कि जेलों का इस्तेमाल हिंदुओं के धर्मान्तरण के लिए नहीं किया जाता। कहीं-कहीं प्रार्थना के लिए ईसाई प्रचारक आता है, किन्तु उसके प्रार्थनास्थल पर जाने के लिए किसी पर सख्ती नहीं की जाती। अपवाद छोड़कर अंडमान में हिन्दुओं को ईसाई बनाने के लिए गुप्त या प्रकट, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, किसी प्रकार का सरकारी प्रयत्न नहीं होता था। सरकारी अधिकारियों के व्यक्तिगत प्रभाव का भी दुरुपयोग नहीं किया जाता था। मैं चौदह वर्ष तक अंडमान में रहा। इस दौरान ऐसी एक भी घटना मेरे देखने में न आई, जिसमें रौब, लोभ-लालच अथवा जबरदस्ती उपदेश सुनाकर किसी हिन्दू को ईसाई बनाया गया हो।

इसके विपरीत उसी बन्दी द्वीप में अवश और हताश स्थिति में पड़े मुसलमान बन्दी अपने हिन्दू सह-बन्दियों का धर्मान्तरण कराने के लिए उन पर अत्याचार करते थे—बल प्रयोग करते थे। लेकिन अपने धर्म के प्रचार के लिए स्वयं कष्ट उठा कर भी दूसरों को कष्ट न देने वाली ईसाई राजसत्ता विधर्मी मुसलमान बन्दियों द्वारा किया जाने वाला धर्मान्तरण चलने देती—उसकी उपेक्षा करती। मुसलमान बन्दियों ने जेलों में जितने हिन्दू बन्दियों का धर्मान्तरण किया है, उतना तो दिल्ली अथवा बम्बई की जामा मस्जिदों में भी न किया गया होगा। जितने अधिक हिन्दू जेलों में रहकर मुसलमान बने हैं, उतने तो हसन निजामी के संगठन द्वारा भी न बनाये गये होंगे।

## मुस्लिम बच्चों को क्या सिखाया जाता है?

प्रत्येक मुसलमान को बचपन से ही यह शिक्षा दी जाती है कि यदि तू एकाध हिंदू को मुसलमान बनाले, तो इस लोक में तेरी मान्यता बढ़ जायेगी। परलोक में तेरे जघन्य अपराध भी कट जायेंगे और स्वर्ग में उपभोग करने के लिए तुझे अप्सरायें आदि मिलेंगी। इस प्रकार की शिक्षा का परिणाम यह होता है कि ये मुसलमान



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बच्चे आगे चलकर जेलों में हिन्दुओं का धर्म भ्रष्ट करते हैं। मुस्लिम गिरोह हिन्दुओं के घर की गई चोरी, हिन्दुओं के गांव पर डाले गये डाके या किसी हिन्दू व्यापारी को लूटमार के कार्य को क्षम्य मानते हैं। इतना ही नहीं, ऐसे मुसलमान को अच्छा माना जाता है। मैंने ऐसे मौलवी देखे हैं, जो ऐसे मुस्लिम अपराधियों को निरपराध मानते हैं। उन्हें शिक्षा दी जाती है कि अपने पापों के प्रायश्चित के लिए तू काफिरों को मुसलमान बना। हिन्दू बच्चों को भी चोर मुस्लिम बच्चों के गिरोह में सम्मिलित किया जाता है। मेरा निवेदन यह है कि यदि ये हिन्दू बच्चे चोरी छोड़ दें, तो बहुत ही अच्छी बात है, लेकिन यदि न छोड़ सकें, तो कम से कम हिन्दू तो बने रहें। मेरे विचार में यदि चोरी न छोड़ना पाप है, तो हिन्दू न बने रहना तो उससे भी बड़ा पाप है। इसलिए कम से कम यह पाप तो न करो। एक-एक व्यक्ति के परधर्म में चले जाने से सौ वर्ष बाद हिन्दुओं के सौ कट्टर शत्रु पैदा हुए। औरंजेब किसी राजपूत रमणी के परित्यक्त बेटे से पैदा हुआ था। मालाबार के मोपले रक्त, मांस और वीर्य की दृष्टि से आधे से अधिक हिन्दू हैं। लेकिन वे नहीं जानते कि उनकी नानी हिन्दू थी।

मुसलमान बने हिन्दुओं को दुबारा हिन्दू बनावे के लिए हमने अंडमान की जेल में शुद्धि अभियान चलाया। इसके लिए पूर्वोदाहरण मौजूद थे। आर्यसमाजी विधर्मियों को शुद्ध करते ही हैं। जब स्वामी विवेकानन्द अमरीका से लौटे, तब आते समय उन्होंने मिस नोबल को भगिनी निवेदिता नाम देकर उसे हिन्दू धर्म की दीक्षा दी।

## जनगणना में अपना धर्म क्या लिखवायें ?

सन् १६२१ के प्रारम्भ में जनगणना का कार्य प्रारम्भ हुआ। हमारे साथ कुछ आर्यसमाजी बन्धु भी थे। हिन्दू शब्द के सम्बन्ध में उन लोगों के मन में कुछ भ्रामक धारणा थी। उसी धारणा के वशीभूत होकर उन्होंने प्रचार किया कि जनगणना में अपने आप को हिन्दू के स्थान पर आर्य लिखवाया जाये। आर्यसमाजियों के इस विचार को सुनकर अंडमान के सिख राजवन्दियों ने भी अपने आपको हिन्दू के स्थान पर सिख लिखवाने का आग्रह किया।

हिन्दू शब्द के वास्तविक अर्थ के सम्बन्ध में हिन्दुओं के अनेक सम्प्रदायों में तिरस्कर की जो भावना थी, वह भाषाशास्त्र के अज्ञान का ही परिणाम थी। यह बात मैंने अपनी पुस्तक 'हिन्दुत्व' में अनेक प्रमाण देकर सिद्ध की है। इस पुस्तक में लिखी बातों से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने और विशेषतः स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द इत्यादि आर्यसमाजी नेताओं ने हिन्दू शब्द का महत्त्व समझा, जिससे हिन्दू संघटन के व्यापक आन्दोलन में संकीर्णता समाप्त हुई और सनातनी व आर्यसमाजी दोनों हिन्दुत्व के अभिमान से प्रेरित होकर शाब्दिक भेद को भूल-से गये। मेरी परिभाषा यह है कि जिसकी पितृभूमि और पुण्यभूमि (धर्मभूमि) हिन्दुस्थान हो, वह हिन्दू है।

यहां मैं एक संस्कृत श्लोक उद्धृत करना चाहता हूं—

आसिन्धुसिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः।।

मेरी बातें सुनकर हिन्दू शब्द के सम्बन्ध में मेरे आर्यसमाजी मित्रों का तिस्कार बहुत कुछ कम हुआ। फलस्वरूप न केवल उन्होंने, अपितु सिखों ने भी जनगणना में अपने आपको हिन्दू लिखवाना मान लिया।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

हिन्दू रक्षा समिति का पहला खुला अधिवेशन

# हिन्दू सचेत न हुए तो उनका अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा

## हिन्दू रक्षा सम्मेलन में जगद्गुरु शंकराचार्य की चेतावनी

(हमारे विशेष प्रतिनिधि से)

दिल्ली । बद्रिकाश्रम ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने हिन्दुओं को चेतावनी दी है कि यदि वे विदेशियों के कुचक्रों और धर्म पर हो रहे आघातों के प्रति सचेत न हुए, तो उनका अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा ।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शंकराचार्यजी तीन अक्तूबर सायंकाल आर्यसमाज दीवान हाल में आयोजित हिन्दू रक्षा सम्मेलन में सभापति पद से भाषण दे रहे थे। सम्मेलन का आयोजन अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की ओर से किया गया था।

शंकराचार्य जी ने कहा कि जिस प्रकार उत्तर-पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्रों में विदेशी ईसाई मिशनरियों की धर्म-परिवर्तन आदि की अनेक राष्ट्रविरोधी गतिविधियां जारी हैं और उत्तर भारत में अरब देशों व पाकिस्तान के इशारे पर साम्प्रदायिक दंगे भड़काये गये हैं, उसे देखते हुए प्रत्येक हिन्दू का कर्त्तव्य है कि वह अपने देश और धर्म की रक्षा के लिए जागरूक हो—संगठित हो। यदि इतने गम्भीर खतरों के बावजूद हिन्दू समाज असंगठित रहा, तो देश की अखंडता और सुरक्षा के लिए खतरा पैदा हो सकता है।

उन्होंने कहा कि सनातनधर्मी, आर्यसमाजी, जैन, बौद्ध, सिख आदि सभी हिन्दू समाज के अविभाज्य अंग हैं। हमें आपसी मतभेदों को भुलाकर देश और धर्म की रक्षा के लिए आगे आना होगा।

अपने भाषण को जारी रखते हुए स्वामीजी ने कहा कि भारत सदा अजेय रहा है। जब-जब उस पर संकट आया है, उस की रक्षा के लिए साधु-सन्त आगे आये हैं। अब भी धर्म की रक्षा के लिए हमसे जो कुछ हो सकेगा, करेंगे।

स्वामीजी ने देशवासियों को उन धर्मगुरुओं से सावधान किया, जो अपने आपको भगवान् बताते हैं, हिन्दू समाज को संकीर्ण और संकुचित सम्प्रदायों में बांटते हैं और गोहत्या का समर्थन करने में भी शर्म महसूस नहीं करते। शंकराचार्यजी ने कहा कि इन लोगों को विदेशों से धन मिलता है और ये हिन्दू धर्म के लिए सबसे बड़ा खतरा हैं।

उन्होंने कहा कि कुरान में कहीं गोहत्या का विधान नहीं, लेकिन मुसलमान अपने आपको विजेता समझते हैं, इसलिए हिन्दुओं को नीचा दिखाने के लिए गोहत्या करते हैं, देव मूर्तियों का अपमान करते हैं और हिन्दू बहू-बेटियों का अपहरण करते हैं।

उन्होंने इस बात पर दुःख प्रकट किया कि अल्पसंख्यकों के संरक्षण के नाम पर मुरादाबाद आदि में दंगा-पीड़ित मुसलमानों की तो सहायता की गई, लेकिन कानून और व्यवस्था के लिए प्राण तक दे देने वाले पुलिसजनों के परिवारों की बात तक न पूछी गई। अन्त में उन्होंने कहा कि इन परिस्थितियों में देश की अखंडता, स्वाधीनता और एकता के लिए सारे देश को कमर कस लेनी होगी। यह निश्चित है कि विजय हमारी ही होगी—सत्य और धर्म की होगी।

इससे पूर्व ज्यों ही शंकराचार्यजी कार से उतरे, आर्यसमाज का विशाल हाल धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो, हर हर महादेव के नारों से गूंज उठा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा कि हमारी सब मुसीबतों का मूल कारण यह है कि हमारे नेता वोटों की खातिर मुसलमानों और ईसाइयों को प्रसन्न करने में लगे रहते हैं। उन्होंने तत्कालीन प्रधान-मन्त्री चौधरी चरणसिंह के हवाले से बताया कि मुसलमानों ने सैकड़ों हिन्दू बहू-बेटियों का अपहरण किया।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रारम्भ में सम्मेलन के स्वाताध्यक्ष श्री देवकीनन्दन शर्मा एडवोकेट ने स्वागत भाषण पढ़ा। (यह भाषण इसी अंक में अलग से दिया जा रहा है।)

शंकराचार्य जी का पुष्पमालाओं से स्वागत किया गया।

## महात्मा वेदभिक्षुः का उद्बोधन

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के संस्थापक-प्रधान महात्मा वेदभिक्षुः ने कहा कि हमारा एकमात्र लक्ष्य विदेशी ईसाई पादरियों के षड्यन्त्रों और मुस्लिम साम्राज्यवाद का मुकाबला करना है। उन्होंने बताया कि त्रिपुरा में सोलह हजार हिन्दू मौत के घाट उतार दिये गये। "हम इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं होने देंगे।"

वह दृश्य सचमुच दर्शनीय था, जब महात्मा वेदभिक्षुके साथ विशाल जन-समूह ने भगवान् राम की जय, भगवान् कृष्ण की जय, भगवान् शंकराचार्य की जय और भगवान् दयानन्द की जय के गगनभेदी नारे लगाये।

हिन्दू रक्षा समिति के संरक्षक और हिन्दू महासभा के वयोवृद्ध नेता प्रो० रामसिंह ने मुरादाबाद की घटनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना के लिए महात्मा वेदभिक्षुः की प्रशंसा की और कहा कि हम सब को मिलकर हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के लिए प्रयत्नशील होना है।

'आर्यजगत्' के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार ने कहा कि कहां तो मुसलमान कहा करते थे कि 'मेरे मौला बुला ले मदीने मुझे, आर्य न जीने देंगे मुझे' और कहां आज हालत यह हो गई है कि मुसलमानों ने हमारा जीना दूभर कर रखा है। उन्होंने कहा कि आज फिर हमारे देश को आदि शंकराचार्य जैसे हिन्दू धर्म के रक्षकों की आवश्यकता है।

हिन्दू रक्षा दल के अध्यक्ष श्री इन्द्रसेन शर्मा ने भारत सरकार से मांग की कि परिवार नियोजन मुसलमानों पर भी लागू किया जाये। यदि हिन्दू परिवार नियोजन करते रहे और मुसलमान इससे मुक्त रहे, तो वह दिन दूर नहीं, जब हिन्दू अल्प-संख्या में हो जायेंगे और इस देश में एक नया पाकिस्तान जन्म लेगा। ●

---


## ★ धार्मिक हिन्दी परीक्षायें ★

भारतवर्षीय आर्य विद्यापरिषद् की ओर से चार धर्म परीक्षायें विद्या-विनोद, विद्यारत्न, विद्याविशारद एवं विद्यावाचस्पति प्रतिवर्ष जनवरी मास में समस्त भारत में होती हैं। उनमें उत्तीर्ण छात्रों को सुन्दर सुनहरा उपाधिपत्र दिया जाता है। परीक्षा पाठविधि और आवेदनपत्र निम्न पते से मुफ्त मंगा लें।

परीक्षा मंत्री

डा० सूर्यदेव शर्मा, एम. ए. शास्त्री, चांद बावड़ी, अजमेर




Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू गुलाम बनकर नहीं रहेंगे

## हिन्दू रक्षा सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष

## श्री देवकीनन्दन शर्मा एडवोकेट का भाषण

कोटि-कोटि हिन्दू जनता की श्रद्धा और आस्था के केन्द्र, आदिशंकर की सत्य सनातन वैदिक धर्म रक्षा की परम्परा के प्रतीक, बद्रिकाश्रम ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती महाराज तथा उपस्थित बन्धुओ !

भारत की राजधानी दिल्ली में अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के तत्वावधान में आयोजित इस हिन्दू रक्षा सम्मेलन में आज आप सब का स्वागत करते हुए मैं अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूं।

साधु-संन्यासी व धर्माचार्य समाज की आत्मा और नैतिकता के सजग प्रहरी ही नहीं, वे समाज की मान्यताओं के निर्माता, नियन्ता व मार्गदर्शक भी होते हैं। वे अपने अन्तस् की अमृत धारा को अपने अन्तस् में ही समेटे रहें और समाज की जिस बगिया के वे माली हैं, वह सूख कर वीरान हो जाये, इसे हिन्दू दर्शन ने कभी भी स्वीकार नहीं किया। भारतीय इतिहास के उस अन्ध युग में जब धर्म की हानि हो रही थी, आदि शंकर ने सत्य सनातन वैदिक धर्म की रक्षा के लिए जो कुछ किया, आज उसी के परिणामस्वरूप हिन्दू-हिन्दू रह पाया है।

छत्रपति शिवाजी के प्रेरक समर्थगुरु रामदास, हिन्दू जाति व समाज के रक्षक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा निराशा के सागर में डूबती हुई हिन्दू जाति को रामायण के माध्यम से जीवन, जागृति व आशा का सन्देश देने वाले परम सन्त तुलसीदास का ऋण हिन्दू समाज संभवतः कभी भी चुका नहीं पायेगा। आपत्तियों और विपत्तियों के भंवर जाल में फंसा हिन्दू समाज आज पुनः अपने सन्तों और आचार्यों से सबल और सशक्त नेतृत्व की पुकार करता है।

आज देश का हिन्दू अपने आपको हिन्दू कहने में लज्जा का अनुभव करता है, क्योंकि वह हीन भावना का शिकार है। वह हिन्दू जीवन की मान्यताओं को रूढ़िवादी बता कर स्वयं ही ठुकराता है। इस स्थिति में आज हमें देश में ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता है, जो हिन्दू के उदार मन को लकीर का फकीर न बना कर उसमें पुरातन परम्पराओं के प्रति परिष्कृत प्रेम की भावना पनपा सके--उसकी हीन भावना को समाप्त कर हिन्दुत्व के सामाजिक पक्ष को उजागर कर सके। देश की कोटि-कोटि हिन्दू जनता आज अपने सन्तों और आचार्यों से आध्यात्मिक मार्गदर्शन ही नहीं, सामाजिक नेतृत्व की भी आकांक्षा करती है।

आज देश में राजनैतिक स्वार्थों के लिए खुल्लमखुल्ला हिन्दू हितों की होली जलाई जा रही है। हिन्दू हितों का बलिदान कर आज प्रत्येक राजनीतिक दल वोटों



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को सौदेबाजी [illegible] में विदेशी बना दिया है। हिन्दू हितों की बात कहते ही हमें 'साम्प्रदायिक' होने की गाली दी जाती है। किन्तु अपने चहेतों की साम्प्रदायिक्ता को भी राष्ट्रीयता के अलंकार से विभूषित किया जाता है। हिन्दू रक्षा समिति के इस मंच से आज मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता है कि तलवार की धार पर धर्म प्रचार की पद्धति को हिन्दू ने कभी स्वीकार नहीं किया। वह जन्मजात राष्ट्रवादी है और साम्प्रदायिकता उसे छू भी नहीं गई है। "काफिर" शब्द हिन्दू दर्शन की देन नहीं है। हिन्दू सम्पूर्ण देश को अपना परिवार मानता है और इस देश में रह कर विदेशों के गीत नहीं गाता। हम किसी पर अत्याचार नहीं करना चाहते, किन्तु कम से कम अपने देश में शान्ति, सुरक्षा और सम्मान से जीना चाहते हैं। हम अपने ही देश में गुलामों की-सी अपमानित, प्रताड़ित और लांछित जिन्दगी जीने के लिए तैयार नहीं।

राजनैतिक दलों की सत्ता की हविस और सरकार की 'बांटो और शासन करो' की नीति के कारण आज सारा देश साम्प्रदायिकता की आग में जल रहा है। पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे ३२ वर्ष की स्वतन्त्रता के बाद आज भी देश की फिजाओं में गूंजते हैं। मुस्लिम लीग की घिनौनी राजनीति आज फिर वेश बदल कर हमारे सामने आ गई है। जमाते इस्लामी कश्मीर की मुक्ति के लिए ईरान जैसी इस्लामी क्रान्ति की धमकी दे रही है और "राष्ट्रवादी मुसलमानों के सिरमौर" दिल्ली की जामा मस्जिद के तथाकथित शाही इमाम 'हिन्दुओं का कोई मजहब नहीं' की बेहूदा बात कह रहे हैं। इस वातावरण में इस देश का हिन्दू अपने आपको नितान्त अकेला, असुरक्षित और असहाय अनुभव करता है। आज देश का हिन्दू साम्प्रदायिकता, तुष्टीकरण, विदेशी ऐजेन्टों आदि की राजनीति से रक्षा और मुक्ति चाहता है और इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसने हिन्दू रक्षा समिति का गठन किया है।

अपने मूल रूप में हिन्दू रक्षा समिति भारतीय संस्कृति को हानि पहुंचाने वाले सभी अराष्ट्रीय तत्त्वों का विरोध करती है। वह मजहब के आधार पर सरकारी नौकरियों, रक्षा व पुलिस विभाग में आरक्षण को नीति को इस देश की राष्ट्रीयता के लिए घातक मानती है। वह साम्प्रदायिकता, प्रान्तीयता तथा राष्ट्रघाती षड्यन्त्रों व बिचारधाराओं से हिन्दू समाज की रक्षा का व्रत लेती है। ●

---

## सत्यार्थप्रकाश पढ़ो दयानन्दजी का, मित्र !

अविद्या का नाश यदि चाहो करना प्रकाश
ज्ञान का पुनीत प्राप्त करने की कामना।
मिथ्या मतवादियों के जाल से निवृत्ति और
ऋषियों के ज्ञानरूपी मोतियों की चाहना।।
देवता के दिव्य-काव्य वेद से है प्रेम
मन-मन्दिर में होवे मोक्ष प्राप्ति की सुभावना।
माटी का शरीर अनमोल बन जाये
दुःख-दुरितों का नाश होवे सुख की जो कामना।।
चाहो जो 'प्रकाश' विश्वप्रेम का संदेश
सभी मानवों की उन्नति का मंत्र चाहो जानना ॥
'सत्यार्थप्रकाश' पढ़ो दयानन्दजी का, मित्र !
प्रेम का पीयूषपान करने की चाहना ॥

—सत्यवीर प्रकाश आर्य 'प्रकाश'



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# शरणागत

—पृथ्वीराज

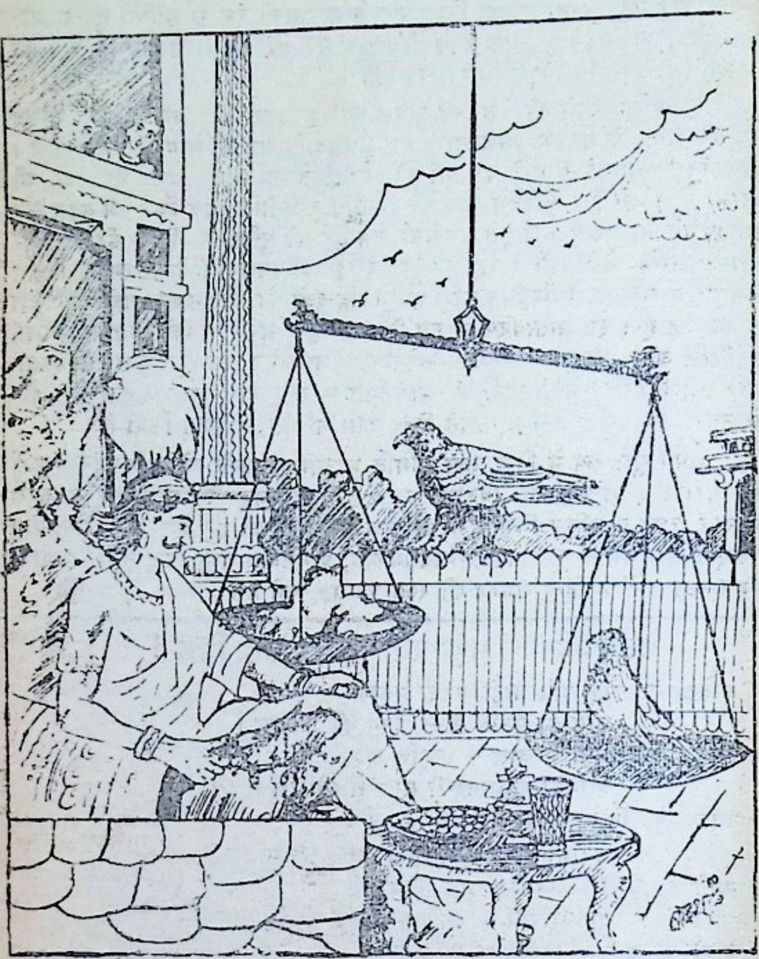

प्राचीन काल में एक प्रतापी राजा राज्य करते थे। उनका नाम था शिवि। राजा शिवि बहुत ही उदार और दयावान् थे। उनके गुणों का यश पृथ्वा से लेकर स्वर्गलोक तक फैला हुआ था। उनकी परोपकार की बातें सुनकर



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तो कई बार स्वर्ग के देवता भी दांतों तले उंगली दबा लेते थे। मनुष्य हो या पशु-पक्षी, वे किसी भी प्राणी को दुःख में देखकर उसकी सहायता करने को तैयार हो जाते थे। प्राणियों का दुःख दूर करने के लिए वे अपनी जान की बाजी तक लगा देते थे। उस राज्य की प्रजा तो राजा शिवि को ही भगवान् का दूसरा रूप समझकर उनकी पूजा करती थी।

वही राजा शिवि एक बार एक बहुत बड़ा यज्ञ करवाना चाहते थे। एक दिन वे राज सिंहासन पर बैठे-बैठे लोगों के साथ उसी यज्ञ की तैयारी के बारे में बातचीत कर रहे थे। तभी एक कबूतर हांफता हुआ उनकी गोद में आ गिरा और हाथ के पास दुबक कर बैठ गया। कबूतर बहुत ज्यादा डरा हुआ था। उसका शरीर पत्ते की तरह थर-थर कांप रहा था। राजा शिवि ने झट कबूतर को उठाकर अपनी गोद में रख लिया और उस पर अपना हाथ फेरते हुए कहा—"डरो नहीं। अब यहां तुम्हें कोई खतरा नहीं। मेरी शरण में आए हो, इसलिए तुम्हारी रक्षा की जिम्मेदारी मेरी है। निश्चिन्त हो जाओ।" राजा शिवि अभी यह सब कह ही रहे थे कि पीछे-पीछे उड़ता हुआ एक बाज भी आ पहुंचा।

बाज ने राजा शिवि के हाथों में अपने शिकार को देखकर कहा—"राजन्! यह कबूतर मेरा शिकार है। इसलिए इसे मेरे हवाले कर दीजिए। मैं सुबह से इसका पीछा कर रहा हूं।"

राजा शिवि ने जवाब दिया—"कबूतर मेरी शरण में आ गया है और शरणागत की रक्षा करना मेरा परम कर्त्तव्य है। इसे मैं तुम्हारे हवाले नहीं कर सकता।"

बाज ने हांफते-हांफते कहा—"अगर आप कबूतर मेरे हवाले नहीं करेंगे तो मैं भूख से यहीं दम तोड़ दूंगा। कई दिनों से मैंने कुछ भी नहीं खाया। आज यह शिकार हाथ लगा और आप कहते हैं कि यह आपकी शरण में है। अगर मैं भूख से तड़प-तड़प कर मर गया तो मेरी हत्या का पाप आपको लगेगा।"

राजा शिवि ने थके-हारे बाज की तरफ देखा। बाज सचमुच कई दिनों का भूखा लग रहा था। राजा बोले—"हमारे खाद्य भंडार में सब कुछ है—कबूतर को छोड़कर तुम जो चाहो खा सकते हो।"

"नहीं राजन्, आपके भण्डार में मेरे खाने योग्य कोई चीज नहीं है। आप तो जानते ही हैं कि मैं जीवित पक्षी को पकड़कर ही खाना पसंद करता हूं। मैं और अन्न नहीं खा सकता।"

"तो फिर तुम्हीं बताओ कि क्या किया जाये?" राजा शिवि ने परेशान होते हुए पूछा।

"आप यह कबूतर मेरे हवाले कर दीजिए।" बाज ने बड़ा सरल-सा उपाय सुझाया।

राजा शिवि एकाएक कह उठे—"लेकिन यह तो मेरी शरण में आ चुका है—इसे मैं बिल्कुल नहीं दूंगा। तुम कुछ और मांगो।"

इसी तरह राजा शिवि और बाज दोनों में बहुत देर तक बातचीत होती रही। न राजा शिवि मान रहे थे और न बाज। राजा बार-बार कहते कि कबूतर के बदले कोई और चीज ले लो और बाज बार-बार कहता कि मुझे कबूतर ही


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहिए। आखिर बाज ने काफी सोच-विचार करने के बाद कहना शुरू किया—"ठीक है राजन्! अब मैं एक शर्त रखता हूं। अगर आप मान गये तो ठीक वरना कबूतर मेरे हवाले करना पड़ेगा।"

"कौन सी शर्त? जल्दी बताओ।" राजा शिवि मन ही मन में खुश हो गये।

बाज ने राजा शिवि की आंखों में देखते हुए कहा—"यदि आप शरणागत की प्राण-रक्षा करना ही चाहते हैं तो आपको कबूतर के वजन जितना अपने शरीर का मांस मुझे देना पड़ेगा। मैं या तो कबूतर के मांस को खाकर अपनी भूख शांत करूंगा या फिर आपके मांस को खाकर। अब आप सोच लीजिए।"

"बस इतनी-सी बात......।"

राजा शिवि ने खुश होते हुए कहा और तब अपने सेवकों को कांटा-तराजू लाने का आदेश दिया। पूरे दरबार में सन्नाटा छा गया।

सेवकों ने कांटा-तराजू लाकर राजा के सामने रख दिया। राजा ने तराजू के एक पलड़े में कबूतर को बिठाया और दूसरे पलड़े में छुरी से काट-काटकर अपने शरीर का मांस रखने लगे।

राजा शिवि ने अपने शरीर का बहुत-सा मांस काट-काट कर पलड़े में रख दिया, लेकिन फिर भी कबूतर वाला पलड़ा भारी बना रहा। पता नहीं कैसा कबूतर था वह! अन्त में राजा किसी तरह कोशिश करके लहुलूहान शरीर के साथ तराजू के एक पलड़े पर जा बैठे। उनके बैठते ही एकाएक कबूतर वाला पलड़ा ऊपर उठ गया।

तब राजा शिवि ने बाज की तरफ देखते हुए मुस्कराकर कहा—"लो बाज! कबूतर के वजन जितना मांस तुम्हारे सामने है। इसे खाकर अपनी भूख शांत करो।"

इतना कहना था कि आकाश से फूल बरसने लगे। राजा शिवि ने जब सामने देखा तो वहां बाज और कबूतर की जगह देवराज इन्द्र और अग्निदेव खड़े थे। वास्तव में हुआ यह था कि स्वर्ग में राजा शिवि के यश की चर्चा सुनकर देवराज इन्द्र और अग्निदेव उसकी परीक्षा लेने के लिए पृथ्वी पर आये थे। राजा शिवि परीक्षा में सफल रहे थे।

देवराज इन्द्र ने दायां हाथ ऊपर उठाकर मुस्कराते हुए कहा—"कल्याण हो।"

इन्द्र के इतना कहते ही राजा शिवि का शरीर फिर से पहले की तरह स्वस्थ, सुन्दर और तेजवान् बन गया। स्वस्थ होते ही राजा शिवि उठे और भाग कर देवराज इन्द्र व अग्निदेव के चरणों में झुक गये। इन्द्र ने राजा को आशीर्वाद देते हुए कहा—"एक पक्षी के प्राण बचाने के लिए अपने प्राण देने की कहानी पृथ्वी पर सदा अमर रहेगी। कल्याण हो......।"



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# भगवान् राम--
# हमारे प्रेरणास्रोत

## (विजयदशमी के अवसर पर दिल्ली में आयोजित रामलीला समारोह में श्री रमेशचन्द्र चोपड़ा (फैजाबाद निवासी) द्वारा दिया गया अध्यक्षीय भाषण)

मुझे इस बात का गौरव है कि मैं भगवान् राम की जन्मभूमि अयोध्या (जिसे साकेत भी कहते हैं) का निवासी हूं। भारत शब्द का अर्थ है 'भा' यानी ब्रह्म-विद्या में जो रत हो – लगा हो, उसे भारत कहते हैं। ऐसे महान् देश की मिट्टी ने हमेशा ही ज्योति पुंज पैदा किये हैं, जिनके सामने दुनिया भर की आदर्शवादिता का इतिहास नतमस्तक है। राम का चरित्र तो है ही बेमिसाल।

विजयदशमी के पवित्र अवसर पर जब लोग यहां इकट्ठे हुए हैं, तब वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हमें भगवान् राम और उनके जीवन पर विचार करना चाहिये।

महात्मा गांधी ने आदर्श भारत की कल्पना रामराज्य की तरह ही क्यों की? आखिर राम ही ऐसा महामानव क्यों बना, जिसकी जीवन गाथाएं इस महानगरी के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों से लेकर भारत के किसी भी गांव के भोले-भाले अनपढ़ आदमी की जुबान पर हैं? थाईदेश, फिजी—और यहां तक कि योरोपीय देशों के दूरदराज इलाकों में राम कैसे फैल गया?

इस सबका एक ही जवाब है कि राम ने अपने जीवन में सारी वैदिक परंपराओं को जिया और वह भी मानवता की सर्वश्रेष्ठ ऊंचाइयों तक जाकर। राम गृहस्थ धर्म, सार्वजनिक हित, राजनीति, धर्म और पारिवारिक मर्यादाओं को एक साथ लेकर चले।

बालक राम सुबह उठकर आज के बच्चों की तरह चाय और डबलरोटी नहीं मांगता था। तुलसी ने लिखा है—

"प्रातःकाल उठकर रघुनाथा
मात पिता गुरु नावहिं माथा"

और फिर—

वे आज की तरह मौज मस्ती मनाने नहीं जाते थे, बल्कि संध्या करन चले दोउ भाई—संध्या करते थे, हवन करते थे, विद्याध्ययन करते थे और पिता दशरथ के साथ बैठकर राजनीति सीखते थे। वे साधारण जनता के बच्चों के साथ बैठकर पढ़ते थे—खेलते थे। आदर्श शिष्य की तरह उनका जीवन एक उदाहरण है। जब यज्ञों में विघ्न डालने वाले दुष्टों के संहार के लिए गुरु विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को साथ चलने को कहा तो उन्होंने इसे अपने परम सौभाग्य की संज्ञा दी।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनके चरित्र का एक महत्त्वपूर्ण क्षण देखिये । एक शक्तिशाली साम्राज्य अयोध्या का भावी सम्राट् जनकपुरी की पुष्प वाटिका में अपने छोटे भाई के साथ घूम रहा है । अचानक किसी वृक्ष की ओट से उस देश की सुन्दर राजकुमारी दिखाई देती है । राम प्रभावित तो होते हैं, किन्तु इतने मर्यादित और संयत रहते हैं कि ऐसा नहीं लगता है कि वह आकर्षित हैं । 'हां' लक्ष्मण से इतना अवश्य कहते हैं कि भाई, जानकी को देखकर पहली बार मेरे मन में किसी नारी के प्रति आकर्षण पैदा हुआ है । किन्तु मुझे मालूम है कि यह बात किसी भी क्षत्रिय के लिए उचित नहीं । वे सीता के पीछे भागते नहीं । मन में अवश्य संकल्प-विकल्प उठते हैं, किन्तु वे सीता को प्राप्त करने की कोई योजना नहीं बनाते । सबसे बड़ी बात तो यह कि धनुष यज्ञ में कोई भी उतावली दिखाए बिना वे चुपचाप अपने गुरु के पास बैठते हैं । गुरु की आज्ञा के वगैर वे धनुष नहीं तोड़ते । इतने नाजुक क्षणों में इतना ऊंचा आदर्श राम का ही हो सकता है । त्याग और सहनशीलता का उदाहरण देखिये कि राम को राजतिलक की बात सुनाई जाती है, तैयारियां होने लगती हैं और अगले ही क्षण १४ साल के वनवास का आदेश मिल जाता है, लेकिन राम हैं कि उन के चेहरे पर शिकन तक नहीं । उसी सहजता के साथ बनवास चल देते हैं । किसी से कोई गिला-शिकवा नहीं ।

आज ऊंच-नीच के भेदभाव मिटाने की बात करने वाले, जातिवाद खत्म करने या गरीबों का अभ्युत्थान करने की बात करने वाले कुछ फैशनेबल कम्युनिस्ट राम को अधिनायकवादी कहते हैं । उन्हें जनतन्त्रविरोधी और तानाशाह बताते हैं । मैं उन्हें दावे के साथ बता देना चाहूंगा कि दुनियां के इतिहास का सबसे बड़ा जनवादी नेता राम था ।

उन्हें गद्दी पर बैठाने की बात थोपी नहीं गई थी । राजा दशरथ ने पंचायत बुलाकर गुरु वशिष्ठ से कहा—जो पंचहिं मन लागे नीका, करहु हरषि हिय रामहिं टीका"—अगर पंचों को ठीक लगे तब राजतिलक करो । राम शबरी के घर जूठे बेर खाते हैं । राम निषादराज मल्लाह से मित्रता करते हैं —कोलों, भीलों, किरातों और वानरों से । राम के जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा इन्हीं के साथ बीता और मेरी मान्यता तो यह है कि कि राम का १४ साल का वनवास एक पारिवारिक घटना कतई नहीं थी । उस समय के सबसे बड़े दुराचारी और शक्तिशाली राजा रावण को नष्ट करना उनका उद्द श्य तो था ही, किन्तु यह काम उन्होंने भारत के सुन्दर जंगली इलाकों की गरीब ग्रामीण जातियों और कबीलों को संगठित, प्रशिक्षित और जागृत करके किया । बाली का वध, सुग्रीव से मित्रता आदि सब इसी योजना के अंग थे । उन्होंने अपना सब से विश्वसनीय सेवक भी वानर जाति के व्यक्ति हनुमान् को चुना । आज भी दक्षिण की एक मनुष्य जाति वानर है । वानर का अर्थ बन्दर नहीं । राम साम्राज्यवादी नहीं थे । अगर होते तो बाली को मारकर राजा बन जाते । रावण को मारकर स्वर्णदेश लंका के सम्राट् बन जाते, किन्तु वे नही बने ।

वे एक आदर्श पति थे, आदर्श बेटे थे और राज्य मिलने पर प्रजा के आदर्श नायक थे । उनके राज्य की प्रशंसा विदेशी इतिहासकारों तक ने की है कि वहां किसी प्रकार का अज्ञान, अन्याय या अभाव नहीं था—प्रजा का सुख ही राम के जीवन का अभीष्ट था । राम के साथ जुड़े हुए जीवन भी कितने महान् हैं—राम को वनवास होता है—लक्ष्मण के साथ चल देते हैं । हाल में ब्याही ऊर्मिला की तप-



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्या की मिसाल संसार के इतिहास में नहीं मिल सकती, जिसका पति अपने भाई की सेवा में १४ साल के लिए उसे अकेला छोड़ जाता है और वह उफ तक नहीं करती।

भरत को लीजिए। आज दुनियां के मानचित्र पर सारी समस्या अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संतुलन की है। सारी दुनियां का चिन्तन कुछ ऐसा बन गया है कि चाहे व्यक्ति हो या राजनैतिक दल, सभी यह मानने लगे है कि सत्ता के बगैर कुछ हो ही नहीं सकता। ईरान, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, पोलैण्ड, चीन—ये ऐसे उदाहरण हैं, जहां पिछले सालों में भयंकर सत्ता संघर्ष हुए। किन्तु धन्य है भारत मां का अमर सपूत भरत, जो मिले-मिलाए राज्य को ठोकर मार देता है और अयोध्या का राज्य राम और भरत के बीच फुटबाल बन जाता है। एक आदर्श नारी की जो भी कल्पना की जा सकती है, वह माता सीता से मिल सकती है। सीता एक आदर्श बेटी है। सीता एक आदर्श बहू है। आदर्श भाभी है। आदर्श रानी है। आदर्श मां है और आदर्श पत्नी तो है ही।

स्वामिभक्ति हनुमान् से अधिक अन्यत्र नहीं मिलेगी। सुग्रीव-सी मित्रता रामायण में ही संभव है। राजदूत अंगद-सा नहीं।

मैं तो इतना ही कहूंगा कि राम चरित्र तो अनवरत अमर शृंखला है, जो सदियों से चली आ रही है और जब तक आदमी रहेगा, यह इतिहास भी रहेगा।

विजयदशमी का अपना महत्त्व है। मैं सोचता हूं कि राम के समय में एक रावण रहा होगा। अब रावण व्यक्ति नहीं, प्रवृति बन चुका है। आंख उठाकर दखिये; हमारे चारों ओर रावण खड़े हैं—अंतर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र इतने व्यापक पैमाने पर फैलाए जा रहे हैं कि आज राम की संस्कृति को जबरदस्त खतरा है। आज के दिन की सार्थकता यही है कि हम राम की संस्कृति की रक्षा का व्रत लें। अपने भीतर के राम को प्रकाशित करें।

परमात्मा हमें शक्ति दे कि हम रामराज्य स्थापित कर सकें और जो रावण नाना रूपों में उभर रहे है, उन्हें समाप्त कर राम की सच्ची विजय मना सकें। ●

## महात्मा वेदभिक्षुः का अभिनन्दन

दयानन्द संस्थान के संस्थापक मुख्य आप,
जन-ज्ञान घर-घर पहुंचाया आपने !
सत्यार्थ-प्रकाश का न प्रचारक आप जैसा,
आज तक हुआ कहीं, यश पाया आपने ॥
जीवन में रही एक तड़प असीम बड़ी,
प्रेय सुपदार्थ सारा बिसराया आपने !
कलित सुकार्यों की ख्याति रही भारत में,
स्वामीजी का श्रेय पथ अपनाया आपने ॥
वेदों का प्रकाश किया, विशेष सुरुचि साथ,
आकर्षक बृहद् आर्ष ग्रन्थों को रचाया है।
भव्य भावना का आप हैं अपार अथाह सिन्धु,
सर्वोत्कृष्ट आर्य कार्य आपने चलाया है ॥
पंडिता राकेशरानी, भूले सब ज्ञात वसु,
अहर्निश एक कर कार्य को चलाया है।
भारतेन्द्रनाथ फिर आगे को चरण रखा,
वानप्रस्थ धार वेदभिक्षुजी कहाया है ॥

—कस्तूरचन्द 'घनसार', आर्य कुटीर, पीपाड़ शहर (राज०)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# छत्रपति शिवाजी

## (प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के भाषण से)

शिवाजी ने आजादी की ज्योति भारत में जलाई और जिसकी रोशनी ने सैंकड़ों बरस बाद तक इस भारत को शक्ति दी और वह प्रेरणा दी जिससे कि हम अपनी स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ सके। वो एक महान् पुरुष थे, जो केवल महाराष्ट्र में नहीं केवल भारतमें नहीं, हम समझते हैं कि दुनिया के महान् पुरुषों में उनकी गणना की जाती है। क्योंकि हम एक गुलाम देश रहे तो हमारे जो बड़े लोग हैं (चाहे उनकी कितनी ही योग्यता हो) दुनिया का इतिहास उनको कुछ किनारे रख देता है। वही पुरुष किसी यूरोप के देश में जन्म लेता तो उसकी इतनी प्रशंसा होती, इतना नाम होता कि कहते कि दुनिया को चमकाया है।

छत्रपति शिवाजी के सामने कुछ दूसरे प्रश्न थे। मुगल राज्य था और उससे वह बहुत वीरता से लड़े और जितने उस जमाने के इतिहासकार थे, जो पुस्तकें लिखी गईं, उन सब में उनकी भारी प्रशंसा थी। केवल प्रशंसा उनके शौर्य की वीरता की नहीं, युद्ध में वे जिस प्रकार की "प्लानिंग" करते थे उसकी सबने प्रशंसा की।

उन्होंने अगर औरंगजेब का घोर विरोध किया और लड़े तो इसलिए नहीं कि वह मुस्लिम थे, केवल इसलिए कि वह अपराध करते रहे थे, इसलिए कि वह जुल्म कर रहे थे, इसलिए कि वह अत्याचार कर रहे थे और जो भी ऐसा करे उससे लड़ना ही है, चाहे वह किसी जाति का हो या कहीं का भी। यह सब भी हमको शिवाजी ने सिखाया।

हम सब अपने को ऐसा समझें कि शिवाजी की फौज में हम भी सैनिक हैं। हमारे हाथ में तलवार नहीं है, लेकिन उसी अत्याचार के लिए, उन्हीं बुराइयों केलिए, उसी देश की स्वतन्त्रता को पक्का करने के लिए, भारत माता के चित्र को ऊंचा करने के लिए उस लड़ाई में हम और आप मिलें, चाहे कोई कुर्बानी देनी हो, त्याग करना हो, चाहे किसी भी कष्ट का सामना करना हो।

★ ★ ★

शिवा की भवानी फिर से भवानी बने आज,
वीरता के भाव सारे भारत में छा जाएं।
अंग-अंग पुलके, और वीर रस छलके,
सभी जन जागें शौर्य धारा में नहा जाएं
गंगा बहे पावन शुद्ध, ज्ञान और दर्शन की,
संगठन के गीत धरती को भा जाएं।
हिन्दूपन जागे, अब वीरता भी जाग जाग जाए,
भारत के सुदिन प्रभु जल्दी ही आजाएं।

—वेदभिक्षुः



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छत्रपति शिवाजी



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai


एक अनुपम ग्रन्थ

# यज्ञ-मीमांसा

वैदिक साहित्य में अपने ढंग
का अनूठा ! प्रथम वार
महान् विद्वान् डॉ० रामनाथ
वेदालंकार की लेखनी से

## यज्ञ संबंधी सभी प्रश्नों का शास्त्रीय समाधान
## यज्ञ के मंत्रों की अनुपम व्याख्या

सम्पादक—प्रो० धर्मवीर

मूल्य अनुमानतः १०) होगा किन्तु १५ दिसम्बर ८०
तक १० प्रतियां या अधिक मंगाने पर
केवल ५) प्रति
अधिकाधिक प्रतियां मंगाएं
दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, नई दिल्ली-५




Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# सामयिक विचार

—सत्यपाल शास्त्री

## मन्त्रिमण्डल में फेर बदल

प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने विजयदशमी के दिन अपने मन्त्रिमंडल का पुनर्गठन किया। इस पुनर्गठन के बाद भी मन्त्रिमंडल अधूरा है। कुल मिलाकर मन्त्रिमंडल में ११ नये चेहरे लिये गये हैं—एक केबिनेट मन्त्री, ६ राज्य मन्त्री और चार उपमन्त्री। 'वोट उन्हें दें, जो सरकार चला सकें,' के नारे पर चुनाव जीतने वाली इन्दिरा जी को शासन में आये दस महीने हो गये हैं, लेकिन वे अभी तक अपना मंत्रिमंडल भी पूरा नहीं कर सकीं। अभी भी रक्षा, उद्योग, इस्पात व खान और श्रम विभाग केबिनेट मन्त्रियों के बिना ही काम कर रहे हैं। विदेश, विधि और नागरिक आपूर्त्ति विभाग में कोई कनिष्ठ मन्त्री नहीं, जबकि कृषि विभाग में एक केबिनेट मंत्री के अतिरिक्त दो राज्यमन्त्री और एक उपमन्त्री हैं। इस्पात व खान विभाग अभी भी वाणिज्य मन्त्री के पास है और उसमें कोई कनिष्ठ मन्त्री नहीं।

इस मंत्रिमंडल में १० प्रतिशत महिलाएं हैं। ऐसे भी राज्य हैं, जिनका इस मंत्रिमंडल में कोई प्रतिनिधि नहीं; उदाहरणार्थ कशमीर और राजस्थान। इन राज्यों से क्रमशः मीर कासिम और श्री मोहनला सुखाड़िया को मंत्रिमंडल में लेने की चर्चा थी, लेकिन दोनों में से किसी को भी नहीं लिया गया। नये मंत्रियों में सर्वश्री शंकरराव चह्वाण, भागवत झा आज़ाद, शिवराज पाटिल और बृजमोहन महन्ती को छोड़कर अन्य किसी को प्रशासन का कोई अनुभव नहीं। नई सूचना-प्रसारण उपमन्त्री कुमारी कुमुदबेन जोशी को सरकार में रहकर काम करने का अवसर तो पहली बार मिला है, लेकिन उन्हें अपने राज्य (गुजरात) के आदिमजाति क्षेत्रों में परिवार नियोजन के अभियान को लोकप्रिय बनाने में सफलता मिल चुकी है। आशा करनी चाहिए कि वे सूचना-प्रसारण के माध्यमों को आदर्शोन्मुख बनाने के लिए प्रयत्नशील होंगी। श्री नारायणदत्त तिवारी के पास अब दो महत्त्वपूर्ण विभाग हो गये हैं—योजना और श्रम। ऐसे समय जबकि छठी पंचवर्षीय योजना तैयार की जा रही है, योजना मंत्री को श्रम विभाग सौंप देने का परिणाम यह भी हो सकता है कि वे योजना की ओर पूरा ध्यान न दे सकें। वैसे श्रम विभाग में उन्हें सहायता देने के लिए श्रीमती रामदुलारी सिन्हा राज्यमंत्री के रूप में और श्री पी० वेंकट रेड्डी उपमंत्री के रूप में सुलभ रहेंगे। श्रीमती सिन्हा पहले सूचना-प्रसारण राज्य मंत्री थीं और श्री रेड्डी उपमन्त्री थे।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## राष्ट्रीय सुरक्षा अध्यादेश

पांच महीने पूर्व इन्दिरा कांग्रेस द्वारा शासित राज्यों में निवारक नज़रबन्दी अध्यादेश जारी करने का जो दौर शुरू हुआ, वह २२ सितम्बर को केन्द्रीय सरकार द्वारा राष्ट्रीयसु रक्षा अध्यादेश जारी करके पूर्ण कर लिया गया। हर मौके पर कहा तो यही जाता है कि इस प्रकार के अध्यादेश केवल तस्करों और चोरबाजारियों के विरुद्ध इस्तेमाल किये जायेंगे, लेकिन सब जानते हैं कि १९७५ में आन्तरिक सुरक्षा कानून (मीसा) का कितना दुरुपयोग किया गया। आपातस्थित लागू थी। कोई पूछने वाला न था। हालत यह हो गई थी कि भारत सरकार के तत्कालीन एटार्नी-जनरल स्वर्गीय नीरेन डे ने उच्चतम न्यायालय में कहा था कि "सुनने में बुरा-सा लगता है, लेकिन यह सच है कि आपातस्थिति के दौरान यदि हम चाहें तो किसी को भी गोली से उड़ा सकते हैं ओर कोई हम से कारण नहीं पूछ सकता।" राष्ट्रीय सुरक्षा अध्यादेश के अधीन उन्हें भी नजरबन्द किया जा सकता हैं, जिन पर 'गड़बड़' करने का अभियोग हो। इस अध्यादेश को पढ़ने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इसका असली निशाना राजनैतिक विरोधी हैं।

नियन्त्रण से बाहर हो चुकी महंगाई (विशेषतः चीनी के दामों में असाधारण वृद्धि) और कानून-व्यवस्था के प्रभावहीन होने से पैदा स्थिति से लोगों का ध्यान हटाने के लिए फिर वही पुराने हथकंडे अपनाये जा रहे हैं, जो अब तक सफलतापूर्वक अपनाये जाते रहे हैं। स्वर्गीय डाक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने एक बार कहा था कि "जब भी देश के समक्ष कोई कठिन स्थिति आती है, नेहरू जी छत पर चढ़कर चिल्लाना शुरू कर देते हैं—साम्प्रदायिकता, साम्प्रदायिकता, साम्प्रदायिकता।" सत्तारूढ़ इन्दिरा कांग्रेस भी यही कुछ कर रही है। अभी पिछले २७ सितम्बर को प्रधान मन्त्री ने कलकत्ता में अपने दल के कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भूतपूर्व जनसंघ को साम्प्रदायिक दंगों के लिए उत्तरदायी ठहराया। वस्तुतः गृह मन्त्रालय रा० स्व० से० संघ के नेताओं को जेल के सीखचों में बन्द करने की योजना बना रहा है। हमारी जानकारी यह है कि गृह मन्त्रालय ने चार अक्तूबर की रात को इन नेताओं को गिरफ्तार करने की पूरी तैयारी कर ली थी, लेकिन चार अक्तूबर सुबह इस समाचार के 'लीक' हो जाने के कारण यह इरादा छोड़ दिया गया।

आश्चर्य की बात है कि इतने बुरे इरादों से जारी किए गए अध्यादेश का भी तथाकथित अखिल भारतीय जनसंघ के प्रधान प्रो० बलराज मधोक ने समर्थन किया है। लगे हाथों यह भी लिख दिया जाए कि आजकल प्रो० मधोक कुछ और भी विचित्र बातें कह रहें हैं; उदाहरणार्थ ये कि आज तक कांग्रेस में संजय गान्धी जैसा कोई राष्ट्रवादी नेता पैदा नहीं हुआ और भारतीय जनता पार्टी इन्दिरा कांग्रेस की अपेक्षा अधिक हिन्दूविरोधी है।

## श्री के० नरेन्द्र पर मुकद्दमा

एक ओर नये-नये काले कानून लागू किये जा रहे हैं, तो दूसरी ओर अंग्रेजों के वक्त से चले आ रहे है कानूनों का सहारा लेकर राजनैतिक विरोधियों से निपटा जा रहा है, दिल्ली प्रशासन ने 'वीर अर्जुन' और 'प्रताप' के सम्पादक श्री के० नरेन्द्र पर जो इन्डियन एंड ईस्टर्न न्यूजपेपर सोसायटी के अध्यक्ष रह चुके हैं, भारतीय



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

दंड संहिता की धारा १५३ ए के अधीन मुकद्दमा दायर किया है। यह मुकद्दमा 'अलीगढ़ के दंगे' शीर्षक से प्रकाशित एक लेख पर चलाया गया है। लेख ४ सितम्बर के 'वीर अर्जुन' और 'प्रताप' में प्रकाशित हुआ था। वह तो अच्छा हुआ कि नरेन्द्र जी ने पेशगी जमानत पर रिहाई हासिल कर ली, अन्यथा उन्हे कुछ समय तो हिरासत में रहना ही पड़ता। हम ने वह लेख पढ़ा है। हमारी तो समझ में नहीं आया कि उसमें मुकद्दमा चलाने वाली कौन-सी बात थी। एक स्थल पर उन्होंने 'मुस्लिम गुंडे' शब्द का प्रयोग अवश्य किया है। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व दो मुस्लिम पत्रों के विरुद्ध कार्रवाई की जा चुकी है। लगता है कि वजन (Balance) बराबर करने के लिए सरकार ने नरेन्द्र जी को भी गिरफ्त में ले लिया है।

## ईरान-इराक युद्ध अर्थात् शिया-सुन्नियों की लड़ाई

ईरान और इराक के बीच युद्ध के विस्फोट ने इस क्षेत्र में पहले से विद्यमान अंतर्राष्ट्रीय तनाव को और भी बढ़ा दिया है। यों कुछ समय से ऐसा लग रहा था कि इन दो पारम्परिक प्रतिद्वन्द्वियों की सैनिक मुठभेड़ हो सकती है किन्तु किसी को यह आशंका न थी कि घटनाक्रम एकाएक प्रारम्भ होगा। युद्ध प्रारम्भ हुए एक मास से अधिक समय बीत चुका है और अब यह बात साफ हो चुकी है कि इन दो बड़ी शक्तियों के टकराव के बाद पश्चिम एशिया के सन्दर्भ में स्थिति यथापूर्व नहीं रहेगी।

ईरान और इराक का युद्ध केवल सीमा विवाद नहीं। न ही यह मानना सही होगा कि 'एक मांद में दो शेर नहीं रह सकते' वालीउक्ति के अनुसार ये दोनों देश अवसरवादी ढंग से अपने विस्तरवादी राष्ट्रीय हित साधना चाहते हैं। इतिहास में इस झगड़े की जड़ें गहरी हैं और उसकी गुत्थियां जाति-संस्कृति और राजनैतिक विचारधारा के परस्पर विरोधी होने से बहुत जटिल हो चुकी हैं।

इराक की राजधानी बगदाद शताब्दियों पूर्व महत्त्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय मन्डी बन चुकी थी। इराकवासी अपने आपको अरब बिरादरी का प्रतिष्ठित अंग मानते हैं। दूसरी ओर ईरान की अपनी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा है। मतलब यह कि ये दोनों पड़ोसी देश क्षेत्रीय नेतृत्व के लिए दावेदार हैं। अरबों और इरानियों के नस्ल गत अन्तर से जटिलता बढ़ी है। इस्लाम के प्रसार ने कठिनाई को और बढ़ाया है। इराक के शासक अल्पसंख्यक सुन्नी वर्ग के हैं, इसलिए उनके मन में यह शंका बनी रहती है कि ईरानी शिया अपने भाइयों को सुन्नी शासकों से मुक्त कराने के लिए सक्रिय रहते हैं।

अभी इस युद्ध के समाप्त होने के कोई लक्षण नहीं। युद्धबन्दी के लिए संयुक्त राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद् और महासभा दोनों की बैठकें हो चुकी हैं। लेकिन युद्धरत राष्ट्रों ने अपने मत भेदों को बातचीत द्वारा दूर करने की अपीलों पर कोई ध्यान नहीं दिया। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक युद्ध समाप्ति का कोई आधार तक तैयार नहीं हो पाया।

युद्ध में इराक का पलड़ा भारी है। अनुमान है कि जब ये पंक्तियां पाठकों तक पहुंचेगी, तब तक इराकी आक्रमण का उद्देश्य पूर्ण हो चुका होगा।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इराक का इरादा शत-अल-अरब नदी के ईरानी तरफ के तटवर्ती क्षेत्र पर पूरा अधिकार करने और ईरान को अरब आबादी वाले कुजिस्तान प्रांत (जिसे इराक अरबिस्तान के नाम से पुकारता है) के तेल क्षेत्रों से वंचित करने का है। इराक ने तेजी से हमले करके शत-अल-अरब के पूर्वी तटवर्ती क्षेत्र पर अधिकार करने की योजना बनाई थी, लेकिन ईरानी प्रतिरोध के कारण वह सफल नहीं हो सकी।

यदि ईरान अमरीकी बन्धकों को रिहा कर दे, तो अमरीका रूस के सहयोग से और तटस्थ राष्ट्रों का समर्थन प्राप्त करके युद्धबन्दी करवा सकता है।

## उ० प्र० में एक नये पाकिस्तान की स्थापना का षड्यंत्र

पिछले पांच अक्तूबर को लखनऊ के कैसर बाग की बारादरी में कांग्रेसी चरित्र के सत्ताच्युत मुस्लिम नेताओं की एक बैठक में मांग की गई कि पुलिस सेवाओं में मुसलमानों को २५ प्रतिशत स्थान दिये जायें। मतलब यह कि २५ प्रतिशत सीटें मुसलमानों के लिए रिजर्व रहें। इस प्रस्ताव का समर्थन करनेके लिए लोकदल के 'सोशलिष्ट' महामन्त्री रवि रे, 'किसान नेता' चौधरी देवीलाल, कांग्रेस (अर्स) के महामन्त्री यूनुस सलीम, उत्तर प्रदेश विधान सभा में जनता पार्टी के नेता रियासत हुसैन, लोक दल के नेता राजेन्द्रसिंह आदि अनेक नेतानामधारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन कर रहे थे हेमवन्तीनन्दन बहुगुणा के खास आदमी अब्दुलमन्न खां एडवोकेट यह रुहेलखंड को नये पाकिस्तान का रूप देने का प्रयास है। (रुहेलखंड में मुरादाबाद, रामपुर, बरेली आदि जिले आते हैं।) इस बैठक के बाद से उत्तर प्रदेश के विभिन्न नगरों की मुस्लिमबहुल आबादियों की दीवारों पर उर्दू और अंग्रेजी में कुछ साम्प्रदायिक नारे उभर आयें हैं। एक अपील भी है—जायन मुस्लिम यूथ स्टुडैंट मूवमैंट अर्थात् मुस्लिम युवा आन्दोलन में शामिल हों।

६ अक्तूबर को उत्तर प्रदेश विधान सभा में इन्दिरा कांग्रेस के एक सदस्य श्यामलाल वाजपेयी ने आरोप लगाया कि "मुरादाबाद का दंगा कराने का षड्यन्त्र उत्तर प्रदेश मन्त्रिमंडल के एक सदस्य ने, जिनका विदेशों से सम्पर्क है, किया था, क्योंकि उनकी निगाह मुख्य मन्त्री की कुर्सी पर है और वे विश्वनाथ प्रतापसिंह को बदनाम कर उन्हें हटाना चाहते हैं।" (वाजपेयी जी लखनऊ के पुराने छात्र नेता हैं और बाराबंकी से विधान सभा के लिए चुने गये हैं।)

ताजा समाचार है कि सहारनपुर जिले के रामपुर मनीहारी पुलिस थाने के अन्तर्गत मल्हपुर गांव में दशहरे का जलूस निकल रहा था, तो मुसलमानों ने उसके एक विशेष क्षेत्र से गुजरने पर आपत्ति की। झगड़ा हो गया। पुलिस ने लाठी चार्ज किया। अन्ततः पुलिस को गोली भी चलानी पड़ी। दो व्यक्ति मारे गये। कर्फ्यू लगाना पड़ा। सेना बुलानी पड़ी। भगवान् जाने, छोटी-छोटी और महत्त्वहीन बातों की आड़ में खून की यह साम्प्रदायिक होली कब तक खेली जाती रहेगी। अब फिर इस मांग पर जोर दिया जायेगा कि अल्पसंख्यकों को संरक्षण दिया जाये। इस प्रकार अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यकों के सिर पर बिठाया जायेगा।

## २५ सितम्बर से २४ अक्तूबर तक की प्रमुख घटनाएं

२५ सितम्बर : असम समस्या वार्त्ता स्थगित, बसरा पर ईरानी बमबारी से १५ भारतीयों की मृत्यु। २६ सितम्बर : नई दिल्ली में भारत और यूगोस्लाविया के



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai.

प्रतिनिधियों के बीच व्यावहारिक सहयोग पर वार्त्ता; इराक से २०० भारतीय स्वदेश लौटे। २७ सितम्बर : ईरान ने मध्यस्थता का प्रस्ताव अस्वीकार किया, इराक को क्यूबा का मध्यस्थता का प्रस्ताव स्वीकार। २८ सितम्बर : ईरान की चेतावनी— पराजित हुए, तो सब तेल क्षेत्र नष्ट कर देंगे। २९ सितम्बर : मास्को में राष्ट्रपति नीलम् संजीव रेड्डी का भव्य स्वागत; ईरान ने युद्ध विराम का प्रस्ताव अस्वीकार किया। ३० सितम्बर : समाचारपत्रों और समाचार एजेंसियों में एक दिन की हड़ताल। १ अक्तूबर : ईरान युद्ध बन्द करने की तैयार नहीं —आयतुल्ला खुमैनी द्वारा सोवियत संघ का युद्ध बन्दी प्रस्ताव अस्वीकार। २ अक्तूबर : महाराष्ट्र में बढ़ते मूल्यों के विरुद्ध प्रदर्शन करते हुए ५० हजार सत्याग्रही गिरफ्तार। ४ अक्तूबर : असम समस्या पर वार्त्ता एक सप्ताह के लिए स्थगित। ५ अक्तूबर : पाकिस्तान के सेवानिवृत्त एयर मार्शल असगर खां घर में नजरबन्द। ८ अक्तूबर : इराकी राष्ट्रपति के विशेष दूत नई दिल्ली पहुंचे। ९ अक्तूबर : कशमीर विधान मंडल भवन (श्रीनगर) में भीषण आग; पोलिश कवि चेस्लाव मिलोश को साहित्य का नोबेल पुरस्कार। १० अक्तूबर : टी. अंजैया आन्ध्र के नये मुख्य मन्त्री नियुक्त। ११ अक्तूबर : कशमीर विधान सभा के अध्यक्ष मलिक मुहय्युद्दीन पद से हटाये गए; अल्जीरिया में भीषण भूकम्प से २० हजार व्यक्तियों के मरने की आशंका। १४ अक्तूबर : श्रीलंका में आपातकालीन स्थिति की घोषणा। १५ अक्तूबर : असम वार्ता के सिलसिले में गृह-मन्त्री जैलसिंह दो बार प्रधानमन्त्री से मिले। १६ अक्तूबर : असम वार्ता असफल; श्रीलंका की भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती भंडारनायके सात वर्ष के लिए संसद् से निष्कासित। १७ अक्तूबर : असम आन्दोलन शीघ्र पुनः प्रारम्भ होगा। १९ अक्तूबर : केन्द्रीय मन्त्रिमंडल में ग्यारह नये मन्त्री नियुक्त। २० अक्तूबर : मल्हीपुर गांव (जिला सहारनपुर) में साम्प्रदायिक दंगा : दो मरे। २१ अक्तूबर : इटारसी के समीप पंजाब मेल की मालगाड़ी से टक्कर : २० मरे, ५० घायल। २२ अक्तूबर : ईरानी विमानों का बगदाद पर हमला। २३ अक्तूबर : सोवियत संघ के प्रधानमन्त्री अलैक्सी कोसीगिनका त्यागपत्र : निकोलाई तिखोनोव नये प्रधानमन्त्री। २४ अक्तूबर : असम आन्दोलन के बावजूद केन्द्रीय सरकार विदेशियों की खोजबीन का काम शुरू करेगी। ●

## पशुवध बन्द करने की अपील

बम्बई। केन्द्रीय गोरक्षा समन्वय समिति के मंत्री श्री मानव मुनि ने एक वक्तव्य में कहा है कि कर्नाटक सरकार पशुवध हेतु यान्त्रिक बूचड़-खाने खोलने की योजना बना रही है, जिसमें प्रति वर्ष हजारों पशु काटे जायेंगे। उन्होंने सभी धर्मों-सम्प्रदायों के अनुयायियों और धर्मगुरुओं से अपील की है कि वेअपने धर्म स्थानों में प्रस्ताव पारित कर कर्नाटक सरकार से मांग करें कि वह यांत्रिक कारखाना बनाने की योजना को स्थगित कर पशु रक्षा सदन स्थापित करे।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू रक्षा समिति क्या चाहती है ?

**—पंडिता राकेशरानी**

१५ अगस्त १९४७ को भारत विभाजन के साथ स्वाधीनता प्राप्ति के अवसर पर पंडित नेहरू ने कहा था कि 'हमने सिर कटाकर सिर दर्द की दवा पाई", लेकिन आज हमारी निराशा बढ़ जाती है, जब हम देखते हैं कि सिर तो कट गया, लेकिन सिर दर्द फिर भी दूर नहीं हुआ।

आज भी हमारे देश में साम्प्रदायिकता अपने निकृष्टतम रूप में विद्यमान है। विदेशी शक्तियों के प्रति निष्ठा रखने वाले तत्त्व किसी न किसी रूप में राष्ट्र विरोधी कार्रवाइयों में संलग्न हैं। हिंसात्मक साम्प्रदायिक दंगों का घिनौना रूप देखने में आ रहा है। 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' सदृश नारे अब भी हवा में गूंजते हैं। राष्ट्रीय ध्वज को अपमानित करने और जलाने के निर्लज्जतापूर्ण कृत्य किये जा रहे हैं। कुख्यात मुस्लिम लीग फिर से सक्रिय हो गई है और हमारे तथाकथित राष्ट्रीय नेता वोटों की खातिर उसके साथ समझौता करते हैं। जमाते इस्लामी साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व की मांग कर रही है और धमकी दे रही है कि वह कश्मीर की मुक्ति के लिए ईरान जैसी इस्लामी क्रान्ति करेगी। विभिन्न मस्जिदों से आये दिन अवैध आधुनिक हथियार बरामद हो रहे हैं और हमारी पुलिस और सेना को सीधे हिंसात्मक आक्रमणों का लक्ष्य बनाया जा रहा है। **यह बात भी कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं कि जामा मस्जिद के शाही इमाम को यह कहने का साहस होता है कि हिन्दुओं का तो कोई मजहब ही नहीं।** वोटों के लालच में हमारे किसी तथाकथित राष्ट्रीय नेता में साहस नहीं कि वह इस प्रकार की राष्ट्रविरोधी कार्रवाइयों की निन्दा करे। इतना ही नहीं, विशाल हिन्दू समाज की शक्ति को कम करने के लिए अल्पसंख्यकों और हरिजनों को संयुक्त रूप से हिन्दुओं के विरुद्ध खड़ा किया जा रहा है।

इस स्थिति में प्रबुद्ध देशवासियों के मन में एक ज्वलंत प्रश्न उभर रहा है कि क्या पाकिस्तान की स्थापना ने साम्प्रदायिक समस्या का समाधान कर दिया? इसका उत्तर सर्वथा नकारात्मक है। **सच्चा हिन्दू तो कभी साम्प्रदायिक हो ही नहीं सकता।**



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू विचारधारा में 'काफिर' जैसे शब्द के लिए कोई स्थान नहीं। हिन्दुओं की किसी विदेशी शक्ति के प्रति निष्ठा नहीं। उसके लिए राष्ट्रवाद धर्म की भांति पवित्र है—सारा राष्ट्र उसका परिवार है। देश के विभिन्न भागों में हाल के साम्प्रदायिक तनाव और दंगों ने यह बात स्पष्ट कर दी है कि इस देश के असहाय हिन्दू को भी किसी प्रकार की सुरक्षा की आवश्यकता है। हिन्दू समाज को यह सुरक्षा राजनैतिक दलों की तुष्टिकरण नीति, विदेशी एजेंटों के सांस्कृतिक आक्रमण और इस देश के सर्वनाश के लिए इस्तेमाल हो रहे हथियारों और धन के विरुद्ध अपेक्षित है। हिन्दू समाज पर हो रहे उपरोक्त आक्रमणों को ध्यान में रखकर हिन्दू रक्षा समित गठित की गई है। हमारा किसी से द्वेष नहीं। हां, हम यह अवश्य चाहते हैं कि हम इस देश में, जो हमारी अपनी भूमि है, सुख-सुविधा, सुरक्षा, शान्ति और सम्मान से रह सकें।

हिन्दू रक्षा समित के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं—

१. उन सब राष्ट्र विरोधी तत्त्वों से देश की रक्षा करना, जो किसी भी रूप में भारत की स्वाधीनता, सुरक्षा, सुख सुविधा, एकता और संस्कृति को हानि पहुंचाना चाहते हैं।

२. आरक्षण, विशेषाधिकार और मजहब के आधार पर कानून बनाने लिए की गई मांगों के फलस्वरूप पैदा होने वाले भेदभाव को मिटाना।

३. भारत को हानि पहुंचाने वाली सभी विदेशी शक्तियों की राष्ट्रविरोधी कार्रवाइयों और षड्यन्त्रों का विरोध करना।

४. नागरिक अधिकारों के क्षेत्र में मजहब के आधार पर भारतीय नागरिकों में कानूनी भेदभाव, प्रान्तीयता और दूषित विदेशी विचारधारा के विरुद्ध जन जागरण करना।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हिन्दू रक्षा समिति मांग करती है कि—

१. मजहब के आधार पर रिआयतें और आरक्षण मांगने वाले सब साम्प्रदायिक संगठनों पर रोक लगा दी जाये।

२. अल्पसंख्यक आयोग को भंग किया जाये।

३. पुलिस और सेना समेत सब सेवाओं में भरती के लिए साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व का सिद्धान्त लागू न किया जाये।

४. सारे देश पर एक-सी नागरिक संहिता लागू की जाये।

५. सब सीमावर्त्ती राज्यों में विदेशी घुसपैठियों पर कड़ी नजर रखी जाये और उनकी जांच की जाये।

६. इसी प्रकार सब विदेशी मिशनरियों, निर्धारित अवधि से अधिक समय तक भारत में ठहरने वाले पाकिस्तानियों और विदेशी एजेंटों पर कड़ी नजर रखी जाये और उनकी जांच की जाये।

७. समिति सरकार से मांग करती है कि वह तुष्टीकरण और 'फूट डालो व शासन करो' की नीति को अन्तिम नमस्कार करे।

८. विदेशी धन के आगमन पर कड़ी रोक लगा दी जाये और किसी भी रूप में इस प्रकार का विदेशी धन प्राप्त करने वाले व्यक्तियों, संस्थाओं और संगठनों पर कड़ी नजर रखी जाये।

९. समिति इस बात की विरोधी है कि दंगापीड़ितों में सरकारी सहायता बांटने के मामले में भेदभाव बरता जाये। समिति मांग करती है कि दंगों और हिंसात्मक कार्रवाइयों में भाग लेने वालों को किसी प्रकार की सहायता न दी जाये।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# भगवान् राम से शिक्षा ग्रहण करें

—श्रीमती निर्मल चोपड़ा (फैजाबाद)

आज भी हजारों लोग आपस में मिलते समय 'नमस्ते' के अर्थ में राम-राम कहते हैं। आखिर श्रद्धा का भाव यह क्यों ? इसका कारण है और वह यह कि भगवान् राम एक परम धार्मिक व्यक्ति थे। रामराज्य का अर्थ है धर्म राज्य। वाल्मीकि रामायण के अरण्य कांड में एक श्लोक आता है—

> धर्मादर्थः प्रभवति धर्मात्प्रभवते सुखम् ।
> धर्मेण लभते सर्वं धर्मसारमिदं जगत् ।।

अर्थात् धर्म से धन मिलता है, धर्म से सुख मिलता है, धर्म से सब कुछ मिलता है, इस संसार का सार धर्म ही है।

रामराज्य इतना श्रेष्ठ और आदर्श था कि वहां न तो विधवाओं का करुण क्रन्दन था, न दुष्टों का भय था और न रोग-शोक के कष्ट क्लेश थे। रामराज्य में प्रजा सुखी। तुलसीकृत रामायण में लिखा है।

> जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,
> सो नृप अवस नरक अधिकारी।

अर्थात् जिस राजा के राज्य में उसकी प्रिय प्रजा दुःखी हो, वह राजा निश्चित रूप से नरक में जायेगा।

भले ही उस काल में पश्चिम से आयात किया गया लोकतन्त्र प्रचलित न था, लेकिन राजा सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हुआ करता था -वह प्रथम नागरिक होता था। उसका जीवन तपस्वी होता था। महाराजा विक्रमादित्य के समय तक यह आदर्श निभाया जाता रहा। इतिहास बताता है कि महाराजा विक्रमादित्य चटाई पर सोते थे और अपने स्नान के लिए स्वयं क्षिप्रा नदी से जल भरकर लाते थे।

यह तो था तत्कालीन राज्य। अब जरा एक दृष्टि उनकी राजधानी पर भी डाल लें। त्रेतायुग में सरयू नदी के तटपर कोसल नाम का एक राज्य था। यह राज्य धनधान्य से भरपूर और समृद्धिशाली था। अयोध्या इसी राज्य की राजधानी थी। यह नगरी सम्पूर्ण संसार में विख्यात थी। सुन्दर इतनी कि मानो स्वयं मनुमहाराज ने उसका निर्माण किया हो। यह नगरी ४८ कोस लम्बी और १२ कोस चौड़ी थी। कर देने वाले अनेक राजा-महाराजाओं और अनेक देशों से आये व्यापारियों से वहां



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सदा चहल-पहल रहती थी। अयोध्या इन्द्रपुरी के समान थी। यहां का जल इतना स्वादिष्ठ और मधुर था, मानो गन्ने का रस हो।

इसी नगरी में महाराजा दशरथ रहते थे। वे वेदों के विद्वान् थे। प्रजा का पालन पिता की तरह किया करते थे। इन्हीं महाराजा दशरथ के चार पुत्र थे, जिनमें सबसे बड़े राम थे। प्रत्येक मनुष्य में वैसे तो अनेक गुण होते हैं, लेकिन कहते हैं कि उसका कोई एक गुण सब से अधिक उभरता है। यदि हम भगवान् राम के जीवन पर दृष्टि डालें, तो पायेंगे कि उनका सबसे बड़ा गुण यह था कि वे पिता की आज्ञा मानते थे। उनका आदर्श था—पितृ देवो भव अर्थात् पिता को देवता के समान समझो। पिता की आज्ञा मान कर वे चौदह वर्ष के लिए जंगलों में चले गये। हमारी लोकसभा के भूतपूर्व स्पीकर स्वर्गीय अनन्त शयनम् अय्यंगार विनोद में कहा करते थे कि यदि कलियुग में कोई पिता अपने पुत्र को चौदह वर्ष के लिए जंगलों में चले जाने को कहे, तो वह पहला काम यह करेगा कि कोई अच्छा-सा वकील करके अपने पिता के आदेश के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में परमादेश याचिका (रिट पैटीशन) दायर करेगा। आज का दिन उपयुक्त अवसर है—इस बात के लिए कि हम रामायण के सब चरित्रों पर एक नजर डालें और इस ग्रन्थ में चित्रित महापुरुषों के जीवन से शिक्षा ग्रहण करें।

भगवान् राम की चर्चा मैं संक्षिप्त रूप से कर चुका हूं। अब भगवती सीता को लीजिये। उत्तररामचरित में महा कवि भवभूति ने भगवती सीता को सम्बोधित कर रहे एक पात्र से कहलवाया है कि "सीता! तुम चाहे बच्ची हो अथवा किसी की शिष्या हो, तुम मेरी जो भी हो, वह सम्बन्ध बना रहे। लेकिन तुम इतनी पवित्र हो कि मेरी तुम्हारे प्रति भक्ति जागती है। तुम में बचपन है, तुम स्त्री हो, लेकिन तुम चाहे जो कुछ भी हो, तुम संसार की वन्दनीय हो। गुणियों में गुणों की पूजा होती है, उम्र या लिंग (अर्थात् स्त्री है या पुरुष) नहीं देखा जाता।"

जैसे भगवान् राम का विशिष्ट गुण पिता की आज्ञा का पालन करना है, वैसे ही भगवती सीता का विशिष्ट गुण पति के प्रति अटूट निष्ठा रखना है। जब लंका से लौट कर सीता अपनी निष्ठा का प्रमाण देने के लिए अग्नि परीक्षा तक में से गुजरने को तयार हो गई, तुम राम ने स्वयं यही कहा कि "निश्चित रूप से सीता तीनों लोकों में सर्वाधिक शुद्ध और पवित्र हैं। मैं सीता को उसी प्रकार नहीं त्याग सकता, जिस प्रकार सूर्य की रश्मियां कभी सूर्य का त्याग नहीं कर सकतीं।" यहां मैं यह भी लिख दूं कि राम द्वारा सीता के त्याग की कहानी कोरी गप है—वाल्मीकि रामायण में उसकी कहीं चर्चा तक नहीं।

सीता का चरित्र पावन है। जैसे सूर्य के प्रकाश में १०० नम्बर के बल्ब का भी प्रकाश दब जाता है, वैसे ही सीता के ऊंचे और जगविख्यात चरित्र के प्रकाश में लक्ष्मण की जीवन-संगिनी ऊर्मिला का चरित्र दब गया है। अन्यथा उसका त्याग—उसकी तपस्या भी कुछ कम नहीं। ऊर्मिला ने राम और सीता की खातिर चौदह वर्ष तक एकाकी जीवन व्यतीत किया। ऊर्मिला की सही पहचान नहीं हुई। अन्यथा सतीत्व और व्रतपालन की दृष्टि से उसका स्थान बहुत ऊंचा है।

लक्ष्मण स्वाभाव से उग्र हैं। जब दशरथ को विवश कर दिया गया कि वे राम को चौदह वर्ष के लिए जंगलों मे भेज दें, तब उन्होंने राम को सलाह दी कि वे पिता की आज्ञा न मानें और बलपूर्वक राज्य पर अफिकार कर लें। इस कार्य में लक्ष्मण ने



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने राम को अपना सहयोग प्रस्तुत किया। लक्ष्मण अन्याय सहने वालों में से न थे। दूसरी ओर राम शान्त स्वभाव के थे। दोनों की तुलना निरर्थक है—इसलिए निरर्थक है कि किन्हीं भी दो मनुष्यों का स्वभाव नहीं मिलता। किसी में सतोगुण की प्रधानता है, किसी में रजो गुण की और किसी में तमोगुण की, कुछ लोग केवल साध्य की पवित्रता को आवश्यक मानते हैं, तो कुछ साध्य और साधन दोनों की पवित्रता को। वर्तमान युग में भी गान्धी और सुभाष के चरित्र में यह अन्तर स्पष्ट झलकता है। अस्तु। उग्र होते हुए भी लक्ष्मण का चरित्र गंगा जल की भाँति शुद्ध है। जब सीता के आभूषण लक्ष्मण को दिखाकर उनसे उन्हें पहचानने को कहा गया, तब उन्होंने कहा कि "मैं केयूर नहीं पहचान सकता और न ही कुण्डल पहचान सकता हूं। हां नूपुर पहचान सकता हूं क्योंकि मैं प्रतिदिन उनके चरणों में सिर झुकाकर उन्हें प्रणाम किया करता था।" लक्ष्मण के मन में अपने भाई राम के लिए जो भक्तिभाव था, राम के हृदय पर उसका गहरा असर था। ऐसा नहीं था कि लक्ष्मण के भक्तिभाव के बावजूद राम उनकी उपेक्षा करते हों। जब लक्ष्मण मूर्छित हो गये, तब राम ने कहा था कि "संसार में सब कुछ मिल सकता है, लेकिन सगा भाई चला जाये, तो वह दुबारा नहीं मिल सकता।" जब हम कहते हैं कि फलां आदमी हमे भाई से भी बढ़कर प्रिय है, तब हम वस्तुतः भ्रातृत्व भावना के सामने ही नतमस्तक हो रहे होते हैं। इस आलंकारिक कथन का यह अर्थ नहीं कि कोई व्यक्ति भाई से बढ़कर हो सकता है।

भरत के भ्रातृप्रेम का अपना ही स्थान है। वे राम को लौटा लाने के लिए उनका पीछा करते हैं और उनके इनकार पर उनकी पादुकाओं को चौदह वर्ष के लिए राजसिंहासन पर प्रतिष्ठित कर देते हैं। स्वयं राजधानी से दूर एकान्तवास और तपस्या करते हैं। हां, शासन में शिथिलता नहीं आने देते।

यह संसार द्वन्द्वात्मक है। रात और दिन, सुख और दुःख, अन्धकार और प्रकाश, स्त्री और पुरुष—इस प्रकार हम देखते हैं कि सब कुछ जोड़ों में है। राम के जीवन की विशेषताएं हैं कि वे इन द्वन्द्वों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देते अपितु इन पर हावी रहते हैं। कवि के शब्दों में "जब राम को राज्याभिषेक की सूचना दी गई और जब उन्हें जंगलों में चले जाने को कह दिया गया, इन दोनों स्थितियों में मैंने उनके चेहरे पर थोड़ा-सा भी अन्तर नहीं देखा। गीता में इसी स्थिति को ब्राह्मी स्थिति अथवा स्थितप्रज्ञता की स्थिति कहा गया है।

राम केवल हमारे देश में पूजे जाने वाले महापुरुष नहीं। दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक देशों में उनकी पूजा होती है। रामचरित्र इतना प्रेरणादायक है कि कवि के शब्दों में—

"राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि हो जाय सहज सम्भाव्य है।"

राम अपने वचन के पक्के हैं। कहा भी है—रामो द्विर्नाभिभाषते अर्थात् राम दोमुंही बात नहीं करते। तुलसीदास जी के शब्दों में—

रघुकुल रीति सदा चलि आई,
प्राण जाई पर वचन न जाई।

कई लोग पूछते हैं कि आखिर प्रतिवर्ष रामलीला का अभिनय करने और रावण, मेघनाद और कुम्भकर्ण के पुतलें जलाने का प्रयोजन क्या है? मेरा निवेदन



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह है कि रामायण ऐतिहासिक ग्रन्थ हो अथवा काल्पनिक गाथा, दोनों स्थितियों में इसमें यह समझाने का प्रयत्न किया गया है कि मनुष्य के मन में द्वन्द्व उठते रहते हैं—देवासुर संग्राम छिड़ा रहता है। कभी देवत्व की विजय होती है और कभी आसुरी भावनाएं जोर पकड़ लेती हैं। राम और रावण दैवी और आसुरी भावनाओं के प्रतीक हैं। वैसे रावण से हमारी कोई शत्रुता नहीं। वह चारों वेदों, छहों शास्त्रों का ज्ञाता था। उसने वेदों का भाष्य किया था। आज भी दक्षिण भारत में उसकी पूजा होती है। उसने गलती यहीं की कि शूर्पणखा के अपमान से क्षुब्ध होकर सीता का अपहरण किया है। लेकिन इतिहास साक्षी है कि उसने कभी सीता के साथ दुर्व्यहार नहीं किया। आगे चलकर इसी आदर्श को छत्रपति शिवाजी महाराज ने भी निभाया। मेरो प्रभु से प्रार्थना है कि वह दिन शीघ्र आये, जब हम रावण का पुतला जलाने की बजाय अपने अन्तस् में बैठे रावण अर्थात् कुविचारों से छुटकारा हासिल करें। आक्रामक विदेशी संस्कृति के रूप हमारे सामने जो खतरा आज उपस्थित है, उसका प्रतिरोध करें—उसे Resist करें। आज हमारी नई पीढ़ी अपने गौरवपूर्ण प्राचीन इतिहास से अनभिज्ञ होती जा रही है। आज उसके कानो में हर्कुलिस का नाम डाला जाता है, लेकिन महावीर हनुमान् का इतिहास उसे नहीं सुनाया जाता। मैं तो कहूंगा कि इतिहास लेखकों ने जैसा अन्याय हनुमान् के साथ किया है, वैसा बहुत कम इतिहास पुरुषों के साथ हुआ है। हनुमान् का चेहरा बन्दर जैसा बनाना और उसकी पूंछ दिखाना बहुत ही गलत चित्रण है। वाल्मीकि रामायण तो बताती है कि "जैसी बातें हनुमान् करते थे, ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद का पंडित ही वैसी बातें कर सकता है।" स्वामी भक्ति में उसका कोई मुकाबला नहीं। उसका आत्मविश्वास प्रशंसनीय तो है ही, अनुकरणीय भी है। वह वानर जाति का था, बन्दर नहीं था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हम रामायण के सभी पात्रों से कोई न कोई शिक्षा ले सकते हैं। इन शिक्षाओं पर चलकर हम पुनः वैभव के उच्चतम शिखर तक पहुंच सकते हैं।

शानदार था भूत, भविष्यत् भी महान् है,
अगर संभालें आप उसे, जो वर्त्तमान है।

---

## शिक्षण संस्थाओं को निर्देशिका

सार्वभौम आर्यसमाज शिक्षण संस्था परिषद् की ओर से १९६२ में प्रकाशित आर्यसमाज शिक्षण संस्थाओं का परिचय देने वाली निर्देशिका (डायरेक्टरी) का तृतीय संस्करण आर्यसमाज शिक्षा सभा, अजमेर द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं का परिचय, संक्षिप्त विवरण, प्रमुख कार्यकर्ताओं का परिचय, चित्र आदि प्रकाशित होंगे। जिन संस्थाओं ने अभी तक अपना परिचय, विवरण, चित्र आदि न भेजा हो, वे शीघ्र ही निम्नलिखित पते पर भेजने का कष्ट करें—

मंत्री
आर्यसमाज शिक्षा सभा;
द्वारा आर्यसमाज केसरगंज, अजमेर



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# हिन्दू बनो!

१. चोटी रखो।
२. यज्ञोपवीत पहनो।
३. मम्मी-डैडो-अंकल-आंटी कहना छोड़ो।
४. घरों में पैंट का प्रयोग बन्द करो
५. अपनी भाषा, वेश-देश-साहित्य-धर्म से अपने बच्चों को परिचित कराओ।

हिन्दुओ जागो! देश बचाओ!

---


# स्वामी दयानंद सरस्वती

का

जीवन चरित्र

मूल्य २) : १००) सैकड़ा

अधिक से अधिक बांटें

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, नई दिल्ली-५




Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# क्या ईसा खुदा का बेटा था ?

ईसाई धर्म को स्थापित हुए १९८० वर्ष होते हैं। इस धर्म के एक दो प्रचारक भारतवर्ष में पहली शताब्दी में ही आ गये थे। परन्तु उनका प्रवेश पहले मद्रास प्रान्त में ही हुआ था। उनकी संख्या भी उँगलियों पर गिनी जा सकती थी। आरम्भ में हिन्दुओं ने उनकी ओर विशेष ध्यान न दिया और उनके धर्म की विवेचना भी न की। जो थोड़े से ईसाई हो गये उनको हो जाने दिया। यह हिन्दुओं की सर्वथा भूल थी। किसी नई बात की उपेक्षा ठीक नहीं होती। उसकी जांच करनी ही चाहिये।

अब ईसाई बढ़ने आरम्भ हुए। उन्होंने अपने प्रचार के बहुत से ढङ्ग निकाले। उन्होंने हिन्दू धर्म के विरुद्ध पुस्तकें लिखनी और उसके दोष बताने आरम्भ किये। हजारों छोटी बड़ी पुस्तकें हिन्दू धर्म की मीमांसा में लिखी गयीं और अपने धर्म से अपरिचित हिन्दुओं को उनके धर्म की बुराई दिखा-दिखा कर अपने धर्म को छोड़ने तथा ईसाई धर्म को ग्रहण करने के लिये प्रेरणा करते रहे।

इसका नतीजा यह हुआ कि समस्त भारत में ईसाइयों की संख्या बढ़ती जा रही है। सारा पूर्वांचल-झारखंड-केरल आज इन के षड्यन्त्रों के केन्द्र बन चुके हैं।

ऐसी परिस्थिति में आवश्यक प्रतीत होता है कि जिस धर्म को ग्रहण करने के लिये हिन्दू अपने धर्म को त्यागरहे हैं उसकी जांच पड़ताल की जाय। यदि ईसाई धर्म अन्य धर्मों की अपेक्षा अच्छा है तो प्रत्येक को ईसाई हो जाना चाहिये। परन्तु यदि ईसाई धर्म बहुत सी भ्रममूलक बातों से भरा है तो बिना सोचे विचारे अपने बाप दादा के धर्म को छोड़ कर ईसाई धर्म की भूल-भुलयों में फँसना बहुत बड़ी मूर्खता है। सब से पहले सोचिये कि ईसा मसीह कौन थे ?

ईसाई लोग कहते हैं कि ईसा मसीह ईश्वर के पुत्र थे और कुँआरी मरियम के पेट से उत्पन्न हुए थे। यह ईसाइयों का मौलिक सिद्धान्त है। जो पुरुष ईसा मसीह को अच्छा पुरुष तो माने परन्तु ईश्वर का पुत्र न माने वह ईसाई नहीं और न वह ईसाई है जो यह नहीं मानता कि ईसा कुँआरी मरियम के पेट से पैदा हुए थे।

अर्थात् ईसा मसीह का कुँआरी मरियम के पेट से बिना किसी पुरुष के संयोग के पैदा होना और उसका खुदा का बेटा होना — ये दोनों बातें ईसाई धर्म का मूलाधार मानी जाती हैं, जिन पर विश्वास किये बिना कोई ईसाई हो ही नहीं सकता। यहां हम इन दोनों बातों की विवेचना करना चाहते हैं।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
... बच्ची उत्पन्न कर सकती है ?
अर्थात् क्या बिना पुरुष के संयोग से कोई स्त्री बच्ची उत्पन्न कर सकती है ?
दूसरे "ईश्वर के पुत्र" ऐसा कहने का क्या अर्थ है ?

संसार का नियम बताता है कि बिना माता पिता के संयोग के कोई उत्पन्न नहीं हो सकता। परन्तु ईसाई लोग बिना किसी ऐतिहासिक आधार के मान बैठे हैं कि हजरत ईसा मसीह कुँआरी मरियम से उत्पन्न हुए थे।

श्री ईसा मसीह जी की उत्पत्ति के विषय में बाइबिल में जो लिखा है उसे हम देते हैं :—

"यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ। जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ से हुई तो उनके इकट्ठे होने से पहिले वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। (१८)

तो उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था उसको बदनाम करना न चाहकर उसे चुपके से त्यागने की मनसा की। (१९)

जब यह इन बातों के सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा हे यूसुफ, दाऊद के सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां लाने से मत डर क्योंकि जो उसके गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की ओर से है। (२०)

वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से छुड़ायेगा। (२१)

(मती १। १८ से २१)

इन आयतों में कौन सी ऐसी बात है जिस पर कोई बुद्धिमान् विश्वास कर सके। क्या यूसुफ का स्वप्न भी कोई ऐसी घटना है जिसको कोई ऐतिहासिक सच मान सके। इस प्रकार के स्वप्न तो लोग नित्य प्रति देखा करते हैं। यदि यह मुकदमा किसी न्यायालय या कोर्ट में पेश हो तो क्या कोई न्यायाधीश इस स्वप्न के आधार पर कोई निर्णय कर सकेगा ? कदापि नहीं।

मार्क की इंजील में लिखा है :—

"And there came a voice from heaven saying thou art my beloved son, in whom I am well pleased."

अर्थात् "आकाश से आवाज आई जिसने कहा कि तू मेरा प्यारा पुत्र है जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूं।"

(मार्क, अध्याय १, आयत ११)

यह आयत भी ईसा का ईश्वरीय पुत्र होना सिद्ध नहीं करती। आकाश से आवाज आने का न तो कुछ अर्थ ही है न प्रमाण। आजकल बहुत से आकाशवाणी (Ventrilocution) वाले फिरा करते हैं। उनकी आवाज को कोई खुदा की आवाज नहीं कहता। दूसरी बात यह है कि इस आवाज को किसने सुना ? कब सुना ? किसके सामने सुना ? इस सब का प्रमाण होना कठिन है। मरकस या मार्क तो उस समय था नहीं, उसने तो सुनी सुनाई बात लिख दी। ऐसी सुनी सुनाई बात का विश्वास ही क्या ? जब तक ऐसे योग्य


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और विश्वसनीय व्यक्ति इसको प्रमाणित न करें, जिनकी बुद्धिमत्ता और सचाई पर कोई सन्देह हो ही नहीं सकता उस समय तक जो कोई विश्वास करता है वह अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय नहीं देता।

इसी प्रकार लूकस की इंजील के पहिले अध्याय में लिखा है कि एक फरिश्ता आया और मरियम से कह गया कि बिना पुरुष के संयोग से तेरे एक पुत्र होगा और वह संसार का उद्धार करेगा। यहाँ भी फरिश्ते के आने और मरियम से कहने का कोई प्रमाण ही क्या है। न जाने किसने ऐसी बातें अपने मन से गढ़ लीं। प्रथम तो फरिश्ता क्या चीज है और ईश्वर उसको कहां से और क्यों भेजता है यही एक प्रश्न है। दूसरी बात यह है कि लूकस ने भी यह बात सुनी सुनाई ही कही है, उसके कानों सुनी और आंखों देखी बात तो है नहीं। इंजील से यह भी नहीं सिद्ध होता कि मरियम के पास कौन और ऐसे विश्वसनीय मनुष्य थे जिन्होंने जिबराईल फरिश्ते की बात सुनी। लूकस और मती दोनों के वचनों में भेद क्यों है ? मती तो यूसुफ के स्वप्न का वर्णन करता है और लूकस फरिश्ते के मरियम के पास आने का। किस पर विश्वास किया जाय और किस पर न किया जाय। यदि आज कोई मनुष्य आकर आपसे कहे कि मुझे ऐसा स्वप्न हुआ है अथवा कोई स्त्री फरिश्ते के आने का वर्णन करे तो क्या आप विश्वास कर लेंगे ?

यह ईसाइयों का विचित्र भोलापन है। एक अंगरेजी लेखक ने सच कहा है :—

"If in the creed there are two clauses more than any others that ought to be expunged, assuredly they are, "was conceived by the Holy Ghost" and "Born of the virgin Mary." It is scarcely possible without irreverence. and happily it is not necessary to state in plain language what the inevitable implications of these clauses are to those who accept them tn their literalness, as so many people do."

(Westaway's Science & Theology, P. 3˙0)

अगर इसके विश्वास-पत्र में से कोई दो वाक्य सबसे अधिक निकाल देने योग्य हैं तो वे ये हैं "पवित्रात्मा द्वारा गर्भवती हुई" और "कुँआरी मरियम से उत्पन्न हुआ।" क्योंकि जो लोग इनको अक्षरशः सच मानते हैं उनके प्रति इन दोनों वाक्यों के सब अर्थों को खोल कर रख देना बिना अशिष्ट हुए सम्भव नहीं।

हम भी यहाँ इससे अधिक कहना नहीं चाहते। दूसरा प्रश्न यह है कि "ईश्वर का बेटा" इस पद का अर्थ क्या है।

एक प्रकार से देखा जाय तो संसार के सभी प्राणी ईश्वर के पुत्र हैं क्योंकि ईश्वर सब को बनाता है और उनका पालन करता है। चाहे वे मनुष्य हों या पशु, पक्षी। परन्तु ईसाई लोग इस अर्थ में ईसा को ईश्वर का पुत्र नहीं मानते। वे तो कहते हैं कि ईसा मसीह ईश्वर का इकलौता पुत्र था। इस बात से उनका क्या तात्पर्य है यह कोई ईसाई नहीं बताता। पुत्र का साधारण अर्थ सब समझते हैं। कोई पुरुष दूसरे पुरुष का पुत्र तभी कहलाता है जब उसके शारीरिक संयोग से उसकी उत्पत्ति हुई हो। ईश्वर


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तो शरीरधारी है नहीं। फिर मरियम को ईश्वर की स्त्री मानना अथवा मरियम के लड़के ईसा को ईश्वर का पुत्र मानना कैसे बन सकता है? यदि सभी पुरुष ईश्वर के पुत्र हैं तो सभी स्त्रियां ईश्वर की पुत्री हैं। इस अर्थ में मरियम भी ईश्वर की पुत्री थी। फिर मरियम का लड़का ईसामसीह ईश्वर का "इकलौता पुत्र" कैसे हुआ?

दूसरा प्रश्न यह है कि क्या ईसा का शरीर ईश्वर का पुत्र था या आत्मा? यदि कहो कि ईसा का आत्मा ईश्वर का पुत्र था क्योंकि ईश्वर ने उसको बनाया तो इस अर्थ में उसके मत के अनुसार सभी आत्मा ईश्वर के पुत्र हैं। इसमें विशेषता क्या है? यदि कहो कि ईसा अपने शरीर के साथ ईश्वर का पुत्र हुआ तो मृत्यु के पश्चात् ईसा ईश्वर का पुत्र रह गया या नहीं' क्योंकि शरीर तो यहीं रह गया। यदि कहो कि ईसा कुँआरी के पेट से पैदा होने के कारण ईश्वर का पुत्र हुआ तो इसके लिये कोई उचित प्रमाण चाहिये। क्योंकि कुँआरी के पेट से उत्पन्न होना एक असम्भव बात है। यह सिद्धान्त इतना कच्चा है कि कोई बुद्धिमान् इसको मान नहीं सकता। इस प्रश्न की यदि विवेचना की जाती है तो ईसाई लोग अप्रसन्न हो जाते हैं और कहने लगते हैं कि हमारे बड़ों का अपमान किया जा रहा है। परन्तु यह नहीं सोचते हैं कि उन्होंने ऐसा भौंडा सिद्धान्त क्यों मान रक्खा है और दूसरों को इस सिद्धान्त को मानने की प्रेरणा क्यों करते हैं? सीधे-सीधे क्यों नहीं मान लेते कि ईसा मसीह युसुफ बढ़ई के पुत्र थे और उसी प्रकार माता-पिता के संयोग से उत्पन्न हुए थे जिस प्रकार संसार के सब छोटे बड़े मनुष्य उत्पन्न होते हैं।

बाइबिल में भी यह लिखा है कि ईसा मसीह यूसुफ बढ़ई के पुत्र थे। उनकी माता श्रीमती मरियम जी की मँगनी यूसुफ से हो चुकी थी। यही समझ में भी आ सकता है। यह भी एक अनोखी बात है कि कुँआरी से पैदा होने से ईश्वर का पुत्र कहलाने लगे। यह कौन सी युक्ति है?

यदि यह कहा जाय कि माता-पिता का संयोग पापसूचक है इसलिये ईसामसीह की उत्पत्ति मानने के लिए कोई निष्पाप विधि चाहिये तो यह भी ठीक नहीं। जब ईश्वर ने सृष्टि उत्पत्ति का यह नियम बना दिया कि माता पिता के संयोग से ही सन्तान उत्पन्न हो तो इसमें पाप क्या? क्या तुक समझते हो कि इतने बड़े पुरुष जो माता पिता के संयोग से उत्पन्न होते हैं पाप से हुए हैं? क्या कोई पादरी इसको स्वीकार करेगा?

यदि कहो कि ईसा मसीह की उत्पत्ति विचित्रता उत्पन्न करने के लिये है तो भी ठीक नहीं। यह कौन सी विचित्रता है? यदि ईश्वर को अपना इकलौता पुत्र विचित्र रीति से उत्पन्न करना था तो माता पिता दोनों के बिना उत्पन्न करता। ईसाई मानते हैं कि आदम माता पिता के बिना उत्पन्न हुए थे। वह ईश्वर के इकलौते क्यों नहीं। यदि उनको भी इकलौता मानें तो दो इकलौते हो जाते हैं। यह बात ईसाइयों की ही बुद्धि में आ सकती है। बात यह है कि कुँआरी से उत्पत्ति का सिद्धान्त भ्रान्तिपूर्ण, सृष्टि-क्रम के विपरीत सन्देह-उत्पादक, सर्वथा अप्रामाणिक और अमाननीय है। ईसाई कहते हैं कि ईसा की उत्पत्ति रहस्यमय है। उसकी मीमांसा नहीं की जा सकता। परन्तु



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यदि ऐसा ही है तो वह हिन्दुओं या दूसरे धर्म वाले रहस्यों का क्यों खण्डन करते हैं ? श्री कृष्ण ने पहाड़ उँगली पर उठा लिया ! कैसे ? उसी तरह जैसे ईसा मसीह कुँआरी से पैदा हो गये ! हनुमान् ने सूरज गाल में रख लिया कैसे? यदि ईसा की उत्पत्ति में रहस्य है तो इसमें भी रहस्य है! इस प्रकार तो पुरानी किसी भी असम्भव गप को रहस्य कह सकते हैं।

कुछ ईसाइयों का मत है कि आदम और हव्वा ने शैतान के कहने से ज्ञान के वृक्ष का फल खाकर ईश्वर की आज्ञा भंग की थी, यही पाप मनुष्य को लगता चला आता है। और इसी पाप से बचाने के लिए ईसा मसीह को बिना बाप के निष्पाप रीति से उत्पन्न किया गया। क्योंकि यदि ईसा मसीह को यूसुफ का बेटा माना जाय तो यूसुफ आदम की सन्तान था, उसके शरीर में आदम के पाप का कुछ अंश था। परन्तु ईसाई लोग इस बात में कैसी भूल करते हैं। वे तनिक नहीं सोचते कि यदि यूसुफ के शरीर में पाप का अंश हो जाने से उनकी सन्तान पापी हो सकती है तो मरियम के शरीर में क्या आदम और हव्वा का अंश न था और क्या इस कारण उसके शरीर का अंश ईसा के शरीर में न आया होगा ? यह कौन-सी युक्ति है कि पिता के शरीर का पाप तो सन्तान के शरीर में जाय और माता के शरीर का पाप न जाय? कौन कह सकता है कि स्त्रियाँ आदम और हव्वा के पाप में शमिल नहीं।

इसी प्रकार ईसाई लोग मानते हैं कि ईसा को जब सूली दी गई तो वह तीसरे दिन जी उठा। जो कोई ईसा के इस तीसरे दिन जी उठने को नहीं मानता वह भी ईसाई नहीं है। ईसाई होने के लिये इस सिद्धान्त को मानना भी जरूरी है। अब कोई उनसे पूछे कि जब ईसा को सूली दी गई तो वह मरा या नहीं ? यदि मर गया तो उसका आत्मा अवश्य ही शरीर को छोड़ कर चला गया होगा। 'मरना' कहते ही उसको हैं जब आत्मा शरीर को छोड़ कर बिलकुल बाहर निकल जाय। यदि ईसा की सूली पर मौत हो गयी तो उसकी लाश में बिलकुल जान न रही। लाश मौत के बाद ही सड़ने लगती है। फिर तीसरे दिन लाश कैसे उठ खड़ी हुई? यदि कहो आत्मा दुबारा आकर जी उठा तो यह पुनर्जन्म हो जायगा। ईसाई लोग तो पुनर्जन्म को मानते नहीं। यदि कहो कि जब सूली लगी थी तो ईसा का आत्मा शरीर से निकला नहीं था केवल मूर्छा आ गई थी तो यह माना जा सकता है परन्तु इसमें ईसा की विचित्रता और विशेषता नहीं रहती। संसार में ऐसे बहुत से पुरुष हैं जो कई दिन मूर्छा में पड़े रहते हैं और फिर जीवित हो जाते हैं। यह साधारण सी बात है। इसको ईसाइयों ने बतंगड़ बना कर संसार को फँसा रक्खा है।

एक और बात है जिस पर ईसाई मत का आधार है और जो समझ में नहीं आ सकती। ईसाई मानते हैं कि ईसा ने सब लोगों के पाप के बदले सूली पाई और जो उस पर विश्वास करेगा वह पापों से छूट कर मुक्ति पा जायगा। यह भी लोगों को बहकाने की बात है। सब मनुष्य जैसा करते है वैसा भोगते हैं। जैसी करनी वैसी भरनी। एक के कर्म का फल दूसरा कैसे भोग सकता है ? इससे तो ईश्वर का न्याय नहीं रहता। यदि कहो कि ईश्वर ने अपने इकलौते लड़के को संसार में भेजा कि लोग पाप से छूट जायें। तो यह इकलौत लड़का सृष्टि की आदि में क्यों न भेजा ? ईसा से पहले लाखों वर्ष तक करोड़ों मनुष्य जीते और मरते रहे। उन्होंने पाप भी किये होंगे। फिर उनके पापों का कफारा ईसा की सूली से कैसे हुआ ? यदि कहो ईसा सूली पाकर



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने जीवन से पहले आये हुए और पीछे आने वाले सबके पापों का कफारा दे गया, तो इसका तो यही अर्थ होगा कि अब जो कोई कुछ भी पाप करेगा उसकी सजा नहीं पावेगा चाहे ईसा पर विश्वास करे या न करे। जब ईसा ने एक बार हमारे सब पापों का बदला चुका दिया तो क्या आवश्यकता है ईसा पर विश्वास लाने की। ईसा पर विश्वास न लाना भी तो एक पाप है। क्या यह पाप इतना भारी है कि ईसा ने इसका बदला नहीं चुकाया। यदि ईसा इसीलिए उत्पन्न हुआ था कि सब मनुष्यों के सब पाप अपने सिर पर ले जाये तो क्या वह अपने नाम का ऐसा भूखा है कि जो उस पर विश्वास नहीं करता उसको स्वर्ग से ढकेल देगा और जो विश्वास रखते हैं उनको स्वर्ग में आने देगा ? वस्तुतः ईसा का सूली पाकर मनुष्यों के पाप का कफारा देना एक ढोंग है और विचारशून्य पुरुषों को बहकाने के लिये है।

यदि कहो कि ईसा पर विश्वास करने मात्र से स्वर्ग नहीं मिलता, शुभ कर्म करने से मिलता है तो इसमें ईसाई धर्म की क्या विशेषता है ? वैदिक धर्मी भी यही कहते हैं कि शुभ कर्म करने से मोक्ष होगा, दुष्ट कर्म करने वाले की न ईसा सहायता कर सकते हैं न कोई और। फिर क्यों हम अपना धर्म छोड़ कर ईसाई होवें ? ईसा के परमेश्वर के पुत्र का ढकोसला क्यों रख छोड़ा है ?

हमको ईसाई धर्म में ऐसी कोई बात प्रतीत नहीं होती जिसके लिये उच्च वैदिक धर्म को छोड़ा जाय। वस्तुतः वैदिक धर्म में ईश्वर और जीव के स्वरूप तथा मुक्ति लाभ के साधनों का जितना अच्छा वर्णन है उतना अन्य किसी धर्म में नहीं है। लोगों को चाहिए कि सत्य सनातन वैदिक धर्म पर चलें और मिथ्या बातों को छोड़ दें।

---

# ईसाई क्यों बनते हो ?

दुनिया में जब से वैदिक धर्म का सूरज छिप गया बहुत से मत मतान्तर फैल गये। इनमें से एक ईसाई मत है। इसका प्रचार भारतवर्ष में भी फैल रहा है। गाँवों और जंगली जातियों के बीच में आप सफेद लम्बाचोगा पहने हुए ईसाई पादरियों को देखेंगे जो लोगों को ईसाई बनाने का उपदेश देते रहतेहु हैं, इनके उपदेशों का सार यह है :—

(१) ईसा खुदा का इकलौता बेटा था।

(२) वह कुंआरी मरियम के पेट से पैदा हुआ था। उसका कोई इनसानी बाप न था। उसका बाप ईश्वर स्वयं है।

(३) दुनियाँ को कष्ट और पाप में देखकर खुदा ने अपने इकलौते बेटे को दुनियां में भेजा।

(४) उसने सब मनुष्यों के पापों की गठरी को अपने सिर पर रखा और हमारे सुख के लिये सूली पर चढ़ गया।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(५) उसके बलिदान से सब मनुष्यों के पाप छूट गये।

(६) जो ईसा मसीह पर विश्वास रक्खेंगे उनके पाप छूट जायेंगे और वह आसमानी बादशाहत अर्थात् स्वर्ग में चले जायँगे।

(७) जो ईसा पर ईमान नहीं लायेंगे वे पापी हैं। नरक की आग में जलते रहेंगे।

इसी प्रकार की अनेक बातें ये पादरी लोग भारतवासियों को सुनाया करते हैं। और जो उनके बहकाने में आ जाते हैं वे वेद, शास्त्र, गीता, उपनिषद् आदि श्रेष्ठ शास्त्रो को छोड़कर कुमार्ग का आश्रय ले लेते हैं। उनको अपनी सभ्यता और संस्कृति पर विश्वास नहीं रहता और वे हैट, बूट और पेंट पहन कर पक्के साहब बन जाते हैं। राम और कृष्ण को मूर्ख समझते और विदेशियों के पीछे लग पड़ते हैं। जो बुद्धिमान् हैं वे उनके जाल में नहीं फँसते और उलटा युक्तियों द्वारा ही ईसाई पादरियों का मुँह बन्द कर देते हैं।

हम लोगों से कहते हैं कि भाई ! ईसाई मत में कोई ऐसी विशेष बात नहीं जिसके लोभ से हम ईसाई हो जावें।

आप सोचिये, ईश्वर हम सब का बाप है और हम सब उसके पुत्र हैं। एक पुत्र नहीं करोड़ों पुत्र हैं। संसार भर के जितने मनुष्य हैं चाहे नर हों या नारी सभी तो उसकी सन्तान हैं। वह सबको बनाता, सबको प्यार करता और सबको रोज़ी देता है। उसने ईसा को भी बनाया और दूसरे लोगों को भी। फिर ऐसा झूठ क्यों कहते हो कि ईसा परमेश्वर का इकलौता बेटा था। इकलौता बेटा तो तब होता जब उसके कोई और बेटा बेटी न होते। ईसा पैदा हुआ, थोड़े दिनों जीता रहा और फिर ईसा की मृत्यु हो गई उसकी कब्र यरूशलम में बनी हुई है। ईसा का तो आजकल दुनियां में कहीं पता नहीं है। फिर क्यों कहते हो कि ईसा इश्वर का इकलौता बेटा था। सृष्टि के आरम्भ से आज तक लाखों महापुरुष; सन्त, महात्मा, परोपकारी, दयालु, दानी और वीर ऋषि और मुनि उत्पन्न हुए। वे सब ईश्वर के पुत्र थे और ईश्वर की भक्ति किया करते थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक श्रेष्ठ और पुण्य के काम किये,। किसी ने उनको ईश्वर का इकलौता बेटा नहीं कहा। फिर ईसा ही ईश्वर का इकलौता बेटा क्यों माना जाये।

तुम कहते हो कि ईसा बिना बाप के कुंआरी मरियम के पेट से उत्पन्न हुआ, यह गप है। इसको कोई बुद्धिमान् पुरुष मान नहीं सकता। क्या तुम्हारे पास कोई ऐसा उदाहरण है जिससे पता चले कि इस दुनियां में कौन मनुष्य केवल माता के पेट से बिना पिता के संसर्ग के उत्पन्न हुए हों। यह तो सृष्टि नियम के सर्वथा उलट है।

न केवल पिता पुत्र को उत्पन्न कर सकता है, न केवल माता। सृष्टि का नियम यह है कि माता पिता दोनों के संयोग से ही सन्तान उत्पन्न होता है। पुराने जमाने में भी ऐसा होता था, अब भी ऐसा होता है और आगे भा ऐसा ही होगा। इसलिये ईसा के कुंआरी से पैदा होने की बात झूठी है और तुम बिचारी मरियम के माथे पर बिना कारण के कलंक का टीका देते और दुनियां को बहकाते फिरते हो। यह पुण्य नहीं है।

तुम कहते हो कि उत्पत्ति पाप कर्म से नहीं हुई। इसलिये ईश्वर ने ईसा


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
चाहिये कि ईसाईयों को प्रेम से समझा कर अपने धर्म में मिला लें। और भारत के ईसाईयों को भी चाहिये कि वैदिक धर्म का स्वाध्याय करके उसके मन्तव्यों को स्वीकार करें। मांस, शराब छोड़ दें और समस्त भारत में एकता का संचार हो जाय।

इस विषय में हिन्दुओं का भी कर्तव्य है। हमको किसी ईसाई से घृणा नहीं करनी चाहिये और भारतवर्ष में जो अशिक्षित और जंगली जातियां हैं उनको सब को मिला कर सभ्य बनाना चाहिये।

यूरोप के बहुत-से विद्वान् ईसाई मन्तव्यों को छोड़ते चले जाते हैं। वे यह नहीं मानते कि ईसा पर ईमान लाने से ही किसी जाति की उन्नति हो सकती है। वस्तुतः उन्नति तो सदाचार, ज्ञान, विज्ञान तथा प्रेम से होती है। गीता में लिखा है —

'शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।'

वेद कहता है—सब को मित्र की आंख से देखो।

---


# भारी संख्या में मंगायें
# और
# भारत को बचायें
# मंगायें : पढ़ें : बांटें

| | | |
|---|---|---|
| १. | चुनौती : इस्लामी साम्राज्यवाद की | ६० पैसे |
| २. | पोप की सेना का भारत पर हमला | ६० ,, |
| ३. | क्या ईसा खुदा का बेटा था ? | ४० ,, |
| ४. | Bible in the Balance | ६० ,, |
| ५. | ईसाई मत खंडन | २० ,, |
| ६. | पादरियों को चुनौती | २० ,, |
| ७. | हिन्दुओं को चेतावनी | ४० ,, |

## अखिल भारतीय
## हिन्दू रक्षा समिति
ने
देश-धर्म-संस्कृति को बचाने के लिए
## संघर्ष का बिगुल बजा दिया
**आप आज ही स्वयं सदस्य बनें व औरों को बनायें**

प्रधान कार्यालय
१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, करौल बाग नई, दिल्ली-११०००५




मार्गशीर्ष संवत् २०३७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
चाहिये कि ईसाइयों को प्रेम से समझा कर अपने धर्म में मिला लें। और भारत के ईसाईयों को भी चाहिये कि वैदिक धर्म का स्वाध्याय करके उसके मन्तव्यों को स्वीकार करें। मांस, शराब छोड़ दें और समस्त भारत में एकता का संचार हो जाय।

इस विषय में हिन्दुओं का भी कर्तव्य है। हमको किसी ईसाई से घृणा नहीं करनी चाहिये और भारतवर्ष में जो अशिक्षित और जंगली जातियां हैं उनको सब को मिला कर सभ्य बनाना चाहिये।

यूरोप के बहुत-से विद्वान् ईसाई मन्तव्यों को छोड़ते चले जाते हैं। वे यह नहीं मानते कि ईसा पर ईमान लाने से ही किसी जाति की उन्नति हो सकती है। वस्तुतः उन्नति तो सदाचार, ज्ञान, विज्ञान तथा प्रेम से होती है। गीता में लिखा है —

'शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।'

वेद कहता है—सब को मित्र की आंख से देखो।

---


# भारी संख्या में मंगायें
# और
# भारत को बचायें
## मंगायें : पढ़ें : बांटें

| | |
|---|---|
| १. चुनौती : इस्लामी साम्राज्यवाद की | ६० पैसे |
| २. पोप की सेना का भारत पर हमला | ६० ,, |
| ३. क्या ईसा खुदा का बेटा था ? | ४० ,, |
| ४. Bible in the Balance | ६० ,, |
| ५. ईसाई मत खंडन | २० ,, |
| ६. पादरियों को चुनौती | २० ,, |
| ७. हिन्दुओं को चेतावनी | ४० ,, |

## अखिल भारतीय
## हिन्दू रक्षा समिति
ने
देश-धर्म-संस्कृति को बचाने के लिए
## संघर्ष का बिगुल बजा दिया
**आप आज ही स्वयं सदस्य बनें व औरों को बनायें**

प्रधान कार्यालय
१५६७, हरध्यान सिंह मार्ग, करौल बाग नई, दिल्ली-११०००५



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४. ग्रहणी में पित्त स्रोत के प्रदाह से पित्त प्रणाली में लसीका प्रवेश से मार्गावरोध

प्रति रोगे इति क्रुद्धा रोगाधिष्ठानगामिनी। रसायनी प्रपद्यासु दोषा देहे विकुर्वते

अष्टांग निदान

यहां रसायनी अवकाशमय अवयव मात्र के लिये आया है अवरोधजनक स्वभाव वही होता है जहाँ संचरणशील द्रव्यों का प्रवाह होता है। अवरोधवश उस स्थान की प्रमाण वृद्धि या कोप होता है। पुनः सर्व शरीर में ही रोगोत्पत्ति हो जाती है।

५. पित्त नलिकाओं के संकोच होने से यकृत् आवरण प्रदाह शोथ-पित्त स्रोतों के भीतर विद्रधि जन्य

६. कई बार जन्म से ही पित्त नलिका अभाव

७. पित्त स्रोत में अर्बुद जन्य

८. पार्श्ववर्त्ती अंगों यथा आमाशय अग्न्याशय उदर कला मूत्र ग्रंथि गर्भाशय का अर्बुद या विद्रधि आंत्र में मल का संचय आदि कारणों से भी कामला रोग की उत्पत्ति होती है। संक्रामक, विषम ज्वर आंत्रिक ज्वर श्वसनिक ज्वर पित्त ज्वर परिवर्तित ज्वर प्रलापक ज्वरादि से उत्पन्न हेतु से प्रदाह जन्य कामला

९. प्राणिज विष या आंत्रिक पूयज विष से उत्पन्न प्रदाहज कामला

१०. धातु विष सोमलादि से

११. नव प्रचलित रासायनिक विषों के उपयोग के कारण

१२. मानसिक आघात या मस्तिष्क पर चोट से यकृत् से सम्बन्धित विधान की विकृति से

१३. स्वच्छ वायु के अभाव से पित्त के स्वाभाविक परिवर्तन में अन्तर आने से यथा शार्ङ्गधरोक्त प्राण वायु का एक कर्म

प्रीणयन् देहमखिलं जीवं च जठरानलम्

१४. दूषित जल से उत्पन्न

१५. पिरल आहावं से पित्त प्रणालियों में प्रदाह होने पर विशेषतः कामला होता है परन्तु इनमें पित्त अवरोध अपूर्ण होता है कुछ पित्त तो आंत्र में चला ही जाता है फिर भी इन सब कारणों से पित्त स्रोत का प्रदाह और पित्ताश्मरी ये दो कारण आजकल अधिक देखने में आते हैं। इस प्रकार हम कामला का मुख्यतः निम्न वर्गीकरण कर सकते हैं—

१. पित्त प्रणालीय प्रदाहज कामला

२. प्लीहा वृद्धि जन्य-अग्न्याशय विकृति-पित्ताश्मरी अवरोध जन्य

३. यकृत् शोथ जन्य कामला

४. रक्त विनाशक कामला

५. संक्रामक तीव्र आशुकारी कामला

६. बाल कामला

७. कुम्भ कामला



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४. ग्रहणी में पित्त स्रोत के प्रदाह से पित्त प्रणाली में लसीका प्रवेश से मार्गावरोध

प्रति रोगे इति क्रुद्धा रोगाधिष्ठानगामिनी। रसायनी प्रपद्यासु दोषा देहे विकुर्वते

अष्टांग निदान

यहां रसायनी अवकाशमय अवयव मात्र के लिये आया है अवरोधजनक स्वभाव वही होता है जहाँ संचरणशील द्रव्यों का प्रवाह होता है। अवरोधवश उस स्थान की प्रमाण वृद्धि या कोप होता है। पुनः सर्व शरीर में ही रोगोत्पत्ति हो जाती है।

५. पित्त नलिकाओं के संकोच होने से यकृत् आवरण प्रदाह शोथ-पित्त स्रोतों के भीतर विद्रधि जन्य

६. कई बार जन्म से ही पित्त नलिका अभाव

७. पित्त स्रोत में अर्बुद जन्य

८. पार्श्ववर्त्ती अंगों यथा आमाशय अग्न्याशय उदर कला मूत्र ग्रंथि गर्भाशय का अर्बुद या विद्रधि आंत्र में मल का संचय आदि कारणों से भी कामला रोग की उत्पत्ति होती है। संक्रामक, विषम ज्वर आंत्रिक ज्वर श्वसनिक ज्वर पित्त ज्वर परिवर्तित ज्वर प्रलापक ज्वरादि से उत्पन्न हेतु से प्रदाह जन्य कामला

९. प्राणिज विष या आंत्रिक पूयज विष से उत्पन्न प्रदाहज कामला

१०. धातु विष सोमलादि से

११. नव प्रचलित रासायनिक विषों के उपयोग के कारण

१२. मानसिक आघात या मस्तिष्क पर चोट से यकृत् से सम्बन्धित विधान की विकृति से

१३. स्वच्छ वायु के अभाव से पित्त के स्वाभाविक परिवर्तन में अन्तर आने से यथा शार्ङ्गधरोक्त प्राण वायु का एक कर्म

प्रीणयन् देहमखिलं जीवं च जठरानलम्

१४. दूषित जल से उत्पन्न

१५. पिरल आह्वां से पित्त प्रणालियों में प्रदाह होने पर विशेषतः कामला होता है परन्तु इनमें पित्त अवरोध अपूर्ण होता है कुछ पित्त तो आंत्र में चला ही जाता है फिर भी इन सब कारणों से पित्त स्रोत का प्रदाह और पित्ताश्मरी ये दो कारण आजकल अधिक देखने में आते हैं। इस प्रकार हम कामला का मुख्यतः निम्न वर्गीकरण कर सकते हैं—

१. पित्त प्रणालीय प्रदाहज कामला

२. प्लीहा वृद्धि जन्य-अग्न्याशय विकृति-पित्ताश्मरी अवरोध जन्य

३. यकृत् शोध जन्य कामला

४. रक्त विनाशक कामला

५. संक्रामक तीव्र आशुकारी कामला

६. बाल कामला

७. कुम्भ कामला



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यकृत् कर्कस्फोट एवं यकृत् दाल्युदर में भेद प्रायः आक्रमण की तीव्रता और मन्दता से भी होता है। कर्कटार्बुद जन्य कामला शीघ्र तथा यकृाद्दल्युदर में देर से होता है। कर्कटार्बुद में जलोदर निश्चित रूप से नहीं होता। यकृाद्दल्युदर जन्य कामला में जलोदर प्रायः हो जाता है। कर्कटार्बुद जन्य कामला में पीड़ा तीव्रतर यकृद्दाल्युदर कामला में पीड़ा कम।

**चिकित्सा क्रम**

रेचनम् कामलार्तस्य, विरेचनम् पित्त हराणाम् श्रेष्ठम् ततः प्रशमनी क्रिया—नस्यं अंजनं चैव कामलार्ताय योजयेत्। हमारे सिद्ध चिकित्सा केन्द्र में नये एवं साधारण रोग में प्रातः सायम् आलूबुखारा इमली का शीतपानक पिलाया जाता है।

**औषध**

| | |
|---|---|
| आमलकी रसायन | २ माशे |
| आरोग्य वर्धिनी | ३ रत्ती १ मात्रा, ऐसी ४ मात्राएं प्रतिदिन |
| पुनर्नवादि मंडूर | ४ रत्ती |
| मधुर क्षार | ४ रत्ती |
| शीतल पर्पटी | ४ रत्ती |

सूखा आमला पानी में भिगोकर आँखों को छींटा देकर धोया जाता है। पुनर्नवामूल स्वरस अथवा द्रोणपुष्पी स्वरस या बन्दाल डोडा स्वरस २ बूंद नाक में नस्य दिया जाता है। पुनर्नवा मूल का स्वच्छ स्वरस आंख में अंजन कराया जाता है। भोजन केवल १ भाग मूंग की दाल २ भाग चावल की खिचड़ी ही दिन में चार-पांच बार दी जाती है। मुन्क्का १/२ छटांक एक बार खिलाया जाता है। गन्ना चूसने की अनुमति दी जाती है। मूली रस, ताजा आलूबुखारा, मुसम्मी, फालसा भी खाने को कहा जाता है। छाछ बिना घृत की कई बार पिलाई जाती है। कंडू होने पर मधुर क्षार का हलका उद्धूलन कर दिया जाता है। अतिसार होने पर ताजा अनार रस जीरा भुना मिलाकर दिया जाता है। मलावरोध में कुटकी भुनी का चूर्ण या अमलतास का गूदा यथा योजना दिया जाता है। किसी २ रोगी को गोमूत्र प्रातः खाली पेट २ तोला पिलाया जाता है। रोगी को पूर्ण विश्राम एवं स्वच्छ वायु का सेवन क्वथित शीत जल का उपयोग करने को कहा जाता है। ग्रीष्म ऋतु हो तो जरिष्क तुख्म (दारू हल्दी के पक्के काले फल जो सूखे मिल जाते हैं। खीरा बीज गिरी बीज खुरफा कासनी इनकी ठंढाई का सेवन दिन में एक बार करवाते हैं। रोगाक्रमण कम होने पर रीतिकारिष्ट कालमेघासव भोजनोपरांत दिया जाता है। मधुररसप्राय द्रव्यों का उपयोग अच्छा रहता है। वसा घृतादि का वर्जन कराया जाता है। चिकनाई गरम मसाले मिरच पित्तल व प्रदाहज पदार्थों का वर्जन आवश्यक है।

कामला रोग की विशेष कठिन अवस्थाओं में विशेष योग या भस्मादि का उपयोग रोगी की अवस्था दोष दूष्यादि का पूर्ण ध्यान रख कर किया जाता है। विधि निम्न प्रकार है—भस्में ताम्र-भस्म का उपयोग यकृत् विशेषतः पित्ताशय पर किया जाता है। पित्ताशय संकुचित हो गया हो या पित्त अधिक गाढ़ा हो गया हो या पित्ताशय के भीतरी भाग में विकृति आई हो तब असह्य पीड़ा उत्पन्न होती है तब ताम्र भस्म का उपयोग पित्त स्राव कराने हेतु और कार्य में नियमितता लाने हेतु किया जाता है। यदि पित्ताशय में पित्त का संचय या अन्य अश्मरी हो गई हो तो भी कामला उत्पन्न होता है। ऐसी अवस्था में ताम्र का उपयोग कराया जाता है।


Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यकृत् कर्कस्फोट एवं यकृत् दाल्युदर में भेद प्रायः आक्रमण की तीव्रता और मन्दता से भी होता है। कर्कटार्बुद जन्य कामला शीघ्र तथा यकृाद्दल्युदर में देर से होता है। कर्कटार्बुद में जलोदर निश्चित रूप से नहीं होता। यकृाद्दल्युदर जन्य कामला में जलोदर प्रायः हो जाता है। कर्कटार्बुद जन्य कामला में पीड़ा तीव्रतर यकृद्दाल्युदर कामला में पीड़ा कम।

**चिकित्सा क्रम**

रेचनम् कामलार्तस्य, विरेचनम् पित्त हराणाम् श्रेष्ठम् ततः प्रशमनी क्रिया— नस्यं अंजनं चैव कामलार्ताय योजयेत्। हमारे सिद्ध चिकित्सा केन्द्र में नये एवं साधारण रोग में प्रातः सायम् आलूबुखारा इमली का शीतपानक पिलाया जाता है।

**औषध**

| | |
|---|---|
| आमलकी रसायन | २ माशे |
| आरोग्य वर्धिनी | ३ रत्ती १ मात्रा, ऐसी ४ मात्राएं प्रतिदिन |
| पुनर्नवादि मंडूर | ४ रत्ती |
| मधुर क्षार | ४ रत्ती |
| शीतल पर्पटी | ४ रत्ती |

सूखा आमला पानी में भिगोकर आंखों को छींटा देकर धोया जाता है। पुनर्नवामूल स्वरस अथवा द्रोणपुष्पी स्वरस या बन्दाल डोडा स्वरस २ बूंद नाक में नस्य दिया जाता है। पुनर्नवा मूल का स्वच्छ स्वरस आंख में अंजन कराया जाता है। भोजन केवल १ भाग मूंग की दाल २ भाग चावल की खिचड़ी ही दिन में चार-पांच बार दी जाती है। मुन्क्का १/२ छटांक एक बार खिलाया जाता है। गन्ना चूसने की अनुमति दी जाती है। मूली रस, ताजा आलूबुखारा, मुसम्मी, फालसा भी खाने को कहा जाता है। छाछ बिना घृत की कई बार पिलाई जाती है। कंडू होने पर मधुर क्षार का हलका उद्‌धूलन कर दिया जाता है। अतिसार होने पर ताजा अनार रस जीरा भुना मिलाकर दिया जाता है। मलावरोध में कुटकी भुनी का चूर्ण या अमलतास का गूदा यथा योजना दिया जाता है। किसी २ रोगी को गोमूत्र प्रातः खाली पेट २ तोला पिलाया जाता है। रोगी को पूर्ण विश्राम एवं स्वच्छ वायु का सेवन क्वथित शीत जल का उपयोग करने को कहा जाता है। ग्रीष्म ऋतु हो तो जरिष्क तुख्म (दारू हल्दी के पक्के काले फल जो सूखे मिल जाते हैं। खीरा बीज गिरी बीज खुरफा कासनी इनकी ठंढाई का सेवन दिन में एक बार करवाते हैं। रोगाक्रमण कम होने पर रीतिकारिष्ट कालमेघासव भोजनोपरांत दिया जाता है। मधुररसप्राय द्रव्यों का उपयोग अच्छा रहता है। वसा घृतादि का वर्जन कराया जाता है। चिकनाई गरम मसाले मिरच पित्तल व प्रदाहज पदार्थों का वर्जन आवश्यक है।

कामला रोग की विशेष कठिन अवस्थाओं में विशेष योग या भस्मादि का उपयोग रोगी की अवस्था दोष दूष्यादि का पूर्ण ध्यान रख कर किया जाता है। विधि निम्न प्रकार है—भस्में ताम्र-भस्म का उपयोग यकृत् विशेषतः पित्ताशय पर किया जाता है। पित्ताशय संकुचित हो गया हो या पित्त अधिक गाढ़ा हो गया हो या पित्ताशय के भीतरी भाग में विकृति आई हो तब असह्य पीड़ा उत्पन्न होती है तब ताम्र भस्म का उपयोग पित्त स्राव कराने हेतु और कार्य में नियमितता लाने हेतु किया जाता है। यदि पित्ताशय में पित्त का संचय या अन्य अश्मरी हो गई हो तो भी कामला उत्पन्न होता है। ऐसी अवस्था में ताम्र का उपयोग कराया जाता है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंडूर भस्म के साथ कामला में लघु मालती बसंत का प्रयोग सत्व गिलोय साथ में विशेष लाभकारी मिला है। प्रवाल पिष्टि का मंडूर के साथ मिश्रण भी बाल कामला में हितकारी सिद्ध होता है।

कामला रोग की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में उपयोग में आने वाला शास्त्रोक्त फलदायी प्रयोग चिकित्सकों के सहायतार्थ तथा कुछ हमारे अनुभव की हुई औषधियों की सूची—

सर्वेश्वर पर्पटी कर्कस्फोट जन्य कामला र० र० समु०

भदेमसिंह सूतो रस: तन्द्रामोह आदि से युक्त उपद्रव
यो० र०

हंस मंडूर बृहत् रसराज चन्द्रसूर्यकांतरस र० सां० स०

सिन्दूर भूषण रस र० र० समु० आरोग्यवर्धिनी र० र० समु०

धात्रीलोह र० सा० सं० पुनर्नवामंडूर भैप०

त्रिकत्रयादिलोह र० सा० सं० ताप्यादिलोह र० त० सार कामला प्रणुदरस र० र० स० योगराजरस च० दत्त विद्याधर रस र० र० स० यकृदरिलोह र० त० सार प्राण वल्लभ रस र० सा० सं०

बाल यकृदरिलोह भैं० सा० स०

कामला हर रस (यादवजी)

काल मेघ नवायस र० तं० सार द्वि०

कामला हर रस (यादवजी त्रिकमजी) विशप उपयोगी है। कालमेघनवायस र० त० सार द्वि०

अपामार्ग शमी मूलं पिष्ट्वा तक्रेण पाययेत्
कामला श्वयथु पांडु कर्षमात्रं नियच्छति र० र० समु०

नस्यंम्

(१) देवदाली फल स्वरस (२) कड़वी तुम्बी स्वरस (३) घी कुवार की जड़ का रस

इनके नस्य से कामला शीघ्र दूर होता है।

अंजन द्रोणपुष्पी-गूमा रस का सलाई से अंजन

नासा द्वारा मकोय स्वरस पीने से कामला दूर होने के प्रमाण हैं।

पथ्य पहले चिकित्सा के आरम्भ में हम कह आये है।

अरिष्ट

पतले काले लाल दस्त—बराबर थोड़ा-थोडा लाल मूत्र आंत्र शोथ भयंकर वेदना दाह अरूचि तृष्णा तन्द्रा नेत्र मुख लाल वर्ण अरिष्ट कारक लक्षण।

---

**विदेशी पादरियों को भारत से निकालो !!**



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## राष्ट्र रक्षा के लिए

# प्रचार साहित्य मंगाएं

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | हिन्दुओं को चेतावनी | : | मूल्य ४० पैसे |
| २. | चुनौती : इस्लामी साम्राज्यवाद की | : | मूल्य ६० पैसे |
| ३. | और ... ... पादरी भाग गया | : | मूल्य ४० पैसे |
| ४. | क्या ईसा खुदा का बेटा था ? | : | मूल्य ४० पैसे |
| ५. | पोप की सेना का भारत पर हमला | : | मूल्य ४० पैसे |
| ६. | पादरियों को चुनौती | : | मूल्य २० पैसे |
| ७. | ईसाई - मत - खंडन | : | मूल्य २० पैसे |
| 8. | A Challenge to the Christian Faith | : | मूल्य २० पैसे |
| 9. | Bible in the Balance | : | मूल्य ६० पैसे |

कम से कम २००) नैट का साहित्य
मंगाने पर ५० प्रतिशत कमीशन

**दयानन्द संस्थान वेद मन्दिर दिल्ली-३६**

---

अपने नगर में

# हिन्दू-रक्षा-समिति

स्थापित करें

---

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

| जन–ज्ञान नई दिल्ली-५ | नवम्बर १९८० | D-C-201 R.N. 107119/65 |
|---|---|---|

हिन्दू रक्षा समिति द्वारा आयोजित हिन्दू रक्षा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए आर्य नेता सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री राम गोपाल जी ने घोषणा की कि संपूर्ण आर्यसमाज राष्ट्र की रक्षा के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देगा। विदेशी पादरियों के षडयंत्रों और इस्लामीदुरभिसन्धि के विरुद्ध अब सभी को जागरूक होकर कार्य करना चाहिए-बैठे हैं श्री प्रो० रामसिंह जी व श्री वेदभिक्षु:

मुद्रक-प्रकाशक-संपादक ... , दिल्ली में छपा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi